श्री मस्तनाथ चरित्र

(श्री मस्तनाथ अद्भुत लीला प्रकाश)

श्री शंकरनाथ योगेश्वर कृत

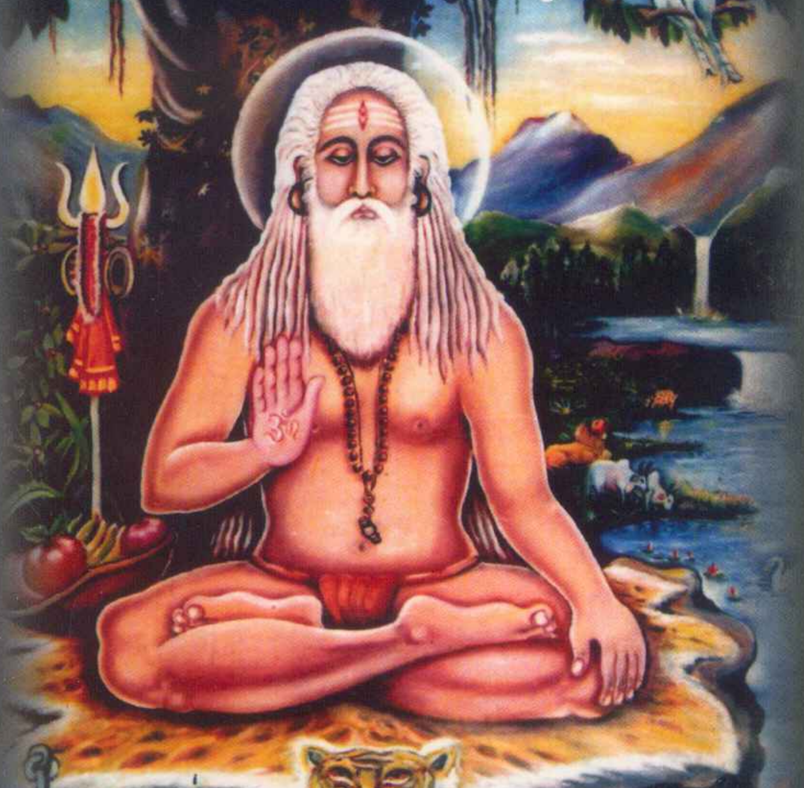

प्रकाशक
अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा
गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
फोन :- 01334-226583

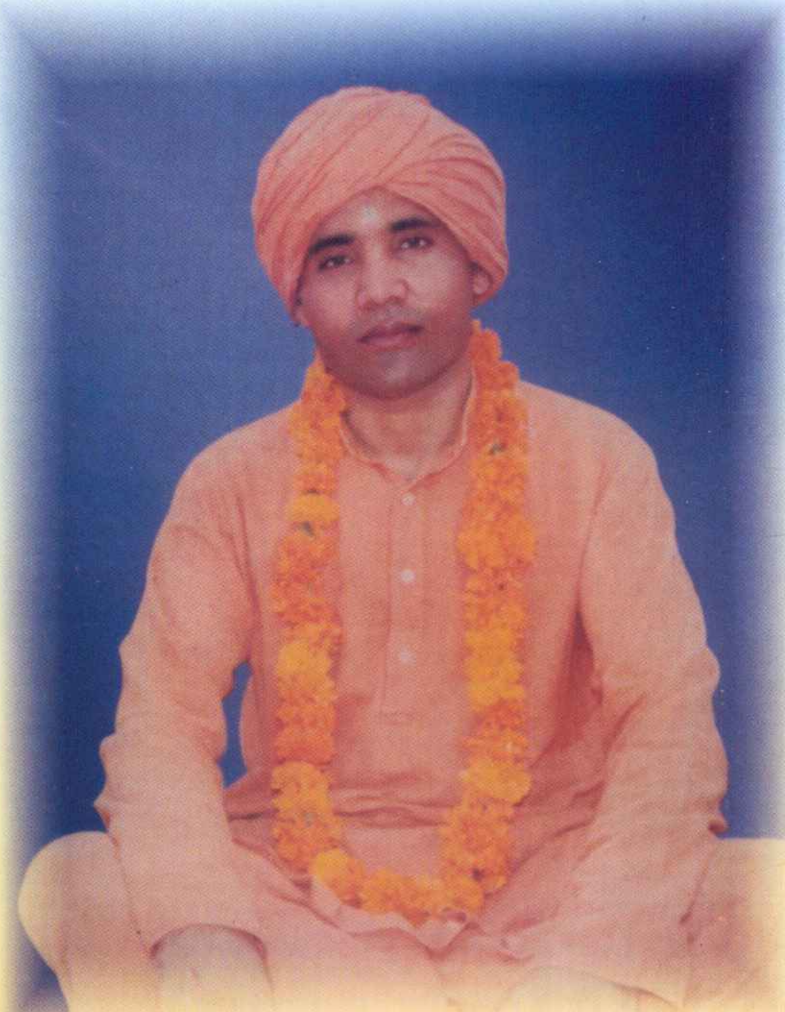

श्री मठाधीश्वर महन्त पीर योगी चाँदनाथ जी महाराज
उपसभापति (योगी महासभा)
पूर्व विधायक (राजस्थान)

श्री मस्तनाथ चरित

(श्री मस्तनाथ अद्भुत लीला प्रकाश)

श्री शंकरनाथ योगेश्वर कृत

इस पुस्तक में अनेक प्रकार के अद्भुत मनोहर चरित्र,
विचित्र रूप व निर्वाण कवित्त शिक्षा उपदेश
गजल बैत दोहादि अति उत्तम
रीति से सचित्र वर्णित हैं।

इसको
श्रीमान् १०८ श्री महाराज पीर चेतनाथ जी
बोहर गद्दी निवासी की आज्ञानुसार

प्रकाशक -
अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पन्थ योगी महासभा
गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
फोन: 01334-226583

14 जनवरी 2013 मकर संक्रान्ति प्रयागराज महाकुम्भ

द्वितीय संस्करण-2000 प्रति] [मूल्य : 100

❋ निवेदक ❋

श्री श्री अनन्त श्री महायोगाचार्य भगवद् गोरक्षनाथ जी के अवतार श्री श्री अनन्त श्री महासिद्ध योगीराज बाबा मस्तनाथ जी के जीवन चरित्र को चक्रवर्ति (रमते) साधुओं की आवश्यकतार्थ श्री अस्थल बोहर मठाधीश श्री महन्त चाँदनाथ जी महाराज के निर्देशानुसार इस ग्रन्थ का आकार छोटा किया गया है।

पूर्व प्रधान मन्त्री-

श्री योगी आनन्दनाथ जी

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष

बारह पन्थ योगी महासभा के

माध्यम से प्रकाशित

❀ भूमिका ❀

एक समय श्री महादेव जी कैलाश पर्वत पर विराज रहे थे सो अपने चित्त में विचार करते भये कि राक्षस गण अधिक हो जाने से संसार योग हीन हुआ जाता है सो किसी प्रकार से योग को प्रगट करें, सो श्री शिवाजी श्री गोरक्षनाथ जी का रूप धारण करके गोपीचन्द भरथरी आदि अनेक राजाओं को योग उपदेश करके योग को प्रकाश करते भये। फिर कलिकाल में गोरक्षनाथ जी श्री मस्तनाथ जी का रूप धारण करके अनेक प्रकार की अद्भुत सिद्धियों की लीला दिखलावते भये सो सम्पूर्ण लीला वर्णन करने में मेरी बुद्धि को सामर्थ नहीं है इसलिये सामान्य लीला प्रकाश करता हूँ। मेरी सब विद्वान पुरुषों से यह विनय है कि इस अद्भुत लीला को आप पढ़िये और औरों को सुनाइये और इसमें जो मेरी भूल चूक हो गई होवे उसको विद्वान पुरुष शुद्ध करके मेरी तकसीर माफ कीजियेगा और मेरी इस प्रार्थना को

जरूर ही सुनियेगा और इस अद्‌भुत लीला ग्रन्थ को पढ़ियेगा औरों को सुनाइयेगा और आनन्द लाभ उठाइयेगा और प्रसन्नता पूर्वक सुख पाइयेगा हर दम हरके यश गाइयेगा और पापों को नसाइयेगा शङ्करनाथ जी का परिश्रम सुफल फरमाइयेगा।

ये रचना शङ्करनाथ योगेश्वर श्री महन्त पीर चेतनाथ जी महाराज के शिष्य ने प्रकाशित करी है

आपका-

शंकरनाथ जी योगी

मठ अस्थल बोहर

जिला रोहतक

।। शुभम्भूयात।।

।। सूची पत्र ।।

अंक अध्याय	पृष्ठ अंक
१- श्री मस्तनाथ जी का प्रगट होना	१
२- श्री मस्तनाथ जी की बाल लीला	८
३- श्री मस्तनाथ जी की बन लीला	१४
४- श्री मस्तनाथ जी की रात्रि लीला जो एक ब्राह्मण ने देखी	२१
५- श्री मस्तनाथ जी का गुरु उपदेश धारण करना	२६
६- श्री मस्तनाथ जी का पहेवा में बारह पन्थ को परचा देना	३२
७- श्री मस्तनाथ जी को बोहर में आना और लोगों को परचा देना	४४
८- श्री मस्तनाथ जी का एक अपंगी को पैर देना	५२
९- श्री मस्तनाथ जी को अपने शिष्यों से प्राचीन वार्ता कहना	५९
१०- श्री मस्तनाथ जी का सीलका को परचा देना	६४

अंक अध्याय	पृष्ठ अंक
११- श्री मस्तनाथ जी का जोगराज को गोपीचन्द भरथरी के दर्शन कराना	७५
१२- श्री मस्तनाथ जी का उच्याणा ग्राम में दलिद्र गेरना	८१
१३- श्री मस्तनाथ जी का घड़ावठी ग्राम में सूखा बड़ हरा करना और जमींदार को सन्तान देना	९२
१४- श्री मस्तनाथ जी का एक स्त्री को अवधूतनी करना जिसने रूप का अभिमान किया था	९९
१५- श्री मस्तनाथ जी का एक और दीन पर दया करके मरी गऊ को सामरथ करना	१११
१६- श्री मस्तनाथ जी का मृग रूप धारण करके विचरना	११४
१७- श्री मस्तनाथ जी का दिल्ली में आलमशाह बादशाह को परचा देना	१२२
१८- श्री मस्तनाथ जी का पिचोपा ग्राम को परचा देना	१३३

अंक अध्याय	पृष्ठ अंक

१९- श्री मस्तनाथ जी का बीकानेर में
सूरतसिंह राजा को परचा देना १४०

२०- श्री मस्तनाथ जी का जालोर में राजा
मान को परचा देना और जोधपुर के
राजा मानसिंह को मिलना १५२

२१- श्री मस्तनाथ जी के धड़ीनाथ चेले का
वर्णन और खीड़वाली ग्राम में सहतीर को
धूने में लगाना १७०

२२ श्री मस्तनाथ जी का खरक ग्राम में जाना
और रणपतधाता को जोगी करना १७६

२३- श्री मस्तनाथ जी का अन्तर्द्धान होना
यानि समाधी लेना १८१

२४- श्री मस्तनाथ जी के बाद उनके शिष्य
परा शिष्यों का गद्दी पर बैठना
तिसका वर्णन १८८

आई पन्थ की प्रणाली १९२

अंक अध्याय	पृष्ठ अंक
बारह पन्थ के नाम	१९२
निर्वाण अष्टक कवित्त	१९३
कवित्त सवैया	१९६
गुरुदेव की वन्दना	१९७
दोहा	२१०

नोट - पोस्ट वी०पी० द्वारा भी पुस्तकें, फोटो, कैसेट मंगायी जा सकती हैं।

पुस्तक प्राप्ति स्थान -

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर

अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) २४९४०१

फोन: 01334-226583

।। श्री गणेशाय नमः।।

अथ श्री मस्तनाथ चरित्र लिख्यते

।। दोहा ।।

गणपति आदि मनाय के, सुमिरि शारदा माय।
नाथ चरित वर्णन करूं, गुरु पद शीस नवाय।।

।। चौपाई ।।

नाथ चरित्र परम सुखदाई, गुरु प्रताप बर्णों चितलाई।
जाके सुने कटत भव फांसी, उपजत भक्ति बहुत सुखरासी।
देश अनूप एक हरियाना, दूध दधी घृत का जहं खाना।
बसत कुशल जहं हरिजन गेहू, राखत अधिक साधु पद नेहू।
दया धर्म अरु भक्त रसीले, लोग अहिंसक बहुत सुशीले।
केसरिहटे एक नगर सुहावन, रोहतक जिला माहि अतिपावन।
सबला नाम जात रेवारी, बसत रहा तहं अति सुखकारी।
धन सम्पत्ति मुक्ता गृह जाके, थी सन्तान नाहि कोई वाके।

।। दोहा ।।

भक्तवान श्रद्धा सहित, कोमल चित्त उदार।
जाके गृह में अति घना, रहा बनिज व्योपार।।

।। चौपाई ।।

एक समय बनिज व्योपारा, लाद चला कोई देश दुवारा।
जमुना निकट गया सुख साथा, तहां मिलै श्री गोरख नाथा।

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी का सबला रेवारी को
पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद

शीस जटा अरु भस्म रमाये, कानन कुंडल अति झलकाये।
बड़-बड़ लोचन सुन्दर काया, तेजवान योगी सिधराया।
सबला लखि स्वरूप उजियारा, जाय किया आदेश उदारा।
फल अरु फूल भेंट धरि आगे, दर्शन करत सकल दुख भागे।
चरण कमल पर शीस नवायो, द्वै कर जोरे विनय सुनायो।
भये प्रसन्न नाथ भगवाना, बोले मांग कछू बरदाना।

।। दोहा ।।

कहत भयो कर जोरि के, सुनो नाथ अभिराम।
दीजे मोकू पुत्र यक, तेजवान सुखधाम।।

।। चौपाई ।।

मेरे नाहिं कोई सन्ताना, तासों मांगत यह बरदाना।
बोले नाथ अमृत की बानी, एक पुत्र पावेगा ज्ञानी।
गुण यश कीरती अधिक बढ़ैगी, चार खुंट में शाख चलैगी।
यह बरदान दियो श्री नाथा, सबला तुरत नवायी माथा।
तुम गुरु मेरो दुख हर लीन्हा, जन्म सुफल सारा कर दीन्हा।
अन्तर्द्धान भये गुरुराया, सबला लोटि सदन को आया।

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी का मस्तनाथ रूप में प्रगट होना

स्त्री सों सब हाल बखाना, उपजा मोद बहुत विधि नाना।
एक वर्ष लों करी परीक्षा, बालक हेत हिये धरि इच्छा।

।। दोहा ।।

निश दिन नारी हर्ष के, करै बहुत सी आस।
कब सुत मेरे होयगा, गर्भ माहिं परकास।।

।। चौपाई ।।

नाथ विचार किया मन माहीं, आवागमन हमारा नाहीं।
मांगि लियो हमसों बरदाना, तुम अस पुत्र पाऊं मनमाना।
दूजी कला करूं बिस्तारा, बालक रूप धरूं यक बारा।
कछुक काल में तहां बिताऊं, रेवारी सुत जाय कहाऊं।
भक्तवत्सल नाथ गुरु देवा, हैं सुखदायक संकट छेवा।
मनवांछित फल देवनहारे, तीन लोक वश में कर डारे।
तेजवान मूरति दरशनी, सतगुरु नाथ बचन के धनी।
योग कला करि बालक रूपा, जङ्गल मांझे धरा अनूपा।

।। दोहा ।।

तादिन आने ग्राम में, कछुक दूर उदार।
रेवारी के कुटुम्ब में, रहा काज ब्योहार।।

।। चौपाई ।।

पुरुष नारि हित बचन उचारे, आन नगर तब दोऊ सिधारे।
कछुक दूरि जब आगे गये, महा कठिन बन देखत भये।
पड़ा डगर बिच बालक देखा, वर्ष एक आयु का लेखा।
बड़-बड़ लोचन कमल समाना, ऊंचा भाल सजल मुख आना।

काया सुन्दर अति प्रिय पावन, गाय मनोहर अधिक सुहावन।
बिम्ब ओठ अरु कीर नासिका, कमल भांति करतल प्रकाशिका।
गये निकट जब दोऊ प्रानी, हर्ष सहित बोले मृदुबानी।
ताहि बिलोकी नाथ की माया, ह्वै प्रसन्न मन मोदा बढ़ाया।

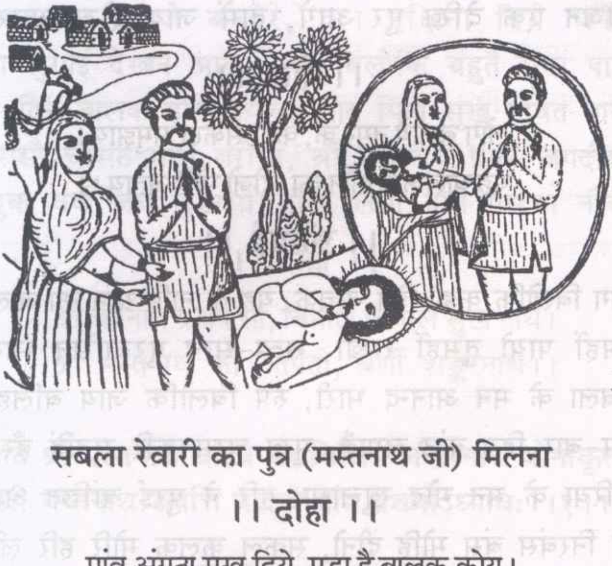

सबला रेवारी का पुत्र (मस्तनाथ जी) मिलना

।। दोहा ।।

पांव अंगूठा मुख दिये, पड़ा है बालक कोय।
नारी गोद उठायके, हर्षित मन में होय।।

।। चौपाई ।।

सबला मन में सोच बढ़ाया, महाबिपिन बालक कस आया।
कै कोई तृषवन्त रेतानी, बालक छांड़ि पियन गई पानी।
कै कोई क्षुधावन्त है नारी, बनफल खाने गई बिचारी।

त्रिया सहित बन खोजन गया, पुरुष कोई नहिं देखत भया।
करत पुकार पुरुष भल सोई, लीजो बालक जाकर होई।
बार-बार तब करत पुकारा, बोलत ना कोऊ एकौबारा।
जब नहिं कोऊ उत्तर दीना, बालक लै मारग उन लीना।
जोजन एक देखि पुर आगे, तामें जाय दोऊ अनुरागे।

।। दोहा ।।

लोग बुलाये नगर के, कही सकल समुझाय।
यह बालक है कौन का, दीजो मोहिं बताय।।

।। चौपाई ।।

लोग बिलोकि कह्यो हित बाचक, यह तो नाहिं ग्राम का बालक।
तुमहीं पायो तुमहीं राखो, सत्य-सत्य पुरबासिन भाखो।
सबला के मन आनन्द भारी, रुप बिलोकि जाय बलिहारी।
बार-बार हिय कंठ लगावै, मुख चुम्मनकरि सुतहिं हँसावै।
तिरिया के मन मोद खुलासा, हरि ने पुरई बांछित आसा।
थी निरबंस बंस मोहि दीनो, सकल कलक मोरि हरि लीनो।
धन्य भाग है आज हमारा, बार-बार बिनवै करतारा।
बंस उजागर तुम कर दीना, मोर मनोरथ पूरण कीना।

।। दोहा ।।

हृदय लगावै पुलकि तन, मुख चूमैं हरबार।
रूप बिलोकै निरखि छवि, करै बहुत सा प्यार।।

।। चौपाई ।।

बहुरि कुशल निज ग्रामै आये, पुरवासिन को पुत्र दिखाये।
ईश्वर दीना वन में बालक, दया करी हम पर प्रतिपालक।
गृह में जाय करे सब काजा, परजा आनि बजाये बाजा।
आनन्द उर उपजे बरुतेरे, दान दक्षिना दिये घनेरे।
लोग लुगाई देखन आवैं, मुख बिलोकि बहुतै सुख पावैं।
दिन-दिन बालक होत सयाना, मात पिता सुख पावत नाना।
सतरासौ चौंसठ मांझ बरीसा, श्री मस्तनाथ प्रगटे जगदीसा।
कछुक वर्ष जब सुखसों बीते, लागे होन पारचा नीके।

।। दोहा ।।

श्री चेतनाथ प्रताप सों, बिमलि बिमलि सुख नाथ।
श्री मस्तनाथ की उतपती, बर्णी शङ्करनाथ।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत श्री मस्तनाथ उत्पत्ति वर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः।।१।।

।। दोहा ।।

निराकार निर्गुण सदा, निरालम्ब निसयन्द।
अजर अमर परमात्मा, नाथ सच्चिदानन्द।।

।। चौपाई ।।

बाल अवस्था की कुछ लीला, बर्णत हों सो सुनी सुशीला।
एक दिवस पितु मात बिछारा, मम ग्रह जौहै बाल कुमारा।
काम काज यासे ना होवे, सारा दिवस खेल में खोवे।
ना कोई पंडित है पुरमाहीं, विद्या सीखे जो उन पाहीं।
परमारथ की राह बतावै, बोलन चालन रीति सिखावै।
ताते भेजों बन सुख पावन, पालिन के संग धेनु चरावन।
खेल कूद बालक को प्यारा, शुभ अरु अशुभ न जाननहारा।
सबसे उत्तम यही सुहाती, ग्रह का काज करै कोऊ भांती।

।। दोहा ।।

पिता बुलायो पुत्र को, बात कही समझाय।
धेनु चरावन जाउ तुम, पाली संग लगाय।।

।। चौपाई ।।

होत प्रात हर्षित अति भये, गऊ चरावन बन को गये।
सांझ भई आये ग्रह माहीं, राग द्वेष कुछ मन में नाहीं।
धेनु चरावत कुछ दिन बीते, पालिन के संग हर्ष सहीते।
एक दिवस ग्राम के बालक, जुरि-जुरि आये कहीं अचानक।

तात भये तुम तो अब पाली, कहा कहैं सुनिये बन माली।
रहे परस्पर हम तुम मीता, खेले निर्भय प्रेम सहीता।
अब तो भावै मोहिं कछू ना, तुम बिन खेल रहत हे सूना।
तात रहे तुम अति गुणवंता, ताको कहौ बिचार तुरंता।

।। दोहा ।।

बालक देखि उदास तब, राख्यो सबका मान।
खेले खेल सुजान एक, सौ मैं करूं बखान।।

।। चौपाई ।।

प्रात होत गौवें बन मेलैं, आप जाय बालक संग खेलैं।
खेलत पिता देखि बहुबारा, अपने मन में कीन्ह बिचारा।
याको खेल बहुतसा प्यारा, धेनु चरावत नाहि कुमारा।
सांझ भई पालिन से पूछा, कहो हाल मस्ता का सूंचा।
पालिन कह्यो सकल निज गाथा, नित यह रहत हमारे साथा।
संग छांड़ि कहुं अन्त न जावै, नित हम देखत धेनु चरावै।
पिता कह्यो हम नित ही देखत, बालक संग ग्राम में खेलत।
तुम सब झूंठी बात सुनाई, मेंरे मन में नेक न आई।

।। दोहा ।।

सबला पूछ पुत्र सों, पुत्र कही तेरी ठांउ।
पालिन के नित साथ में, गऊ चरावन जांऊ।।

दिव्य बालक मस्तनाथ जी का एक समय में दो रूप दिखाना

।। चौपाई ।।

एक दिवस खेलत कहुं पायो, सबला मन में सोच बढ़ायो।
धेनु छांड़ि खेलन को आया, लेऊँ परीक्षा औसर पाया।
पिता गयो बन माहिं तुरन्ता, देख्यो तहाँ पुत्र गुणवंता।
धेनु चरैं अरु बालक बैठा, हाथ लिये एक मोट पनैठा।
बेगि बहुरि जब ग्राम में आयो, बालक साथ खेल तहं पायो।
आश्चर्य उपज्यो उर माहीं, होत भयो भ्रम बहुतेहि ठाहीं।
बहुरि गयो बन देखन काजे, पायो तहां फेर सुत राजे।
पुनि-पुनि आवे पुनि-पुनि जाई, दोऊ ओर सुत देत दिखाई।

।। दोहा ।।

जानि पड़े नहिं भेद कुछ, प्रगटयो भ्रम का कूप।
द्वै बालक यक रूप के, कैसे भये अनूप।।

।। चौपाई ।।

सबला पुरके लोग बुलाये, खेलत सुत को तहां दिखाये।
बहुरि गये सब बन के माहीं, देखा अचरज तेहिं ठाहीं।

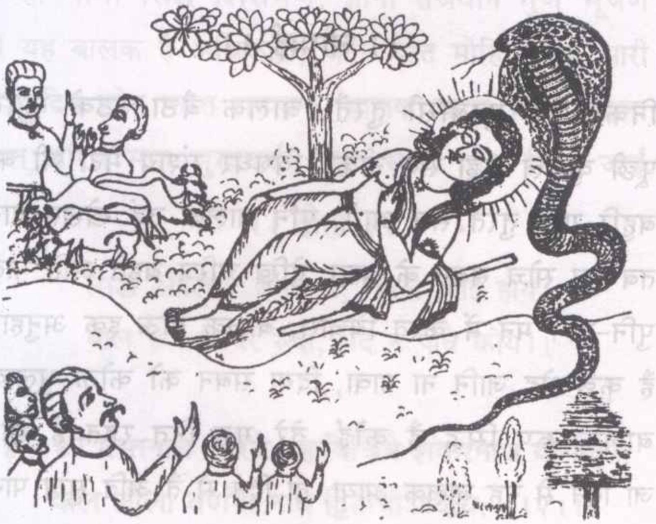

सोते हुए बालक मस्तनाथ जी पर विषधर द्वारा छाया करना

बालक सौवै तरुवर नीके, छवि विलोकि तब गये नगीचे।
फण पसारि शीस पर छाया, कीन्हे बैठा विषधर राया।
निरखि २ देखत निज लोचन, डरपि सकल लागे उर सोचन।
नाथ तुम्हारी अद्भुत माया, जाको पार नाहिं कोई पाया।
जा पर कृपा तुम्हारी होई, वांछित फल पावत सोई।
कृपा बिन दुख है चौरासी, भ्रम जाल की कटै नहिं फाँसी।

।। दोहा ।।

सर्प गमन करता भया, पुरबासिन को देखि।
नगर लोग अचरच किया, जान विधाता लेखि।।

।। चौपाई ।।

निकट गये पुरबासी तुरतै, बालक बैठा उठके फुरतै।
पूंछी कुशल कहा सब नीका, विषधर संशय मेटा जी का।
बहुरि ग्राम तुरतै सब आये, पुनि बालक तहं खेलत पाये।
तब मन सोच सबन के बाढ़ा, देखि चरित्र बहुत अति गाढ़ा।
पुनि-पुनि मन में करत बिचारा, बालक दोऊ इक अनुहारा।
है कुछ भेद जानि ना पावा, दिया सबन को कोऊ भुलावा।
बालक रूप सिद्ध है कोई, तेरे गृह नित रहत है सोई।
जा दिन से यह बालक आया, ता दिन से तै अति सुख पाया।

।। दोहा ।।

धन अरु दौलत बहुत सी, सुख सम्पत बहु भांति।
तेरे गृह मुक्ता भई, सो बर्णी नहिं जाति।।

।। चौपाई ।।

सांझ भई गृह तब आये, लोग बिलोकि महासुख पाये।
बांध्यो धेनु मिले पितु माता, हर्षि-हर्षि पूंछत कुशलाता।

बैठे आनि परस्पर लोगा, करत बिचार सर्ब सुत जोगा।
जापर करत सर्प फण छाया, सो अवश्य नर होवत राया।
कै हो योगी सिद्ध शिरोमण, ज्ञानी तेजवान गुण भूषण।
सो यह बालक है अधिकारी, जानि परत मोहि लक्षण भारी।
निश दिन लोग करत सनमाना, बालक चातुर जानि सयाना।
बाल चरित्र महा सुखदाई, पढ़त सुनत दोष मिटि जाई।

।। दोहा ।।

सिद्ध औलिया जगत में, बिरले कोई होय।
बाल रूप बिचरै सदा, भेद न पावे कोय।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत बाल लीला वर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ।।२।।

।। दोहा ।।

अगम अगोचर नाथ तुम, पारब्रह्म करतार।
घट-घट व्यापक हो सदा, विनवों बारम्बार।।

।। चौपाई ।।

द्वादश वर्ष आयु जब बीती, अलख नाम से कीन्ही प्रीति।
गृह सम्पत्ति कुछ मन नहिं भावे, बन जङ्गल अरु गुहा सुहावे।
इच्छा रूप रहे ब्रह्मचारी, जिततित फिरत अलख हितकारी।
एक दिवस बन धेनु चरावन, गये मिले तहां पाली पावन।
हिलि मिलि बन में धेनु चरावें, भांति-भांति खेल रचावें।
पाली बोला एक सयाना, अब तो आनि लग्यो मध्याना।
धेनु बच्छ सब भये पियासे, यहाँ नहीं पानी के चासे।
ताते सब मिलि चलिये ग्रामा, तृषावन्त पावें विश्रामा।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ बाबा कही, हम नहिं जावें ग्राम।
धेनु हमारी बन रहैं, बनहिं करें विश्राम।।

।। चौपाई ।।

धेनु बच्छ जल यहां पियाउं, बिपिन छांड़ि कहुं अंत न जाऊं।
पाली बोला सुन यह लेखा, बन जंगल सब मेरा देखा।
नदी नाला सबी सुखाने, पानी बिना जीव अकुलाने।
तू तौ भवा बाबरी खासा, यहां कहां पानी का बासा।

पाली सकल ऐसे ही बोले, धेनु बच्छ लै ग्रामहिं डोले।
कछुक दूर जब आगे गये, मेघ गगन बिच देखत भये।
छिनमें मेघ गगन घिरिआये, घटा घोर नभ ऊपर छाये।
नाचै कुहकैं बन के मोरा, उठै शब्द आनंद घन घोरा।

।। दोहा ।।

उमंगि-उमंगि कारी घटा, गरजे मेघा माल।
बीजुल चमकै गगनबिच, शोभा अधिक विशाल।।

गोपालक श्री मस्तनाथ जी द्वारा वर्षा करना

।। चौपाई ।।

गरजि धुमड़ि जल बरसन लागे, पाली सकल भीगते भागे।
बरष्यो नीर चहुं दिस गामा, लै-लै धेनु गये निज धामा।

तहां जाय यह शोर मचायो, मस्तनाथ पानी बरषायो।
नगर लोग सब पूछन आये, पाली लोगन हाल बताये।
यह आश्चर्य नगर सब जाना, है कोई योगी जती सयाना।
बालक भेद नहीं कोउ पाया, कौन जात कौने जन्माया।
संध्या समय धेनु लै आये, मस्तनाथ आदर अति पाये।
धनि-धनि सबला भाग तिहारा, जन्म सुफल जिन कीन्हा सारा।

।। दोहा ।।

लोग सराहत नगर के, करत बहुत सा मान।
रेवारी के बंस में, है यह कीरतवान।।

।। चौपाई ।।

एक दिवस नगर के पाली, करी गोष्टी बहुत बिशाली।
एक साथ बन धेनु चरावें, आज दिवस कहुं अंत न जावें।
हर्षि-हर्षि उर ऐसी ठानी, बाल गोष्टी सबहूं मानी।
होत प्रभात धेनुसंग लीना, पाली लोग गवन बन कीना।
पाली एक सबला ग्रह आया, मस्तनाथ को पास बुलाया
सकल गोष्टी कहता भया, धेनु सहित लै बन को गया।
इकट्ठा भये तहां सब पाली, हिलि मिलि खेलत खेल बिसाली।
एक जाम दिवस जब आया, लगी तृषा पानी नहिं पाया।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ मन आपने, कीन्हा एक विचार।
दूध पिलाऊं सबन को, तृषा करूंगो छार।।

।। चौपाई ।।

धेनु बुलायो तब प्रतिपाला, एक बालटी दूध निकाला।
सब पालिन को पास बुलायो, पूरण ह्वैकर दूध पिलायो।

प्यासे ग्वालों की मस्तनाथ जी ने दूध से प्यास बुझाई

पी-पी दूध भये आनन्दा, गुण जस गावत पाली बृन्दा।
ताही समय एक बहुभांती, देखि जात बरात सुहाती।
मस्तनाथ तब लेत बुलाई, दूध पियो तुम सगरे भाई।
दूध पिलाया सबको छकिछकि, रहा नबा की देख लखिलखि।
भे प्रसन्न तब सकल बराती, पूंछन लगे कौन तुम जाती।
हम नहिं देखो पुरुष ऐसे, परमारथ में हौ तुम जैसे।

।। दोहा ।।

एक बाल्टी दूध था, छकि-छकि पिया बरात।
तहुं न खाली वो हुई, अचरज बड़ा दिखात।।

।। चौपाई ।।

पात्र छोट अरु दूध घनेरा, कैसे निकस्यो लगी न देरा।
पहिले पाली पावन किया, पाछे सकल बरातिन पिया।
पात्र नेक नहिं खाली हुआ, है कोई सिद्ध पुरुष की दुआ।
लोग सकल पूंछत तेहि बारा, तात कहा है नाम तुम्हारा।
पाली लोगन हाल बखाना, जाको नाम कहत मस्ताना।
सबला का सुत जातरे वारी, केसरिहटेमां रहत सुखारी।
लोग सकल मन करत बिचारा, है कोई सती देव दीदारा।
हर्षि प्रमाण लोग सब कीना, सकल बराती मारग लीना।

।। दोहा ।।

सांझ भई गौवें लिये, बन से चले सुजान।
निज-निज गृह पाली गये, चरचा करत बखान।।

।। चौपाई ।।

पुनि-पुनि पाली कीन्हीं चरचा, मस्तनाथ मोहिं दीना परचा।
पात्र एक था छोटा सारा, दूध भरा तामें यकवारा।
पास आपने हमें बुलाया, सब पालिन को दूध पिलाया।
और सुनी यक बात अजूबा, जात बरात रही यक खूबा।

प्रेम सहित उनको बुलवाया, छकि-छकि सबको दूध पिलाया।
भरा पात्र वह तौभी रहा, आंखिन देखी हमने कहा।
एता दूध कहां से आया, सोई अचरज तुम्हें सुनाया।
बाल रूप में है कोऊ देव, याको सकल करौ तुम सेवा।।

।। दोहा ।।

पुरबासी यह बचन सुन, जान्यो असत बिलास।
गृह का बालक जानि के, किया नहीं विश्वास।।

।। चौपाई ।।

बहुरि बरात जब ग्रामें आई, सबला का गृह पूछत जाई।
खोजत-खोजत गृह-गृह बासा, गये बराती सबला पासा।
सबला देखा एकै जाती, आदर मान किया बहुभांती।
कहैं बराती सुन तैं भाई, प्रेम सहित बोले हर्षाई।
सुत मस्ताना तुम्हारा होई, तासों मिला चहत सब कोई।
पिता पुत्र को तुरत बुलायो, देखि बराती शीस नवायो।
गुण यश गावैं विविध प्रकारा, सुमरि-सुमरि परचा निरधारा।
गये बराती फिर निज ठामा, सब के उर आनन्द विश्रामा।

।। दोहा ।।

पुरवासी निश्चय किया, त्यागि सकल अभिमान।
सत्य-सत्य पाली कहा, पुनि-पुनि करत बखान।।

।। चौपाई ।।

सबला सुनि-सुनि चरित अपारा, अपने मन आनन्द बिस्तारा।
बार-बार पूंछत चितलाई, पाली कहा सकल समुझाई।
पूत सपूत दिया करतारा, सुनो वचन यह आज हमारा।
काम काज गृह का जंजाला, छांड़ो सकल रहो नित बाला।
धेनु चरावन तुम मत जाओ, गृह बैठे हरि के गुण गाओ।
सुनि के वचन चरण शिरनाया, मात पिता उर सुख उपजाया।
कह लग बर्णों चरित अपारा, बुध समर्थ नहीं करूं पुकारा।

।। दोहा ।।

शङ्कर कहत पुकारि के, श्रवण करौ सब कोय।
नाथ चरित्र विचित्र अति, सुनि-सुनि आनन्द होय।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत बाल लीला वर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः।।३।।

।। दोहा ।।

सतगुरु मेरा स्वामियां, मन वांछित फल देत।
कुमति अविद्या दूर करि, सकल विपत्ति हर लेत।।

।। चौपाई ।।

विनती सुनो नाथ भगवाना, निशदिन राखूं तुमरो ध्याना।
तुम प्रताप मैं हरि यश गाऊं, सत्य स्वरूप परम पद पाऊं।
एक चरित्र विचित्र बखानों, मस्तनाथ चरण चित्त आनों।
जाके सुने परम सुख पावे, भक्ति बढ़े अरू पातक जावे।
केसरिहटे एक नगर पुनीता, जहां बसैं सज्जन मनमीता।
मिसर नाम एक रहा ब्राह्मण, अति सुशील सुन्दर कुलभूषण।
बुद्धिवान पंडित अति चातुर, वेद पुराण शास्त्र गुण आतुर।
नेम धर्म अरु बहुत अचारा, कुल ब्योहार करै नित सारा।

।। दोहा ।।

निशि जागै सोवै नहीं, बैठा रहे सुजान।
लिये सुमरनी हाथ में, हरि सों राखे ध्यान।।

।। चौपाई ।।

ब्राह्मण जागै नगरी सोवै, अर्द्ध रात्रि जब पूरी होवै।
निज गृह बैठा ब्राह्मण देखै, सबला आंगन धूनी पेखै।
मस्तनाथ सबला का पूता, ज्वान अवस्था है अवधूता।

सबला के घर बालक (मस्तनाथ जी) का तपस्वी रूप में
धूने पर पंडित को दर्शन

शीस जटा अरु भस्म रमाये, बैठा आसन सिद्ध लगाये।
कानन कुंडल गल बिचसेली, हाथ फावड़ी है अलबेली।
धूनी जलै होय परकासा, बहुत शिष्य बैठे हैं पासा।
अर्द्ध रात्रि जब हो बितीता, तब नहिं देखे कोउ अतीता।
नित वह देखै अपने घर सों, नहिं कहै कछू निज मुख सों।

।। दोहा ।।

एक दिवस सबला सदन, द्विजवर पूंछा आय।
तेरे गृह योगी बहुत, कहं से पहुंचे आया।।

।। चौपाई ।।

थी अभिलाषा बहुत मन मेरे, एक दिवस गृह आवें तेरे।
गृह ब्योहार काज फंसि गया, ता कारण नहिं आना भया।
सो दर्शन मोहिं आज कराओ, धूनी कहं पर हमें दिखाओ।
सबला तब निज मन मुसकाना, नाथ कहा यह कौतुक ठाना।
बिप्र जान के शीस नवायो, करि आदर आसन बैठायो।
सबला कहा सुनो महाराजू, सत्य बात मानो तुम आजू।
योगी नहीं यहां कोउ आया, लोगन तुमको है भरमाया।
सो तुम उनसे पूछो जाई, साध कहां सो देउ बताई।

।। दोहा ।।

विप्र कहा समुझाय के, सुन सबला यह बात।
आंखिन देखी मैं कहौं, झूंठ नहीं कुछ तात।।

।। चौपाई ।।

धूनी लागत बहुत सुहावन, योगी तपैं नित तेरे आंगन।
तू नाहिं जानत भरम भुलाना, हम सब जानत कौतुक नाना।
यह विधि कहिकर विप्र बिचारा, अपने गृह को तुरत सिधारा।
अर्द्ध रात्रि जब पूरण आई, विप्र परोसी लेत बुलाई।
सब कोऊ देखा अनुरागी, सबला आंगन धूनी लागी।
योगी बैठे ध्यान लगाये, अलख नाम सों अति चितलाये।
प्रात होत चरचा यह भारी, सुनि-सुनि सबला भयो दुखारी।
ना कहुं योगी ना कहुं धूनी, कैसा चरचा होत अजूनी।

।। दोहा ।।

बिप्र सदन सबला गया, कहता भया बखान।
बिन देखे मानौ नहीं, सुनिये बिप्र सुजान।।

।। चौपाई ।।

कौतुक में निज लोचन देखूं, निश्चय मानि हृदै फिर लेखू।
यह विधि कहि निज गृह को गया, अर्द्ध रात्रि को आता भया।
बैठि गये दौउ तरुवर नीचे, देखा एक निमिष के पीछे।
विप्र कहा सुन सबला भाई, नैन पसारि के देखु अगाई।
यह गह किसका किसके योगी, धूनी तपै ब्रह्म रस भोगी।
मोहिं बताओ इसका भेवा, कौन-कौन हैंगे सुरदेवा।
पहिली बात झूंठकर डारी, अब तो साँची मान हमारी।
यह बालक दृष्टांत दिखावे, तू अनजान भेद नहिं पावे।

।। दोहा ।।

सबला देखा नैन भर, देव चरित्र अपार।
उपजी शङ्का बहुत सी, पुनि-पुनि करत विचार।।

।। चौपाई ।।

सबला बोला बचन उचारा, गृह तो हैगा सही हमारा।
अपने सुत के राम अनुहारी, तेजवान देखौं अति भारी।
जैसी हैगी सुत की सूरत, तैसी देखौं आँगन मूरत।
बैठे योगी धूनी लगाये, देव गन्धर्व सबी जहं आये।

बीति गई जबहीं अधराती, फिर नहीं देखे योग सुहाती।
प्रात भई तब गृह को गया, चरचा सगरे करता भया।
पुरबासी सबला घर आये, यथा योग्य सबको बैठाये।
बार-बार आंगन निरखावे, धूनी चिन्ह कहूं नहिं पावे।

।। दोहा ।।

पिता पुत्र बुलवाय के, लीन्ह गोद बैठाय।।
प्रेम सहित अति प्यार करि, कहत भया समझाय।।

।। चौपाई ।।

सुनो पुत्र यह बात हमारी, आश्चर्य हैगा मोहिं भारी।
नित गृह होवे चरित अपारा, लखी न जावे गति करतारा।
निज लोचन हम देखि बखाना, कहो बिचारि तुम पुत्र सुजाना।
पुत्र कहा सुन पिता हमारे, हम बालक अज्ञान तुम्हारे।
विद्यावान गुणीं जन जानैं, गुप्त प्रगट की गति पहिचानैं।
हम नहिं जानत कैसी माया, तुम्हीं जानो हे पितुराया।
सबला सुनि मन अधिक डराना, उपजा शोक बहुत दुख माना।
यह कोउ बालक है सुरदेवा, जानि पड़त नहिं इसका भेवा।

।। दोहा ।।

नाथ चरित्र विचित्र है, महा सुखन की खानि।
द्विज दृष्टांत वर्णन करी, चरण कमल चित आनि।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगी कृत बाल लीला वर्णनो नाम चतुर्थोऽध्यायः।।४।।

।। दोहा ।।

मोहिं भरोसा नाथ का, दृढ़ मेरे विश्वास।
भव सागर से पार करि, काटैंगे सब त्रास।।

।। चौपाई ।।

सबला नगर के लोग बुलाये, तिन सबको यह हाल सुनाये।
गृह में हैगा जो सुत मेरा, द्वादस वर्ष अरबल केरा।
बाल चरित तुम आंखिन देखा, अम्बर वर्षे सोऊ पेखा।
धेनु चरावत पालिन साथा, बन के चरित सुने सब गाथा।
द्विज दृष्टांत पुरवासी जाना, ताहि देखि मैं बहुत डराना।
कहं लग कहूं वचन बिस्तारा, बन जंगल अति लागत प्यारा।
ना जानों यह कैसा बालक, दीन्ह मोहिं नाथ जनपालक।
नंगा फिरत बाबला ऐसा, कहो विचारी ताहि तुम तैसा।

।। दोहा ।।

मात पिता अरु नगर के, लोगन किया बिचार।
संत महात्मा ऋषिन के, दीजै पांयन डार।।

।। चौपाई ।।

नगर लोग सब इकट्ठा कीन्हें, मात पिता संग बालक लीन्हें।
जहं तहं गये महात्मा तीरा, कोउ नहीं कीना शिष्य गंभीरा।
बहुरि सकल निज ग्रामें आये, तहां एक योगेश्वर आये।
बाबा नाथ नाम नरमाई, जिनका पन्थ कहावे आई।
रहे प्रसिद्ध ब्रह्म विश्रामी, संतोषी सुशील निषकामी।

अगम निगम अम्भोर सभी ने, योग कला में थे परवीने।
तेज प्रताप सुयश अधिकाई, महिमा जिनकी कही न जाई।
भगवा भेख महात्मा भारी, तीन लोक में जै जै कारी।

।। दोहा ।।

कानन कुण्डल सिर जटा, भस्म अंग छबि रूप।
सेली सिंगी कंठ बीच, नाथ सिंगार अनूप।।

।। चौपाई ।।

बैठे एक वृक्ष की छाया, नाथ शिरोमणि सब सुखराया।
पुरबासी दरशन को आये, द्वौ कर जोरे शीस नवाये।
मात पिता सुख अधिक बिचारा, चरण कमल पर बालक डारा।
दो कर जोरि कहत यह बचना, स्वामी कर लो चेला अपना।

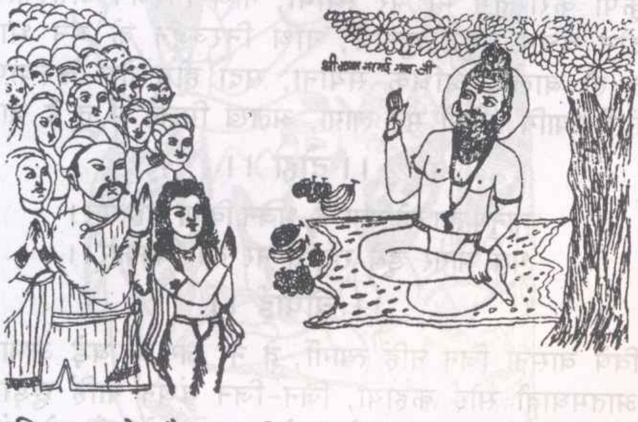

परिवार वाले और ग्राम निवासियों ने बालक मस्ताना को श्री नरमाईनाथ जी से शिष्य बनाने के लिये प्रार्थना करना

निसिदिन करै तुम्हारी सेवा, तुम हो नाथ निरंजन देव।
स्वामी कहा बचन सुन मेरा, कहा करूँ लै बालक तेरा।
लै जा बालक अपना सोई, हम नहिं करते चेला कोई।
एका एकी बिचरैं सन्ता, सदा सुखी रहते गुणवन्ता।

।। दोहा ।।

हाथ जोरि बालक कही, चरण कमल सिर नाय।
चेला कर लो नाथ तुम, सेवा करूं बनाय।।

।। चौपाई ।।

मैं जब आयो शरण तुम्हारे, करो मनोरथ पूर्ण सारे।
दीन दुखी अति जानि निरंजन, काटत हो सबके दुख बन्धन।
भव सागर सों पार उतारत, जन्म मरण के दुख निवारत।
तुम तो नाथ सदा अविनासी, भर्म जाल की काटत फाँसी।
कृपा करो तुम मों पर स्वामी, नाथ निरंजन अंतरजामी।
दीन वचन बहुत सुनाये, नाथ निरञ्जन के मन भाये।
तू तौ बालक अधिक सयाना, सदा होय तेरा कल्याणा।
विषै त्यागि हरिसों मन लागा, अलख मिलन में तू है जागा।

।। दोहा ।।

मानुष तन को पाय के, भजन किया नहिं सार।
भव सागर डूबे रहें, ते नर को धिक्कार।।

।। चौपाई ।।

विषै वासना जिन नहिं त्यागीं, ते नर जग में बड़े अभागी।
आतमघाती सोई कहाया, जिन-जिन बंधन नाहिं छुड़ाया।
नर को चाहिए उत्तम संगा, नेम धरम सों रहै जो चंगा।
मात पिता को दिया असीसा, बालक छाड़ि गये पदईसा।

कछुक दिवस सेवा में राखा, करूं शिष्य पुनि मन में भाखा।
मास पक्ष शुभ तिथि बिचारा, लग्न नक्षत्र योग बर बारा।
चोटी लै मुंडन करवाया, मंत्र विधि सहित गुरु सुनाया।
सत्तरा सै छेहत्तर संबत बीरा, मस्तनाथ भये शिष्य गंभीरा।

।। दोहा ।।

कृपा करी गुरुनाथ ने, सिर पर राखा हाथ।
नाम धरा मस्ताई बाबा, चेला किया सनाथ।।

श्री नरमाई नाथ जी द्वारा बालक मस्ताना को शिष्य बनाना

॥ चौपाई ॥

अभयदान दीना गुरुनाथा, शिष्य नवायो गुरु पद माथा।
द्वादश वर्ष लो ओघड़ राखा, सेवा टहल परम रस चाखा।

श्री मस्तनाथ जी के कानों में कुण्डल डालना

नगर पहेवा कान फड़ाये, फेर दरसनी नाथ कहाये।
सतरा सै अट्ठासी संबत बीरा, मस्तनाथ ने लीना चीरा।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु कहाये, गुरु महेश्वर घट-घट छाये।
परमानन्द परम सुखदाई, गुरु चरणन की बलि-बलि जाई।
राज रंग की छांड़ी आसा, मन में राखा दृढ़ विश्वासा।
मिथ्या वचन कभी न भाखै, शील संतोष दया उर राखै।

॥ दोहा ॥

आना जाना धावना, चौरासी मिटि जाय।
छूटि जात सब भरमना, साहब सतगुरु पाय।

।। चौपाई ।।

अगम पन्थ खांडे की धारा, सुरत निरत मकरी असतारा।
मन को मारै तन बस करै, सोई पुरुष भव सागर तरै।
जग ब्योहार धर्म की नीती, बुध जन जानि करत सोइ रीती।
एक ब्रह्म अद्वैत सदाई, घट-घट व्यापक दूजा नाई।
आपहि रूप आपही चेला, आपी बन-बन फिरत अकेला।
एक से बहुत आप ही होवै, आप छिपाये आपको जोवै।
सेवक बनि-बनि आपी पूजा, अपना बरण बनाया दूजा।
करि-करि लीला आप भुलाना, द्वैत भाव करि आपी माना।

।। दोहा ।।

ढूंढन दूरि न जाउ तुम, खोज करो तन माहिं।
ब्रह्म अनादि है तुही, दूजा कोउ नाहिं।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत बाल लीला वर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः।।५।।

।। दोहा ।।

तुम गुरु कृपानिधान हो, सकल गुणन की खानि।
चरण शरण मोहिं राखिये, दास आपनो जानि।।

।। चौपाई ।।

सतगुरु नाथ निरंजन देवा, तुम्हारी करैं ब्रह्मादिक सेवा।
तेंतीस कोटि देवता ध्यावें, मन बांछित फल तुम से पावें।
तुम परताप सिद्ध चौरासी, अजर अमर हो गये अविनाशी।
जप तप जोगध्यान सिद्ध करता, तुम सम और नाहिं दुखहरता।
सत स्वरूप निर्वाण अखंडित, चिनमय मूर्ति परम आनन्दित।
जीवन मुक्ति बज्र की काया, सदा अरोग नहीं तन छाया।
रहत अकाल काल ना जाके, सकल भुवन आरत बस ताके।
अष्ट सिद्ध नौ निधि के दाता, तुम चरनन मेरो मन राता।

।। दोहा ।।

शंकर चित्त लगाओ तुम, देव चरण कोई आन।
एक चरण श्रीनाथ पर, नित ही राखो ध्यान।।

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ की अद्भुत लीला, सज्जन सुनिये सकल सुशीला।
तीरथ एक पहेवा नामी, पराचीन सुन्दर सुख धामी।
निर्मल बहै सरसुती गंगा, पाप निवार बारि तरंगा।
चैत अमावस लागत मेला, षट दरशन जहं होवत भेला।
तीर्थ महातम अगम अपारा, वेद पुराण कहत संसारा।

करि बिचार कुछ अपने मन में, शिष्य संग लै तीरथ गमने।
गंगा निकट पहुंचे जाई, धूनी अद्भुत लेत लगाई।
सुनि-सुनि लोग तीर्थ के आवें, दरशन करि-करि अति सुख पावें।

।। दोहा ।।

धूना बारह पंथ का, रहा बहुत गम्भीर।
एक सहस्त्र योगी तपै, नदी सरस्वती तीर।।

पहेवा में बारह पन्थ के योगियों द्वारा बाबा मस्तनाथ जी को निमन्त्रित करना

।। चौपाई ।।

बारह पंथ माहिं भण्डारा, एक दिवस विविध प्रकारा।
ता दिन योगी कछुक सरीरा, गये बुलावन तपसी धीरा।

करि आदेश सकुच मनमाहीं, बैठि गये योगी तेहि ठाहीं।
बोल बचन राखि कुछ अंतर, जीमन चलो रसाई सुन्दर।
नाथ भेद कुछ मन में जाना, बोले बचन नीति परमाना।
बाहर कम्मल बारह गाई, लेकर भेटो सहज सुभाई।
बारह पंथ के बारह भण्डारी, देहु भेंट मोहिं आन अगारी।
तब हम चले साथ अनुकूला, भेष रसोई जीवन मूला।

।। दोहा ।।

सुनि-सुनि वचन आयोग सब, बोल उठे यक बार।
तैं औघड़ है बावला, मति का हीन लबार।।

।। चौपाई ।।

तुम औघढ़ हम नाथ दरशनी, बात कहत तुमसों न बनी।
बाहर पंथ भेष गुरु तेरा, तासों आज पुजावन हेरा।
बहुत अयोग सुनी है हमने, बात विचारी कही न तुमने।
ऐसे योगी बहु तक फिरैं, खाक लगाये उदर भरैं।
जो तू औघड़ अजमत वाला, परिचय दे मुझको ततकाला।
तो हम पूजैं चरण तुम्हारे, धरि-धरि भेंट फूल पनवारे।
जो ना अजमत हम कुछ पावें, डंड तोहि फिर बहुत करावे।
करि अपमान बहुत नहिं थोरा, योगी बोले वचन कठोरा।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ तब यों कही, सुनु तपसी यह बात।
करामात देखो अभी, क्यों मन में सकुचात।।

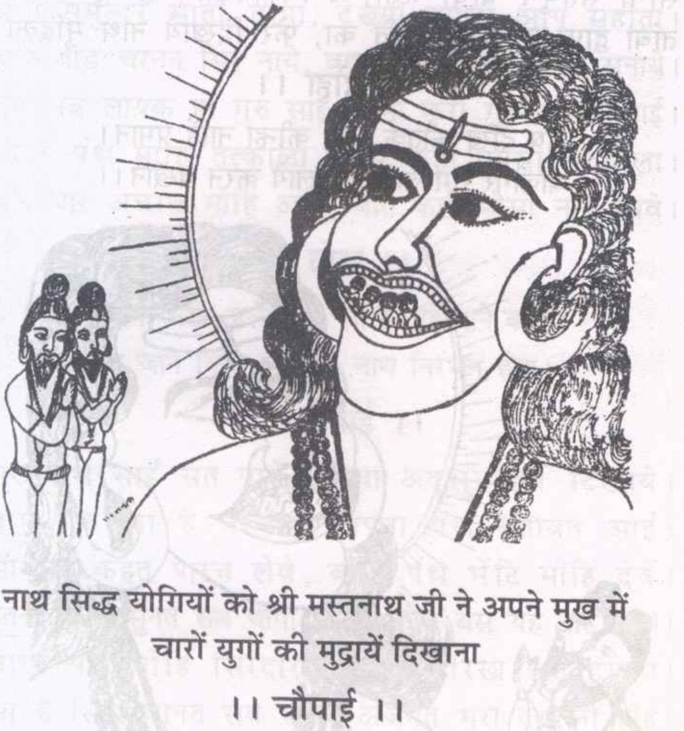

नाथ सिद्ध योगियों को श्री मस्तनाथ जी ने अपने मुख में चारों युगों की मुद्रायें दिखाना

।। चौपाई ।।

गुरुनाथ तब बोले बचना, चार जुगों की देखो रचना।
कौन जुगों के दरशन मांगो, अपने-अपने मुख से सांगो।
मैं अनादि योगी अविनासी, अनंत जुगों का ब्रह्म विलासी।
भेद नहीं कोइ मेरा पावे, निगुरी दुनिया मर-मर जावे।
सनमुख देखा लगी न वारा, घर सों अपने मुख की द्वारा।
चार जुगों के चार प्रकारा, सेली मुद्रा नाद किनारा।

सोना सतयुग चांदी त्रेता, प्रथम दिखाये द्वै जुग वेता।
तांबा द्वापर कल जुग मृति का, फेर दिखाये नाथ मुद्रिका।

।। दोहा ।।

भेष देखि कौतुक सबै, कीन्हा नाहिं प्रमान।
बाजीगर राम जानि के, लागे करन बखान।।

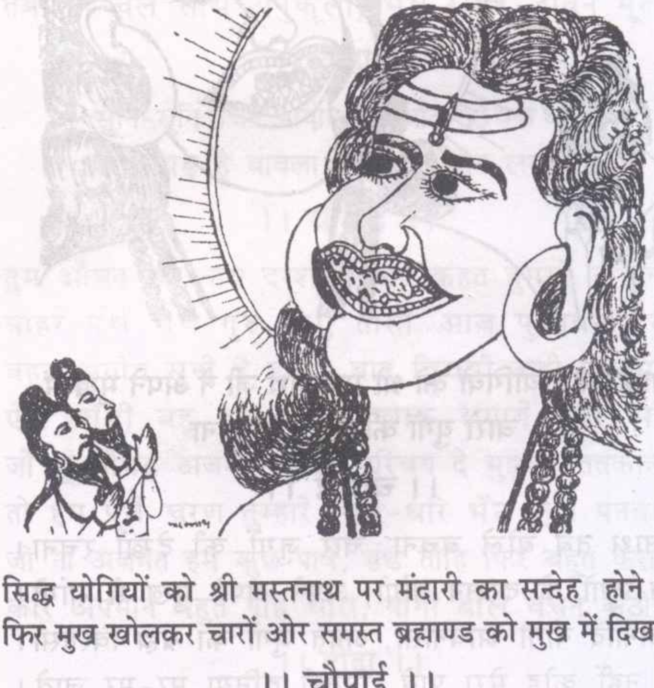

सिद्ध योगियों को श्री मस्तनाथ पर मंदारी का सन्देह होने पर फिर मुख खोलकर चारों ओर समस्त ब्रह्माण्ड को मुख में दिखाना

।। चौपाई ।।

लोग कही यह बात खुलासा, बाजीगर अस किया तमासा।
श्रवण किया जब गुरु अविकारी, ताछिन मुख फिर देत पसारी।

देखी अद्‌भुत गुरु की माया, चारों जुग घट भीतर पाया।
सात समुन्दर सातौं दीपा, देख्यो तपसी आप सहीता।
हाथ जोड़ चरनन सिर नाये, बहु विधि तपसी विनय सुनाये।
तुम सब लायक हो गुरु साईं, क्षमा करो गुरुदेव की नाई।
बारह पंथ माहिं तत्काला, जाय कहा तपसी मतवाला।
बार-बार अचरज मोहिं आवे, बात कही मोसों नहिं जावे।

।। दोहा ।।

जोगी भेख अलेख है, लखि नहिं पाने कोय।
ना जाने किस रूप में, नाथ निरंजन होय।।

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ साईं सत पाये, परचा अद्‌भुत हमें दिखाये।
नाम गुरु का है नरमाई, अपना पंथ बतावत आई।
सो वह कहत पारच लेवें, बारह पंथ भेंटि मोहिं देवें।
इतना वचन सुनत सब योगी, कह्यो क्रोध बस यह नहिं होगी।
बारह पंथ मोहिं सिरदारा, केवल गोरख एक हमारा।
सो है सिद्ध जानत सब कोई, अजमत भरा दरशनी होई।
हम नाथ दरशनी अगम अपारा, औघड़ पूजैं चरण हमारा।
यह मरजाद रिवाज सदा की, डंड जोग हैं बातें ताकी।

।। दोहा ।।

कानो कुण्डल हैं नहीं, नाद गले बिच नाहिं।
कैसा योगी नाथ है, यह संशय मन माहिं।

।। चौपाई ।।

हम नहिं देते मान बड़ाई, कहो जाय तुम वासों भाई।
झूठे कलजुग सिद्ध अनूपी, बनि-बनि आवें ज्यों बहुरूपी।
जगत पुजावें करि पाखंडा, अंत समय सोई आवत डंडा।
ऐसे जोगी जगत भ्रमाये, कपट रूप धरि मान उठाये।
मस्तनाथ सर्वण जब कीना, मानत नाहिं भेष परवीना।
तब गुरु रेचक पवना छांड़ा, महाकठिन चहुं दिसि सों बाढ़ा।
छाय गई धुंध बे परमाना, सूझि परे नहिं अपन बिराना।
दिन अरु रीति एक सम व्यापी, महाबिकल काया सब कांपी।

।। दोहा ।।

उड़ि-उड़ि वृक्ष गगन चढ़ि, गिरैं धरण अति जोर।
मच्यो कुलाहल क्षेत्र बिच, होन लगा अति शोर।।

।। चौपाई ।।

और एक गुरु माया कीन्हीं, स्वास खींच जब घट में लीन्हीं।
करि कुंभक बड़बानल चैतन, सूर्य कला सों करी विवेचन।
रोक दिया तब चलता पवना, लागे तपन सूर्य फिर गगना।
परत किरण धरणी बलकारे, मानों बरसत गगन अंगारे।
सह न सकत ढूंढत परछांई, दौड़-दौड़ सब जहं तहं जाई।
व्याकुल होय महा गंभीरा, विनती करैं सुरसुती तीरा।
तब गुरुनाथ कुम्भक पलटाया, चन्द्रकला ते तेज हटाया।
सुखी भये तब तीरथ बासी, योग किया अद्भुत परकासी।

।। दोहा ।।

नाथ चरित्र विचित्र हैं, मोसों कहा ना जाय।
और एक लीला सुनो, मन को मोद बढ़ाय।।

।। चौपाई ।।

योगी भेष भयौ गरभीला, तासों नाथ करी यह लीला।
द्वै-द्वै योगी बात चलाई, खोदी जाय समाधी अगाई।
कंगन बांधि परस्पर देवें, जियत समाधी फिर वे लेवें।
एक-एक में द्वै-द्वै योगी, जियत समाधी लेई असोगी।
यहि विधि चौबिस मूरत बांधी, गोप-गोप उन लीन समाधी।
एक रहा कोई बालक योगी, लेन समाधी गयो अभोगी।
ताके गुरु ने जब सुन पाई, लाया तुरतै पकर कलाई।
भेष माहिं तब शोर मचाया, किस गफलत में योगी राया।

।। दोहा ।।

जियत समाधी लेत हैं, योगी गोप अजान।
भेष सभावेगा सबी, बचै न एकौ आन।।

।। चौपाई ।।

बालक योगी तब हठ किया, मैं तो खोऊं अपना जिया।
मोको छेड़ो तुम मत कोई, गुरु नाथ चाहा सो होई।
समझ बूझ बालक लै अपना, मस्तनाथ के डारा चरना।
यह गुरु बालक मोहिं पियारा, देउ बकसि अतिसुजस तुम्हारा।
तब गुरु बोले यह मृदुबानी, दिया बकसि बालक हो ज्ञानी।
सुनत बचन बालक हठ छूटा, उपजो घट में ज्ञान अटूटा।

भेष देखि यह कौतुक न्यारा, तब मन अपने कीन्ह विचारा।
यह सब कारण वाका होई, क्षमा करावो तुम सब कोई।

।। दोहा ।।

योगी बारह पंथ के, भेंट धरी तब आन।
हाथ जोरि चरणन परे, स्तुति करी बखान।।

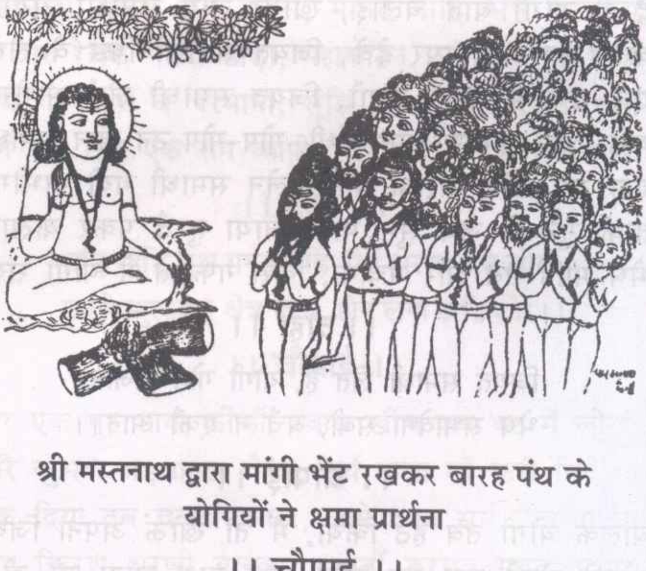

श्री मस्तनाथ द्वारा मांगी भेंट रखकर बारह पंथ के योगियों ने क्षमा प्रार्थना

।। चौपाई ।।

जै गुरुदेव अखिल अविनासी, त्रिभुवन दाता घट-घट बासी।
अगम अगोचर अन्तरजामी, श्री मस्तनाथ गुरुदेव नमामी।
सिद्ध शिरोमणि ब्रह्म स्वरूपा, नाथ निरंजन अलख अनूपा।
ज्ञान बैराग परम पद गामी, श्री मस्तनाथ गुरुदेव नमामी।

जटा मुकट श्रवणन द्विति कुंडल, भस्म अंग आखंडित निश्चल।
नाद जनेऊ भूषित स्वामी, श्री मस्तनाथ गुरुदेव नमामी।
अगम अगोचर भावातीतं, मनोनिरोधी त्रैगुण रहितं।
गोरक्ष काया आत्मारामी, श्री मस्तनाथ गुरुदेव नमामी।

।। दोहा ।।

बिनति सुनि यह भांती जब, प्रसन्न भये गुरु नाथ।
दीना आशीर्वाद तब, सदा रहो सुख साथ।।

।। चौपाई ।।

जै जै कारी नाद बजाये, ऊपर सुमन बहुत बर्षाये।
बार-बार चरनन शिर नावें, चरण धूलि लै माथ लगावें।
वा दिन की छबि कही न जावे, कोविद लिख-लिख पार न पावे।
नाथ मूर्ती शोभित ऐसे, नौलख मध्ये चन्दा जैसे।
इड़ा पिंगला दोउ समावे, सुखमन साधगगन चढ़ि जावे।
दसवें द्वार उनमुन राखै, काल गवन जेहि कर न हिंसा कै।
युग-युग योगी राखै काया, गगन सदर्श लिपै नहिं माया।
जुगत-जुगत सों अमृत पीवें, मरै कधी ना योगी जीवें।

।। दोहा ।।

चन्द्र चले सूरज चले, धरणी चलि-चलि जाय।
योगी अचल कधी न जावे, भाषत गोरक्षराय।।

।। चौपाई ।।

बुधजन करत सदा शुभ करनी, भव सागर से पार उतरनी।
देवल यात्रा शून समाना, अतीत यात्रा सुफल बखाना।
उदय अस्त लौं सब जग धाया, सोच समझ घट ही में पाया।
जप तप संयम नेम अपारा, आवागमन मिटै ना सारा।

यज्ञ दान होम नहिं नीका, स्वर्ग लोक जब लागा फीका।
मान बड़ाई लाज बहायो, इन्द्र भोग मन से बिसरायो।
जब उपज्यो तन माहिं विवेका, जीव ब्रह्म तब होवत एका।
ऊंच नीच रहा न कोई, भया बराबर आया होई।

।। दोहा ।।

जन्म-जन्म के दुख गये, मिटि गये सारे फन्द।
पुरुषोत्तम परमात्मा, पाया परमानन्द।।

।। चौपाई ।।

वह जग भगा रैन का सपना, यहां नहीं कोई है अपना।
भाई भतीजा काम न आवे, बेटा बहू छांड़ि सब जावे।
सत्य पदारथ है नहिं कोई, नासवन्त यह जग सब होई।
एक बूंद सों सृष्टि उपायो, अनेक बूंद को खोय बहायो।
एक बूंद जब देखा मुवा, रोय-रोय दुनियां निर्बल हुवा।
सबी सृष्टि का एकी द्वारा, कोई बालक कोई दारा।
जिसे द्वारे से दुनियां आया, ताको जाये फेर लपिटाया।
ऐसा भया महा मतमंदा, बिना बिचारे फिरत है अंधा।

।। दोहा ।।

मैल मूत्र दुरगंद अति, हाड़ मांस अरु चाम।
रक्त नर्क की पूतली, ताके होत गुलाम।।

।। चौपाई ।।

यकला निर्मल था ब्रह्मचारी, बांधी गृह होवेत घरवारी।
भरमजाल सिर मोट उठाई, भये नीच बिनती चतुराई।

धीरज संतोष गई सबूरी, परबस हैकर करत मजूरी।
आसा ममता की गल फांसी, डारे फिरत सदा उपहांसी।
निसदिन नेह त्रिया सों राखै, अलख पुरुष को कदी न आखै।
निसदिन भटकत बैल की नाईं, साँझ होत आये गृह माईं।
जूढ़ी ताप चढ़ी अति घोरा, नहिं दुख हरत कोई भी मेरा।
हंसा गया जहां थी आसा, कामन आयो बीर बतासा।

।। दोहा ।।

आशा ममता कामना, तृष्णा गर्भ कराल।
एक त्रिया के नेह सों, भया दुख जंजाल।।

।। चौपाई ।।

बुधजन भ्रमजाल को मेटत, सतसंगा करि ब्रह्म को मेटत।
अज्ञानी भ्रमजाल उठावें, दुख को पाय नर्क को जावें।
आवागमन मिटत फांसी, कर्म बिवस जावे चौरासी।
बुधजन खोजत सत्त स्वरूपा, मूरख खोजन खांड घृत कूपा।
अज्ञानी का संग न करना, ज्ञानी साथ निर्भय ह्वै रहना।
सत्त कर्म स्वर्ग का भोगा, असत कर्म नर्क का जोगा।
सत्त असत्त माया प्रकृति, इनसे परे ब्रह्म आ फुरती।
सो तो तुही ब्रह्म अविनासी, सर्व चराचर घट-घट बासी।

।। दोहा ।।

किसका तू सुमिरन करै, किसका जपता जाप।
जाको तू ढूंढत फिरै, सो तू आपे आप।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत बाल लीला वर्णनो नाम षष्टमोऽध्यायः।।६।।

।। दोहा ।।

दयारूप त्रिभुवन धनी, तुम समर्थ गुरुनाथ।
कृपा अपनी कीजियो, तुम्हें नवाऊं माथ।।

।। चौपाई ।।

सुमिरों नवो नाथ अविनासी, मंगल मूरति सिद्ध चौरासी।
जा सुमरे भव दुःख नसाऊं, अष्ट सिद्ध नौ निधि पर पाऊं।
मोपर कृपा करो गुरुराई, हृदय कमल खोलो सुखदाई।
निसिदिन गाऊं सुजस तुम्हारा, जासों उतरूं मैं भव पारा।
एक समय सिद्ध चौरंगी, आये बोहर ग्राम असंगी।
देखि भूमि उज्ज्वल सुधराई, बन जंगल शोभा सुखदाई।
कन्दमूल फल थे बहुतेरे, नाहर हिरण मयूर घनेरे।
जहं तह भरे तड़ाग अनूपा, निर्मल जल सीतल बहुकूपा।

।। दोहा ।।

देखि भूमि एकांत की, नहिं कोई बिघन बिकार।
शोभा सुन्दर निरख छबि, भये प्रसन्न अपार।।

।। चौपाई ।।

तब मन अपने कीन्ह बिचारा, है तप योग विपिन यह सारा।
द्वादस वर्ष यहां तप करूं, पारब्रह्म का ध्यान धरूं।

सिद्ध शिरोमणी नाथ चौरंगी, महा कठिन तप कीन्हा अंगी।
तब बल देखि देता मोहे, चरणकमल निसिबासर जोहे।
तेज प्रताप सुजस बिस्तारा, जाको गावत है संसारा।
सातों दीप फिरे नौखंडा, नाथ निरंजन सकल ब्रह्मण्डा।
मस्तनाथ गुरु रसते रामा, एक समय आये तेहि ठामा।
जहां तपै थे नाम चौरंगी, लखी भूमि उज्ज्वल अतिबंगी।

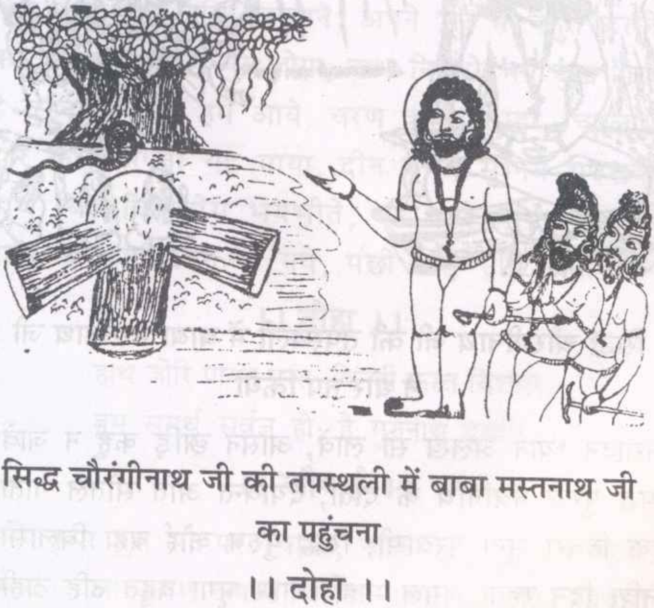

सिद्ध चौरंगीनाथ जी की तपस्थली में बाबा मस्तनाथ जी का पहुंचना

।। दोहा ।।

मस्तनाथ मन आपने, कीन्हा एक बिचार।
यहां तपूं कुछ काल मैं, धर्म हेत उपकार।।

।। चौपाई ।।

विधि संयुक्त लगावा धूना, भस्म अङ्ग छबि शोभित दूना।
कछुक दिवस तप करते बीते, तेज प्रताप जब भये उजीते।

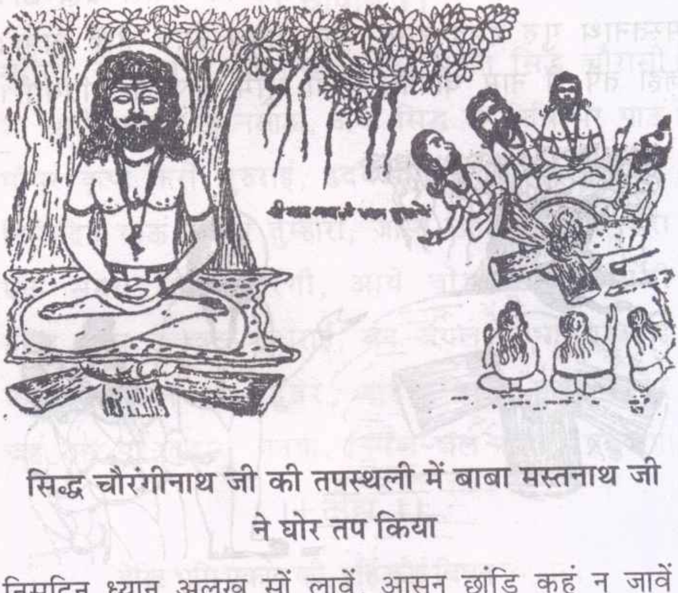

सिद्ध चौरंगीनाथ जी की तपस्थली में बाबा मस्तनाथ जी ने घोर तप किया

निसदिन ध्यान अलख सों लावें, आसन छांड़ि कहूं न जावें।
सिद्ध पुरुष नवनिधि के दाता, दयावन्त अति सीतल गाता।
एक दिवस सुना पुरवासी, सिद्ध पुरुष कोई ब्रह्म बिलासी।
निशि दिन रहता जंगल माहीं, नाहर मृगा बहुत उहि ठाहीं।
किस विधि चलिये योगी पासा, होय मनोरथ पूरण आसा।
बिपती निवारै सब दुख हरै, ऐसी गोष्टी नगरी करै।

।। दोहा ।।

पुरबासिन को साथ लै, गिरधर नम्बरदार।
आये योगी नाथ जहं, देखा चरित अपार।।

।। चौपाई ।।

नाहर बैठे आसन पासा, चरण कमल के मानो दासा।
मोर कपोत अति करैं किलोला, भांति-भांति के बोलैं बोला।
नगर लोग यह लखि घबराने, अपने मन में बहुत डराने।
करत पुकार सकल पुर लोगा, नाथ निवारो भये दुख रोगा।
हे गुरुनाथ शरण हम आये, चरण कमल तुम्हरे चितलाये।
दूरि करो अपनी यह माया, दीन बचन सुनिये गुरुराया।
नाथ बिलोकि लोग भयभीते, दूर करी माया मनहीते।
नाहर उठि-उठि बन के गये, पंछी उड़ि-उड़ि जात भये।

।। दोहा ।।

हाथ जोरि पायन परत, बिनती करत बिशाल।
तुम समर्थ सर्वज्ञ हो, हे गुरुनाथ दयाल।।

।। चौपाई ।।

करो कृपा तुम मो पर स्वामी, नाथ निरंजन अन्तरजामी।
तुम्हरी लीला अगम अपारा, बरणि सकत नहिं कोई बिचारा।
दीनबन्धु तुम नाथ कहाये, चरण शरण तुम्हारे हम आये।
सुरपति देव न जानो कोपे, देश माहिं जल वर्षा रोके।

नद्दी नाला पानी नाहीं, बिन जल खेती सूखी जाहीं।
ऐसी कृपा करो गुरु स्वामी, जासों जल वर्षैं सब ठामी।
संकट दु:ख हरो बहु भांती, सुख सों रहै प्रजा दिन राती।
निसदिन गुणयश तुम्हारो गावै, जो मनबांछित फल हम पावें।

।। दोहा ।।

पुरबासिन के बचन सुनि, कहत भये गुरुनाथ।
किस बिधि वर्षैं जल मही, यह सब सतगुरु हाथ।।

।। चौपाई ।।

पुण्य धर्म छांड़ि तुम दीन्हा, हिंसा पातक अंगी कीन्हा।
साधु बिप्र अरु गऊ दुखाये, ताते परजा दुख को पाये।
सुनत बचन पुरबासी बोले, हरिये कष्ट नाथ बम्भोले।
जैसा आप कहैंगे स्वामी, तैसा सकल करैं हम ग्रामी।
बोले नाथ अमृत की बानी, सुनो सकल ग्राम के प्रानी।
जो तुम चहो सकल दुख बिंसा, तौ तुम छांड़ो सबकी हिंसा।
दाया धर्म पुण्य नित नेमा, पालो सकल होयगी खेमा।
साधु बिप्र ओ कपिला देवा, निशिदिन इनकी करना सेवा।

।। दोहा ।।

दाया धर्म अहिंसता, भक्ति सहित उपदेशा।
दीन्हा सगरे ग्राम को, सतगुरु नाथ महेशा।

।। चौपाई ।।

लोगन सकल सुमति यह कीन्हा, सतगुरु सीख शीस धरि लीन्हा।
सबके मन में रुचि यह बाढ़ी, हिंसा सकल जीव की छांड़ी।
दाया धर्म भक्ति भगवाना, निशदिन करिहैं शक्तिप्रमाना।
साधु संत अपरम यह देवा, ताकी निशिदिन करिहैं सेवा।
ऐसे वचन कहैं सब लोगा, परमारथ के यह सब जोगा।
धन्य भाग हैं आज हमारे, जन्म सुफल करि पाये सारे।
दरशन दै कृतार्थ मोहिं कीना, चरण शरण अपने लै लीना।
अहो भाग्य जो दरशन पाये, कुशल निमित्त हमारे आये।

।। दोहा ।।

मुदित भये श्रीनाथ जब, सुनिके आरत बैन।
दीना आशीर्वाद तब, सदा करो सुख चैन।।

।। चौपाई ।।

श्रवण करो तुम सगरे लोगा, प्रातः समय जल वर्षा होगा।
जाहु सकल तुम निज-निज ठामा, निश्चय जानि करो विश्रामा।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर गावें, सिद्ध वचन विर्था नहिं जावें।
सुनि-सुनि वचन कुशल तब माना, शीश नवाय गये अस्थाना।
बार-बार सुमिरैं उपदेशा, जाना सबने नाथ महेशा।
सतगुरु नाथ निरंजन साईं, बाघ हिरण राखत यक ठाईं।
चरचा करत परस्पर लोगा, ऐसा फेरि परै ना जोगा।

।। दोहा ।।

तीनि पहर जब निशि गई, लागा चौथा याम।
गगन उठी तक बादली, निरखै सगरा ग्राम।।

।। चौपाई ।।

एक निमिष में अति सरसाये, नभ ऊपर बादल घिरि आये।
गगन घट छाई चहुं ओरा, उमड़ि घुमड़ि गरजै अति घोरा।
बिजुली चमकै निशि अंधियारी, गरजै होय महा भयकारी।
घटा देखि कुहकैं बन मोरा, होइ आनन्द बहुत चहुं ओरा।
होत प्रात जल बर्षन लागा, नगर लोग सब कोऊ जागा।
उठि-उठि देखैं गगन झकोरा, आनन्द उर उपजै चहुं ओरा।
मेघा बर्षैं बड़ि-बड़ि धारा, शीतल भूमि भई अपारा।
एक दिवस लों वर्षा पानी, पृथ्वी जल सों बहुत अघानी।

।। दोहा ।।

बर्ष्यो पानी बहुत सा, ताल खेत भये एक।
उमंगि-उमंगि सरिता चलीं, नाथ प्रताप अनेक।।

।। चौपाई ।।

जीव चराचर भये सुखारी, आनन्द जिनके उर अति भारी।
परचा पायो बोहर ग्रामा, पूर्ण भये जिनके सब कामा।
नाथ चरण की जै-जै कारी, बोलत सकल जात बलिहारी।
गिरधर बखता जाट सिरदारा, लै-लै भेंट चले तेहि बारा।
पान फूल फल लिये अनेका, दूध दही घृत सुन्दर येका।

दाख जुहारे मिसरी कंदा, गृह प्रति लिये सकल आनन्दा।
धूप दीप अरु लीन्हें चन्दन, बहुत प्रकार करैं गुरु बन्दन।
हर्षित चले सकल बहु भांती, बहुत ग्राम के भये संगाती।

।। दोहा ।।

शोभा ललित विशाल अति, कछु बर्णी नहिं जाय।
नाचत गावत प्रेम सों, नाथ चरण चितलाय।।

।। चौपाई ।।

नाथ समीप गये पुरवासी, धरी भेंट सन्दर सुखरासी।
द्वै कर जोरि चरण सिर नावें, चरण रेणु लै माथ लगावै।
भांति-भांति के सुमन चढ़ाये, पाय सुगन्ध भंवर चलि आये।
धूप दीप कपूर की बाती, जोत जलाये साजि बहु भांती।
करैं आरती बहु विधि सारी, बालक जवान वृद्ध नर नारी।
घंटा शंख नाद अति कीने, सतगुरु नाथ चरण लौ लीने।
प्रेम सहित आनन्द उर आनै, गुणजस कीरति बहुत बखानैं।
विनय सुनावें करि-करि न्यारी, चरणकमल की अति बलिहारी।

।। दोहा ।।

जै-जै कारी नाथ की, चहुं दिशि रही है पूर।
परमारथ के काज को, नाथ भये हैं सूर।।

।। चौपाई ।।

शीस नवाय हर्ष तेहि ठामा, आये बहुरि सकल निज ग्रामा।
तादिन से सब नर अरु नारी, दया धर्मयुत भये सुखारी।

अगम अपार संत की महिमा, वेद पुराण कहत सब कलिमा।
मस्तनाथ गोरक्ष जगदीशा, घट-घट व्यापक पूरण ईसा।
दयावन्त परम हितकारी, संकट दु:ख हरैं अति भारी।
जो कोइ सुमिरै एकौ बारा, तादिन सुख सों जात अपारा।
जो कोई सुमिरै दिन अरु राती, ताकी महिमा कही न जाती।
धन्य पुरुष जो निशदिन ध्यावें, बन्धन तोड़ि परमपद पावें।

।। दोहा ।।

गुरु चरण चित्त लायके, मन में मोद बढ़ाय।
लीला यह श्रीनाथ की, कही सकल समुझाय।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत मंगल ग्राम वर्णनो नाम सप्तमोऽध्याय:।।७।।

।। दोहा ।।

श्री गुरु चरण सरोज रज, है मेरे सिरताज।
जिनकी करुणा दृष्टि सों, सुफल होत सब काज।।

।। चौपाई ।।

एक समय श्री नाथ निरंजन, श्रीमस्तनाथ सागर दुख भंजन।
विचरत-विचरत गुरु दयाला, आये एक ग्राम तत्काला।

तहां रहा यक सुन्दर बागा, शोभा ललित सहित अनुरागा।
भांति-भांति के वृक्ष सुहावन, फल अरुफूल सहित सुखपावन।
बहु प्रकार के पंक्षी डोलें, तरुवर बैठि परस्पर बोलैं।
फूले फूल अनेक प्रकारा, भंवर वासना लेत अपारा।
भरे तड़ाग तीर्थ जल चंगा, निर्मल घाट बने बहुरंगा।
जल बिच कमल-कमल बिच कलियां, फूलीं सकल भंवर उरछालियां।

।। दोहा ।।

शोभा छवि अति देखि के, श्रीमस्तनाथ कृपाल।
अपने मन यह कही, यहां रहूं कुछ काल।।

।। चौपाई ।।

बैठे एक वृक्ष तर जाई, शीतल पवन चलै सुखदाई।
घर-घर खबरि जब भई तुरन्ता, योगी आयो कोई गुणवन्ता।
चलो सकल मिलि चलिये तीरा, करी सलाह बहुत पुर धीरा।
आये लोग दरश के ताईं, करि आदेश बैठी तेहि टाईं।
बहु प्रकार की भेंट दिखाई, हाथ जोरि के विनय सुनाई।
हे गुरु तुम तो बड़े दयाला, जो मोहिं दरशन दियो विशाला।
आज पुनीत भयो पुर मेरा, चरण कमल आये गुरु केरा।
जैसा हुकम होय गुरु स्वामी, तैसा सकल करैं पुरगामी।

।। दोहा ।।

खबर भई चहुं और जब, आये हैं गुरु नाथ।
चहुं दिशि धाये लोग सब, आनि नवायउ माथ।।

।। चौपाई ।।

अबला एक ग्राम के माहीं, रहत रही जो नित ओहि ठाही।
परबस दीन दुखी गति जाकी, रहै अपंग अनाथ सदा की।
ताने सुनी नगर मुख बानी, सिद्ध शिरोमणि आये ज्ञानी।
उपजी भक्ति बहुत उर गाढ़ी, दरशन की अभिलाषा बाढ़ी।
करत बिचार अधिक उर आसा, केहिविधि जाऊं सिद्ध के पासा।
मैं तो अपंग जाति की नारी, कुलकी हीन अनाथ भिखारी।
चलि नहिं सकों एक पग आगे, कौन उपाय करूं दुख लागे।
बार-बार सुमिरै गुरुनाथा, द्वै कर जोरि नवावै माथा।

।। दोहा ।।

कृपा करो गुरुनाथ जी, दीन दुखी मोहिं जान।
दीजो दरशन बेगि तुम, तीन लोक भगवान।।

।। चौपाई ।।

करि बिचार मन में बहुतेरा, चलत भई गृह सों तेही बेरा।
अति दुख पावे मारग माहीं, कंटक पांयन चुभि-चुभि जाही।
चलत-चलत जब थकि-थकि जावै, बैठि जाय मारग जहं भावै।
पुनि-पुनि चलत जुगत करि नाना, घसिट-घसिट पगदश परमाना।
बालक ज्वान बृद्ध बहुतेरे, देखि-देखि के हंसत घनेरे।
ठट्ठा करत परस्पर माहीं, अज्ञानी मूरख बनि जाहीं।
कहैं लोग सुन ग्राम की नारी, क्यों दुख सहत जानिके भारी।
लेन कहा तैं जात अपंगी, जाओ लौट गृह को भिखमंगी।

।। दोहा ।।

कहत अपंगी विहंस के, सुनो सकल तुम लोग।
कर्म लिखी मेरे यही, सो मैं भोगूं भोग।।

।। चौपाई ।।

हैं गुरुनाथ कृपाल बिशाला, तिनके दरशन को तत्काला।
गृह सों जाऊं बहुत करि आसा, तेरे मन में दृढ़ बिश्वासा।
सिद्ध पुरुष त्रिभुवन के स्वामी, सब दुख हरि हैं अंतरजामी।
बिन दरशन गृहको नहिं जाऊं, सत्य-सत्य मैं तुम्हें बताऊं।
एता कहि कर चली अपंगी, घसिट-घसिट दुख पाय कुरंगी।
बालक देखि करैं कुटयारी, हंसैं सकल मिलि दै-दै तारी।
मारग रोकैं बारम्बारा, बाल तमासा जानत सारा।
बालक समुझि मौन ह्वै जाई, अति दुख सहै अपंग लुगाई।

।। दोहा ।।

जहां रहे श्रीनाथ जी, करूणासिंधु उदार।
तहां पहुंची जाय के, करि परिश्रम अपार।।

।। चौपाई ।।

पुरबारी लखि कर अपंगी, बैठी आन तहां भिखमंगी।
बोले लोग सकल करि हांसी, भागु-भागु अबला पुरबासी।
तू तौ अबला जाति की नारी, लेन कहा उरमाहिं बिचारी।
ये तो नागा हैं निर्बानी, रूप डिगम्बर जिनका मानी।

हाथ जोर तब बोलन लागी, मैं तो नारी जाति अभागी।
दरशन कारण अति अधिकाई, बहुत कष्ट सों मैं चलि आई।
तुम क्यों बरजत अपजस लेऊ, दरशन करन मोहिं अब देऊ।
ये तो नाथ अनाथन केरे, सब दुख हरैंगे छिनमें मेरे।

।। दोहा ।।

सुनत बचन श्रीनाथ जब, कहत भये हर्षाये।
योगी मानो बचन यक, तुमसो कहूं सुनाय।।

।। चौपाई ।।

जैसे कूबर कुबिजा बासा, श्री कृष्ण ने जाय निकासा।
तैसे तुमहूं जाय निकासो, लात मारि के लुंक बिनासो।
योगी सुनत बचन गुरु केरा, गया पास हर्षित तेहि बेरा।
मारयो पग हर्षित कटि ऊपर, कह्यो भागु तै अवला सूघर।
सुनन वचन उठिके तब भागी, हर्षि-हर्षि निरखन तन लागी।
गुरु ने दीन्ही सुन्दर काया, कुबरा लुंजा दूर बहाया।
हर्षि-हर्षि मन मोद बढ़ावै, जैसे निर्धन धन कोउ पावै।
बलि-बलि जाय चरण गुरुनाथा, बारम्बार नवावै माथा।

।। दोहा ।।

धन-धन मेरे भाग हैं, जो बहुरे सुख नाथ।
नूतन पाया जन्म मैं, कृपा करी गुरुनाथ।।

।। चौपाई ।।

सुनि-सुनि लोग नगर के धाये, अबला के गृह देखन आये।
सुन्दर काया रूप विशाला, देखि-देखि सब होय निहाला।

एते दिवस महा दुख पाये, अब गुरु ताकों सुदिन दिखाये।
रहै अपंग जन्म की रानी, महा कुरूप भयानक भारी।
नूतन जन्म फेरि तें पाया, नाथ प्रताप कुरूप बहाया।
छूटि गये दुख बन्धन सारे, भई सुखी धन भाग तिहारे।
घर-घर चरचा होत घनेरा, सुयश बखानत सब गुरु केरा।
अति कृपालु हैं दीन दयाला, सर्व चराचर के प्रतिपाला।

।। दोहा ।।

श्री मस्तनाथ सतगुरु सदा, राखत जन की लाज।
जग में बिचरत फिरत नित, परमारथ के काज।।

।। चौपाई ।।

निर्भय सुत नाथू का होई, बोहर ग्राम रहै नित सोई।
जाति ब्राह्मण कुल परवीना, भक्तिवान पर लोचन हीना।
ताके पास नगर पुर लोगा, जाय सुनायो यह सब जोगा।
सीऊ आओ हर्ष समेता, मस्तनाथ ढिंग लोचन हेता।
दोउ कर जोरि चरण शिरनायो, बहु प्रकार की बिनय सुनायो।
बोले बचन कर्म जानि के सेवा, भये प्रसन्न नाथ गुरुदेवा।
मन बचन सकल दुख मोचन, तुम्हें बिप्र हम दीने लोचन।
एती कह कर दई विभूती, लीन्ही विप्र जानि अवधूती।

।। दोहा ।।

विप्र विभूति हाथ लै, तुरतै दई लगाय।
दोउ नैन मंजन किया, श्रद्धा सों हर्षांय।।

।। चौपाई ।।

निर्मल नेत्र औ निर्मल जोती, लगत बिभूत प्रगट तब होती।
गया विकार नैन अंधियारा, भया उजीता चहुंदिशिसारा।
देखन लगा वस्तु बहुभांती, निर्मलता कुछ कही न जाती।
बारम्बार चरण शिरनाये, गुरु प्रताप हम लोचन पाये।
अस्तुति कीन्ही विविध प्रकारा, आनन्द उपज्यो अतिबिस्तारा।
नगर लोग सब अचरज माना, श्रीगोरक्ष गुरु सिद्ध जाना।
जै-जै कार शब्द परवीना, लोग नगर के अस्तुति कीना।
गुरु महातम अधिक बखाना, निशिदिन गावें वेद पुराना।

।। दोहा ।।

श्री मस्तनाथ गुरुदेव जू, बसो सदा उरमाहिं।
तुम पालक जन दास के, दुजो कोऊ नाहिं।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत अपंगी बिलास वर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः।।८।।

।। दोहा ।।

सतगुरु मेरा स्वामियां, मैं सतगुरु का दास।
जिनके बचन बिलास सों, होत भरमना नाश।।

।। चौपाई ।।

एक समय की औरहु बाता, सुनौ सकल सज्जन सुखराता।
चरित एक मैं कहूं पियारा, मन को मोद बढ़ावन हारा।
जाके सुने बहुत सुख पावे, बिघन कलेश दूरि ह्वै जावे।
एक समय गुरुदेव शिरोमणि, भक्त जनन के उर अतिभूषण।
शिष्य अनेक संग थे जिनके, शुभगुण सुन्दर अंकिततिनके।
अज्ञाबस नित रहैं समीपा, चतुर आदि ज्ञान के दीपा।
विचरत-विचरत नाथ निरंजन, अगम अगोचर सब दुख भंजन।
पहुँचे जाय एक बनखण्डा, देखे तहां जीव परचण्डा।

।। दोहा ।।

हिरण मयूर कपोतहू, औरहु बहुत अनूप।
नाहर चीता भेड़िया, रहें भयानक रूप।।

।। चौपाई ।।

परबत ऐसा ऊंचा टीबा, तहां रहा यक बहुत करीबा।
बड़-बड़ बिपट जुगन के मानो, ऊंच से ऊंच अधिक पहिचानो।
बृक्ष घने अरु लता सुहावन, फूले-फूल अधिक सुखपावन।
झाड़ी बिकट लगी हैं जामें, जीव जन्तु सब बिचरैं तामें।

छाई अधिक सकल बनशोभा, निरखि-निरखि तहं मुनिजन लोभा।
आगे-आगे गुरु दयाला, देव निरंजन थे प्रतिपाला।
पाछे-पाछे शिष्य अनेका, रहे जात तहं परम बिवेका।
जटा जूट अरु भस्म लगाये, कालहु देखि जिन्हैं डर जाये।

।। दोहा ।।

श्रीमस्तनाथ गुरुदेव जू, तेहि औसर तत्काल।
लगे हंसन यक बारगी, कौतुक सुमिरि बिशाल।।

।। चौपाई ।।

इत उत शिष्य लगे तब देखन, आगे पीछे बहुत बिलोकन।
काधों देखा आज सुहावन, जो गुरुदेव हंसे हैं या बन।
शिष्य सकल मन अचरज माना, जानि पड़ा ना भेद सुजाना।
बहुत काल जब संग में बीते, रहे सकल गुरुदेव सहीते।
बिहंस गुरु को कधी न देखा, देश विदेश सबी उर लेखा।
सबके मन अति संशय बाढ़ा, काधौं कौतुक कीन्हा गाढ़ा।
कारण आजु कवन गुरुदेवा, देख हंसे कुछ कौतुक भेवा।
पूंछा चहिये भेद खुलासा, गुरु दयाल निरंजन पासा।

।। दोहा ।।

सकल शिष्य तब जायके, हाथ जोरि शिरनाय।
कहत भये गुरुदेव सों, यह विधि विनय सुनाय।।

।। चौपाई ।।

हे गुरुनाथ निरंजन स्वामी, देव अनादि अन्तरजामि।
लीला कारण या जग माहीं, विचरत फिरत कछू भय नाहीं।
सुनि-सुनि लीला चरित अपारा, सुखी होत है सब संसारा।
सोई लीला यह सुखदाई, पूछौं चरण कमल चितलाई।
बहुत काल तक हे गुरुराया, रहे संग हम अति सुख पाया।
शुभ अरु अशुभ देख सुखरासी, कधी न आई तुमको हांसी।
आज कौन सा कौतुक कीना, या बन मध्ये आप प्रवीना।
सो अब करुणा मो पर कीजै, कारण सकल नाथ कहि दीजै।

।। दोहा ।।

सुनत बचन यहि भांति जब, बोले करुणा ऐन।
तुकौक एक विशाल तुम, सुनहु सकल सिधबैन।।

।। चौपाई ।।

एक समय की बात बताऊं, यथा उचित कहि तुम्हैं सुनाऊं।
शोभित सुन्दर अतिप्रिय ग्रामा, बहुत बखाना था यह ठामा।
चारि बरण के मनुज पुनीता, बसत रहे सब धर्म सहीता।
कूप तड़ाग अनेक प्रकारा, निर्मल जल जिनमें था सारा।
बहुत प्रकार देव अस्थाना, जिनकी ध्वजा लगी असमाना।
रहै बिचित्र सजे बहु भांती, जिनकी शोभा कही न जाती।
वेद पुराण शास्त्र गुण सागर, पंडित ज्ञाता थे जहं आगर।
बहु प्रकार के रहे पदारथ, घर-घर जिनके थे परमारथ।

।। दोहा ।।

गति करतार अपार है, सागर बूंद समाय।
धर्म कीरती है बड़ी, बिन पंखन उड़िजाय।।

।। चौपाई ।।

याही ठौर सहित परिवारा, बसतरहा यक जात कुम्हारा।
ताके गृह से एक लुगाई, करकस रही बहौत दुखदाई।
उष्ण नीर सों नारि गमारा, धोवन चहा बसन यक बारा।
काली हांडी में जल भरिके, अग्नि जलाई चूल्हे धरिके।
लगी करन जल तप्त लुगाई, चूल्हे निकट बैठि अधिकाई।
तेहि औसर यक योगी सन्ता, आयो नगर माहिं बुधिवन्ता।
हांडी मांगन सन्त विचारा, पूंछत-पूंछत गया दुवारा।
देखा बैठी एक लुगाई, तासों जाय कहा हे माई।

।। दोहा ।।

हम योगी रमते रहैं, सुन तू मेरी माय।
हांडी दीजौ मोहिं यक, करूं रसोई जाय।।

।। चौपाई ।।

सुनिके बचन करकसा नारी, बोली नाहिं कछू तेहि बारी।
फेरि कह्यो योगी सिरदारा, हम चलि आये तेरे द्वारा।
हांडी मोंको दीजौ माई, तू तो जात कुम्हार कहाई।
येती सुनिके नारि करकसा, भई अग्नि सम जाकी दसा।

चूल्हे पर की काली हंडी, उष्ण नीर की रही कुभंडी।
गहि निज करसों योगी ओरा, मारन को फेंकी अति जोरा।
मुख सों बोली नारि कुभंडी, लेते जाओ हमारी हंडी।
योगी गया बचाय तुरंता, फूटी हंडी भई अनंता।

।। दोहा ।।

भिखमंगे नंगे सदा, निलज कुजात गमार।
ना जाने केहि देश के, कंगले आये द्वार।।

।। चौपाई ।।

करकस बैन सुनावन लागी, नारि कुभंडी जन्म अभागी।
सुनिके योगी दूसर ठामा, गया तुरत जहं पुरवत कामा।
कहं गये वै मन्दिर सूंचे, जिनकी ध्वजा फरहर ऊंचे।
नगर उजार भया बनखंडा, अब बिचारत हैं जीव प्रचंडा।
ताहि देख मोहिं अचरज आया, कारण सगरा तुम्हें सुनाया।
सुनिके शिष्य अचम्भा मानी, कौन जुगन की बात बखानी।
चरचा करत परस्पर माहीं, गुरु चरणन पर बलि-बलि जाहीं।

।। दोहा ।।

अनन्त रूप परमात्मा, लखि नहिं पावे कोय।
श्रीमस्तनाथ के नाम सों, गोरक्ष याही होय।।

।। चौपाई ।।

शिष्य सकल तब मन में जाना, गोरक्ष गुरु आज पहिचाना।
बार-बार गुरु मूरति देखैं, निरखि-निरखि छबि हिरदै लेखैं।

अनन्त जुगन के हैं यह स्वामी, अलख निरंजन अन्तरजामी।
इच्छा रूप धरैं छिन माहीं, इनसे दुर्लभ है कुछ नाहीं।
योगी मुरति जगत बखानी, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर जानी।
जिन प्रताप भव सागर सारा, अनन्त कोट सिद्ध भय पारा।
अपनी लीला करिवे कारण, सगुण रूप किया है धारण।
निर्गुण सों घट-घट में व्यापक, नाथ निरंजन आयुस भावक।

।। दोहा ।।

दुतिया छांड़ो भरमना, तजके सकल विचार।
ब्रह्म भावना दृढ़ करो, जासों उतरो पार।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत नवमोऽध्यायः।।९।।

।। दोहा ।।

श्री मस्तनाथ परमात्मा, पुरुषोत्तम जगदीश।
अलख अनादी सकल घट, पूर्ण बिस्वाबीस।।

।। चौपाई ।।

पुर भालोट देश हरियाना, सुन्दर शोभित अधिक बखाना।
श्रद्धावान लोग बहुतेरे, सबी बरण के बसैं घनेरे।

सज्जन एक शीलका नामी, जाट कौम का रहा सकामी।
भक्तीवान नेम का पूरा, साधु सन्त चरणन का पूरा।
एक समै पर श्रवण ये कीना, मस्तनाथ कोई सिद्ध प्रवीना।
कोट खोखरा जंगल माहीं, धूनी सहित रहत एक ठाहीं।
कीरतिवान परम सुखदाई, जिनकी जग में होत बड़ाई।
एक समै दरशन के ताईं, हर्षित चला बहुत मनमाईं।

।। दोहा ।।

हर के भक्त अनेक हैं, संत भक्त कोई एक।
जो जानत या मरम को, पावत सोई विवेक।

।। चौपाई ।।

हाथ में लिए दूध का लोटा, आया जहां खोखरा कोटा।
ढूंढन लगा नाथ का धूना, जंगल बिपिन रहा जहं जूना।
एक वृक्ष तर बैठे देखा, जाय कियो आदेश अलेखा।
चरण कमल पर शीश नवायो, हाथ जोरिके विनय सुनायो।
सतगुरु नाथ जानि मन माही, अस्तुती करी बहुत तेहि ठाहीं।
पूछा सतगुरु नाथ निरंजन, लेन कहा तैं आयो सज्जन।
सिंह आदि जीव अति दारुन, बिचरत रहत रैन दिन याबन।
सुनत बचन अति हिय हर्षाया, सेवक ने सब हाल सुनाया।

।। दोहा ।।

नाम हमारा शीलका, कौम हमारी जाट।
भालोट नगर स्थान है, अर्द्ध पहर की बाट।।

।। चौपाई ।।

मैं तो सेवक दास तुम्हारा, दरशन खातिर आज सिधारा।
दीन बचन जब बहुत सुनाये, नाथ निरंजन के मन भाये।
आया लेकर गृह को गया, हाल हकीकत कहता भया।
साधु संत देखे बहु भेषा, पर अस सिद्ध कधी ना देखा।
सतगुरु चरण नेह जब बाढ़ा, तक तो नेम किया एक गाढ़ा।
नित प्रति दूध प्रात लै जावै, करिकै दरशन फिर गृह आवै।
कछुक दिवस ऐसे जब बीते, कह्यो एक दिन गुरु पुनीते।
सुनो शीलका बात हमारी, तुमसों कहूं सकल हितकारी।

।। दोहा ।।

नित प्रति दूध न लाओ तुम, तुमसों कहूं बिचार।
सिंह आदि का भय बहुत, या बन माहिं अपार।।

।। चौपाई ।।

दूरि ग्राम से तुम मत आवो, मारग से दुख नाहक पावो।
हाट बाट सब में चहुं ओरा, फिरत रहत नित ठगअरुचोरा।
शस्त्र वस्त्र कोऊ हरि लेगा, भय दुख तुमको नाहक देगा।
सुनिके बोला बचन करारी, क्या कर सकै चोर भयकारी।
द्वै या तीन चार तक मेरा, करि नहिं सके कोऊ बलकेरा।
मेरे मन में दृढ़ अभिलाखा, नेम नित्त दरशन का राखा।
तब मन में गुरुनाथ बिचारा, लेऊं परीक्षा मैं यक बारा।
कैसा भक्त नेम दृढ़ देखूं, बल पौरुष मैं याको लेखूं।

।। दोहा ।।

तीन लोक चौदह भुवन, सृष्टी को परमान।
करता भरता नाथहि, जानत सकल जहान।।

।। चौपाई ।।

एक दिवस दरशन मध्याना, करिके चला बेगि स्थाना।
अर्द्ध दूरि जब गृह रह गया, मारग में तब बैठत भया।
एक पुरुष को आवत देखा, मारग माहीं चोर परेखा।
अस्त शस्त्र लीन्हें बहुत भांती, महा भयानक रूप सजाती।
देखि शीलका बहुत डराना, है ठग कोऊ मन में जाना।
वस्त्र शस्त्र छीन यह लेगा, मेरा बस कुछ नाहिं चलेगा।
जब वह पुरुष सनमुख आया, देखि शीलका अति भय पाया।
करत विचार अधिक मन माहीं, आज उबार नाहिं यही ठाहीं।

।। दोहा ।।

मारग रोका आन के, कहत भया ललकार।
वस्त्र शस्त्र धरिदे सकल, जो कुशल चहो यह बार।।

।। चौपाई ।।

सुनत शीलका अति घबराना, देख्यो पुरुष बहुत बलवाना।
वस्त्र शस्त्र मोटे अरु छीने, मारे भय के सब धर दीने।
तन पर वस्त्र एक नहिं राखा, भयो अमंगल पशुवत साखा।
वस्त्र शस्त्र ले गया बटोही, पुरुष रहा बहुत निरमोही।

रूप शीलका धर लीना, पहुंचा तुरत सदन परवीना।
वस्त्र शस्त्र यक कोठे माहीं, जहां शीलका रहै सदाहीं।
धरि दीना सब ही गुणवन्ता, माता देखा जात तुरन्ता।
माता जाना पुत्र हमारा, धरिके वस्त्र गयो है द्वारा।

।। दोहा ।।

यह माया परबल बड़ी, कुमति अविद्या होय।
अलख अनादि आप ही, लखि नहिं पावे काये।।

।। चौपाई ।।

वस्त्र हीन जग भयो शीलका, करत विचार बहुत मन धीरका।
किस विधि मैं गृह को अब जाऊं, मुखड़ा कैसे जाय दिखाऊं।
नंगा बदन वस्त्र ना कोई, लाज शरम मोकों अति होई।
मैंने कीना गर्व विशाला, ताको फल पायो ततकाला।
सो अब मोकों उचित ये ही, सन्ध्या समय जाऊं बन से ही।
रात्रि समय देखौ ना कोऊ, नंगा उघरा चाहो होऊ।
करि विचार मन में बहुतेरा, बैठी गया छिपिके तेहि बेरा।
रात्रि समय पर घर को गया, द्वार बैठी के कहता भया।

।। दोहा ।।

माता तुम तो धर्म की, मैं हूं पुत्र तुम्हार।।
दीजो वस्त्र आनि यक, नंगा मोहिं विचार।।

।। चौपाई ।।

माता जान्यो द्वारा अनीता, मांगत है एक वस्त्र पुनीता।
लोग लुगाई देखन आये, द्वार शीलका को तब पाये।
ठट्ठा मार हँसे सब लोगा, कहां से लाये यह तुम जोगा।
कैसा स्वांग बनाया नीका, नाटक लीला बहुतै सीखा।
देखि शीलका अति शरमाया, लोगन जाना स्वांग बनाया।
माता वस्त्र आनि के दीना, पाय शीलका तन ढक लीना।
तब तो तुरत गया गृह माहीं, बोला बचन जाय तेहि ठाहीं।
मारग का सब हाल सुनाया, सुनिके लोग बहुत हर्षाया।

।। दोहा ।।

माता बोली पुत्र से, क्या तुम खाई भंग।
अमल चढ़ा है बहुत सा, हो गये उघरे अंग।।

।। चौपाई ।।

वस्त्र शस्त्र ले गृह को आया, धरते मैंने तुमको पाया।
गये द्वार तुरतै मैं देखा, अब यह आनि सुनायो लेखा।
वस्त्र सकल तब माता लीना, सनमुख आय तुरत धरि दीना।
देखि शीलका अचरज माना, नाथ चरित्र तब सकल बखाना।
प्रात गया दरशन के ताहीं, कोट खोखरा के बन माहीं।
हर्षि-हर्षि मन में बहुतेरा, हाल सुनायो मारग केरा।
गुरु के वचन सत्य करि जान्यो, उपजी प्रीति चरण चित्त आन्यो।
रहा गर्व जो कुछ मन माहीं, सो सब छूटि गया छिन माहीं।

।। दोहा ।।

तीन लोक चौदह भुवन, तुम समर्थ गुरुनाथ।
कृपा आपनी कीजियो, मों ऊपर सुख साथ।।

।। चौपाई ।।

एक दिवस गृह को जब आया, मन अपने संकल्प उठाया।
एक रात्रि में गुरु के पासा, रहिके देखूं चरित खुलासा।
कै हैं सोवत कै हैं जागत, कौन भांति सों रैन बितावत।
होत प्रभात दूध लै साथा, गया तुरत जहं थे श्रीनाथा।
दिन भर रहा गुरु के तीरा, सेवा टहल जानि गंभीरा।
दिनकर अस्त होन जब लागे, नाथ बुलाय कहा तब आगे।
गृह को जाउ बेगि तुम अपने, यहां रहो मत मानो बचने।
हम फकीर जंगल के बासी, तुम गृहस्त पुरमांझ विलासी।

।। दोहा ।।

बचन मान गुरुनाथ का, गवन कियो हर्षाये।
कछुक दूरि आगे गया, फिर तो जात लुकाय।।

।। चौपाई ।।

करत विचार अनेक प्रकारा, आज बिलोकूँ चरित अपारा।
तरुवर ओट बैठि अधिकाई, अर्द्ध रात्रि तहं देत बिताई।
गुरुनाथ तब मन में जानी, जुगुल पहर रैन अब आनी।
देव सभा का समय जो आया, चलना चहिये औसर पाया।

धूनी छांडि गये बन माहीं, जंगल ललित रहा जेहि ठाहीं।
पीछे-पीछे गया शीलका, तरुवर देखा यक करील का।
ता ऊपर चढ़ि बैठि अकेला, निरखन लागा त्यागि झमेला।
कुछ डरपै कुछ सोच बढ़ावे, हर्षि-हर्षि कुछ आनन्द पावे।

।। दोहा ।।

बैठे-बैठे दूरि सों, देखन लगा चरित्र।
जो कुछ लीला देव की, होन लगी पवित्र।

।। चौपाई ।।

चन्द्र भुवन जैसे सुखकारी, फूलि रही मानो फुलवारी।
चमकैं लाल होय उजियारा, दूरि भया सब निशि अंधियारा।
नृत्य अपसरा होवन लागा, साज समाज सहित अनुरागा।
देव सभा सुन्दर सुखदाई, कवि जन से बरणी ना जाई।
पुष्प माल सबके उर राजै, शीस मुकट जिनके छवि छाजै।
लाल सेत अरु पीत पीताम्बर, जिनके सौहैं दिव्य मनोहर।
केसर चन्दन तिलक लगाये, कंचन सम काया झलकाये।
तेजवान देवता सारे, बैठे सभा बीच बलकारे।

।। दोहा ।।

सिद्ध चौरासी नाथ तो, सकल गुणन की खान।
बैठे देखो शीलका, देवा कीरतिवान।।

।। चौपाई ।।

अर्द्ध रात्रि जब दुर गई पावन, बन्द भई तब सभा सुहावन।
सबसे पहिले छिपकर भागा, इत उत बहुत निहारन लागा।
कछुक दूरि जब आगे गया, धूनी ऊपर देखात भया।
बैठे हैं गुरु आसन मारे, देखो जिनके अचरज सारे।
सभी मांझ छांडि के आया, अब मैं देखत हूं गुरुराया।
सबसों आगे सिरी समाजे, धूनी ऊपर आन बिराजे।
देख सभा की सुन्दर शोभा, देखि-देखि बहुतै मन लोभा।
यह कोऊ सिद्ध देवता होई, जाको भेद न पावत कोई।।

।। दोहा ।।

प्रात होत हर्षित भयो, गया गुरु के पास।
हाथ जोड़ पांयन परा, स्तुति करी प्रकाश।।

।। चौपाई ।।

नाथ कहा सुन भक्त हमारे, तुमसे कहूं वचन उजियारे।
पीर फकीर मौज में रहते, बेपरवाह कछू नहिं चहते।
आगा पीछा साधू केरा, लेन चही ना कोऊ बेरा।
तब तो अपने मन अनुमाना, जान लिया है गुरु सुजाना।
सन्ध्या समय गया गृह माहीं, गृह में चित्त लगा कुछ नाहीं।
गृह के सब ही लोग बुलाये, देव सभा के हाल सुनाये।
अचरज सबके मन में आया, धन्य भाग जो देखन आया।
ऐसा सिद्ध कधी ना पावे, जो भव से जन पार लगावे।

।। दोहा ।।

गृह स्त्री जंजाल है, महा दुखन की खान।
सुख तो जावे हैं नहीं, किंचित हूं परमान।।

।। चौपाई ।।

यह जग नाशवंत है सारा, काम न आवै कुल परिवारा।
कोई पदारथ थिर नहीं देखा, असत सदा चल रूपहि लेखा।
बैल की नाई तन भटकाया, जन्म अकारथ खोय बहाया।
परमारथ की राह न जानी, औघट घाट परे हैं प्रानी।
ताते हमको उचित अपारा, सतगुरु शरण जाऊं यक बारा।
सन्त सदा रहते सुख माहीं, तिनको किंचित भय दुख नाहीं।
विषय भोग करम है नीचा, तासों अपने मन को खींचा।
बेराग चढ़ा जब बहुत घनेरा, भया बिरस भोग तन केरा।

।। दोहा ।।

दारा सुत परिवार युत, दृढ़ करके बैराग।
मस्तनाथ ढिंग जात भे, गृहस्ती को त्याग।।

।। चौपाई ।।

कहा शीलका तुम गुरु मेरे, हम हैं चरण कमल के चेरे।
अब हम आये शरण तुम्हारे, तुम गुरु संकट काटन हारे।
चेला करलो मुझको अपना, कुटुम्ब सहित सेवा में रखना।
तुम सों सिद्ध और नहिं पाये, चरण कमल शरणागत आये।

करो मनोरथ पूरण सारे, तुम समर्थ गुरुदेव हमारे।
पूंछा नाथ कौन दुख तोको, सत्य-सत्य भाखो तुम मोको।
कठिन फकीरी दुरलभ योगा, तन मन सबको मारन होगा।
तासों जाहु लौट गृह अपने, गृह में बैठी भजन दृढ़ करने।

।। दोहा ।।

हे गुरुवर जो मोहिं मत, मो मन कछू न खोट।
तन मन धन अरपन किया, चरणकमल की ओट।।

।। चौपाई ।।

नाथ कहा तेहि परचा लागा, जासों उपजा तन बैरागा।
किया शिष्य मन जानि अभेवा, विधि पूर्वक सबको गुरुदेवा।
शीलनाथ नाम धर दीना, कृपा करी गुरुदेव प्रवीना।
मिरचनाथ पुत्र का नामा, दीना धरके अति सुख धामा।
और योगनी योगी बहुतक, किये शिष्य चरणन के सादक।
शीलनाथ योगी सरनामी, भया प्रसिद्ध बहुत निसकामी।
जिनका सुजस आज यों छाया, परमारथ में नाम बढ़ाया।
गुरु प्रताप बंस को तारा, जाको जानत जग संसारा।

।। दोहा ।।

ॐकार को खोजि के, सोहं जप के जाप।
कोटिन सिद्ध परसिद्ध भये, श्रीमस्तनाथ परताप।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत देव सभा वर्णनो नाम दशमोऽध्यायः।।१०।।

।। दोहा ।।

सतगुरु बिनती मैं करूं, चरण कमल चितलाय।
चरण रेणुका शीस धरि, भक्त मुक्त फलपाय।।

।। चौपाई ।।

नाथ चरित्र सकल सुख पावन, शोक रोग भय दुःख नसावन।
जाके सुने परम रुचि बाढ़े, विषय भोग से मन को काढ़े।
भक्तजन के उर अति प्यारा, आनन्द मोद बढ़ावन हारा।
नाथ कृपालु निरंजन देवा, जिनकी मुनिजन करत हैं सेवा।
खोखर बन जो रहा बिशाला, तामें बास किया कुछ काला।
जोगराज शिष्य आधीना, मस्तनाथ का रहा प्रबीना।
निशिदिन रहै गुरु के तीरा, चरण कमल सुख जान गंभीरा।
सेवा टहल बन्दगी माही, राखौ रुचि यक दूजी नाहीं।

।। दोहा ।।

औसर पाये एक दिन, सेवा बिच हर्षाय।
कहत भया कर जोरि के, चरण कमल चितलाय।।

।। चौपाई ।।

तुम स्वामी गुरुदेव हमारे, आवागमन निवारण हारे।
जो कोई शरण तुम्हारे आया, मनवांछित फल तुमसे पाया।
लूले लंगड़े गूंगे बहरे, तिनके दुःख हरे तुम गहरे।
कुष्टिन को दी सुन्दर काया, अंधे लोचन अद्भुत पाया।
दूध पूत अरु सकल पदारथ, तुम गुरु दीने करि परमारथ।

मुरदा मरे जियाये बहुतक, जानत सकल जिला यकरोतक।
और कहां लग करूं बखाना, तुमको जानत सकल जहाना।
भक्तजनन के तुम सुखदायक, अंतरजामी हो सब लायक।

।। दोहा ।।

राखत जनकी टेक को, सेवक अपनो जान।
जो कोई आवत शरण बिच, देत अभय पद दान।।

।। चौपाई ।।

गोपीचन्द भरथरी राजा, अजर अमर भय पूरण काजा।
जिनकी कीरति महिमा सारी, सुनिवे मां मोहिं आवत भारी।
राज छांड़ि के करी फकीरी, नीकी लागी नाहिं अमीरी।
तिनके दरशन मैं नहिं पाया, हे गुरुनाथ निरंजन राया।
मैं अभिलाषा बहुत मन राखी, सत्य-सत्य सोइ तुमसे भाखी।
दया दृष्टि सों यहां बुलाओ, दरशन उनका मोहिं कराओ।
तुम समर्थ हो जगपति देवा, जानत हो तुम सबका भेवा।
करो मनोरथ पूरण मेरा, मैं हूं दास चरण का चेरा।

।। दोहा ।।

शिष्य बचन गुरुदेव सुनि, बोले करुणा ऐन।
दरस कराऊं प्रात को, निश्चय राखो बैन।।

।। चौपाई ।।

होत प्रात सब कोई जागे, जहं तहं पंछी बोलन लागे।
उदये भान उदयाचल माहीं, परी किरण जलथल सब ठाहीं।

मूरति मधुरी रूप अनुपा, सिद्ध योगेश्वर दोऊ भूपा।
आन विराजे धूनी तीरा, देख्यो नाथ सिद्ध गम्भीरा।
बाल रूप तेज के पूरे, गुरु प्रताप योग के सूरे।
छोटी-छोटी सिर बबुराना, कानों कुण्डल योगी बाना।
हाथ कमण्डल असली पहने, भस्म अंग थी जिनके गहने।
जीवन मुक्त सदा अविनासी, गुरु प्रताप सो ब्रह्म विलासी।

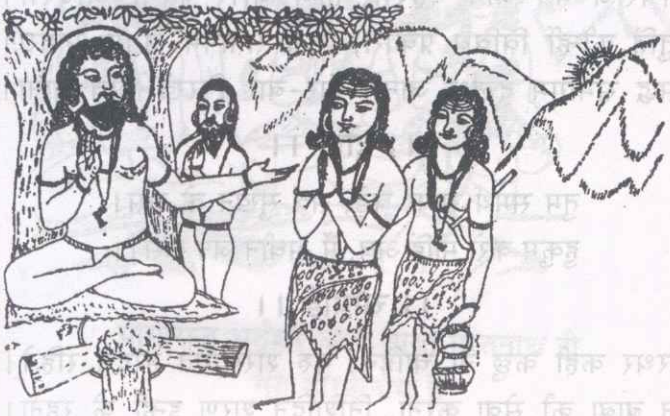

बाबा मस्तनाथ जी द्वारा अपने शिष्य को गोपीचंद भर्तृहरि का दर्शन करवाना

।। दोहा ।।

आदेश किया कर जोरि के, धूनी ऊपर आन।
श्रीमस्तनाथ तब देखिके, तुरत लिया पहचान।।

।। चौपाई ।।

जोगराज को तुरत बुलायो, अमृत बानी गुरु सुनायो।
गोपीचन्द भरथरी आये, सत्य-सत्य हम तुम्हें बताये।
ये हैं गोपी ये हैं भरथर, दरशन करलो दोनों सिद्ध वर।
संशय तजि निश्चय उरआनो, सब अभिलाष पूरण करजानो।
फिर नहिं कहना दूजी बारा, हम नहिं पाये दरस उदारा।
योगराज मन जान महेशा, हाथ जोरि कीनो आदेशा।
स्तुति कीन्हीं विविध प्रकारा, सिद्ध समागम अगम अपारा।
सिद्ध समागम दुर्लभ जाना, बार-बार निरखै छवि बाना।

।। दोहा ।।

तुम समर्थ सागर बड़े, सर्व सुखन के रास।
हुकुम करो मोहिं अब, मैं अधीन जन दास।।

।। चौपाई ।।

भरथर कही कछु ना चाहिये, गुरु शरणागत हरदम रहिये।
इन बाबा की सेवा करना, निशिदिन शरण इन्हीं के रहना।
मैं पूछो एक बात अज्ञाती, ताके उत्तर देउ सुहाती।
गोपीचन्द भरथरी केरे, दर्शन पाये आज घनेरे।
श्री गोरखनाथ जगपति दाता, योगी मूरति अलख विधाता।
तिनके दर्शन कबहु न पाये, की तुम नाहिं कहो समुझाय।
ऐते दिवस रहे गुरु तीरा, कधी न पाये दरशन गम्भीरा।
सोई कृपा कर मोहिं बताओ, श्रीनाथ का दरश कराओ।

।। दोहा ।।

हम नहिं पाये दरस को, सत्य कहत मैं आज।
दीजो दरस कराय मोहिं, तुम सिधवर महाराज।।

योगीराज भर्तृहरि बोले बाबा मस्तनाथ ही गुरु गोरक्षनाथ हैं

।। चौपाई ।।

भरथरी कही बिहाँसी के बानी, योगराज तुम कुछ नहिं जानी।
सत्य-सत्य हम तुम्हैं बतावें, श्री नाथ के दरशन करावें।
यह जो बाबा धूनी ऊपर, आसन मार बैठ सिद्धवर।
सो यह होवे गोरखनाथा, जाको सकल नवावत माथा।
सो मैं तुमको आज बताया, इसका भेद कोई नहिं पाया।

अनन्त रूप धर या जग माहीं, विचरत सदा बतावत नाहीं।
साधु सन्त कोई बिरले जानत, गुप्त प्रगट की पहिचानत।
तजि अभिमान सकल बिख्याती, सेवा करलो तुम दिन राती।

।। दोहा ।।

अद्‌भुत लीला जानिके, जोगराज आधीन।
हाथ जोरि चरणन परा, बोला वचन प्रवीन।।

।। चौपाई ।।

येते दिवस संग में बीते, लखि नहिं पायो गुरु अभीते।
सो मैं आज गोरख पहिचाना, श्रीनाथ जगपति भगवाना।
दया आपनी मोपर कीजै, भूल चूक माफ कर दीजै।
श्रीमस्तनाथ तब कहा उदारा, सुनो भरथरी बचन हमारा।
अब लग मोहिं नहीं पहचाना, रहे गुप्त तप रूप समाना।
गुप्त हाल अरु नाम प्रवीना, सो तुम आज प्रगट करि दीना।
करि आदेश भरथरी राया, गवन किया मलिया गिरि छाया।
जोगराज तब जान खुलासा, किया बहुत मन दृढ़ विश्वासा।

।। दोहा ।।

श्री मस्तनाथ गोरख सदा, सुमरों आठो याम।
भवसागर से पार ह्वै, पहुंचोगे निज धाम।।

।। चौपाई ।।

बुद्धिवान चातुर जन ज्ञानी, तजि अभिमान उचारत बानी।
द्वै भाव जिनके उर नाहीं, सदा प्रसन्न रहत जगमाहीं।

उत्तम पुरुष असत नहिं भाषत, सर्व जीवसों समता राखत।
बड़े उदार शील सन्तोषी, सुधा समान बचन निरदोषी।
बुद्धिवान आपनि सुखदाई, निजमुख सों नाहिं करत बड़ाई।
प्रेम सुधारस जे नर पीवत, सुफल जन्म करि सोई जीवत।
जिन नहिं पिया प्रेम रस धारा, ते नर जग में बहुत गमारा।
तिनको चाहिये उत्तम संगा, जासों उपजै हर रस रंगा।

।। दोहा ।।

सकल भ्रांति त्यागि के, एक ब्रह्म लौ लाय।
जहं देखो तहं एक ही, दूजा नहीं दिखाय।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत सिद्ध समागम वर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः।।११।।

।। दोहा ।।

नमो नमो गुरुदेव जी, दीनबन्धु सिरताज।
तुम गुरु मेरी राखियो, शरण गये की लाज।।

।। चौपाई ।।

नाथ चरित है परम पुनीता, सुनो सकल सज्जन मन मीता।
अद्भुत लीला अति हितकारी, श्रवण करे से लागत प्यारी।
यथा सुमति जानी मनमाहीं, गुरु प्रताप बरणों मैं ताहीं।

देश पटियाला एक अजूबा, तेजवान हिंद का सूबा।
जाकी रैयत सुख में साजै, धर्म नीति जहं बहुत बिराजै।
बहुत विचित्र देव स्थाना, जहं तहं बने तीर्थ अस्थाना।
भाव भक्ति जहं पर बहुतेरी, निशिदिन राखत लोग घनेरी।
आदर भाव जान उहि ठाहीं, सुनि मुनि संत सदा चलि जाहीं।

।। दोहा ।।

गुण जस कीरति गुरु की, अधिक महातम जान।
विमल-विमल विस्तार सों, गावत वेद पुरान।।

।। चौपाई ।।

एक समय पर श्रीगुरुराया, मन अपने संकल्प उठाया।
विचरत-विचरत देश पटियाला, करी सैल जहं अद्भुत बाला।
एक दिवस तब कृपा निधाना, जाय बिराजै ग्राम उचाना।
शिष्य अनेक संग थे जिनके, अद्भुत रूप सुहावन तिनके।
यथा योग्य सब आसन कोने, ब्रह्म अमल रस छकि-छकि पीने।
नाथ योगेन्द्र अलख गुरुदेवा, जिनकी सिद्ध करत हैं सेवा।
सुन्दर गात सुहावन सूंचे, सबके मध्य विराजत ऊंचे।
धूनी तपैं प्रेम रस माती, रहैं अगोचर दिन अरु राती।

।। दोहा ।।

अलख अगोचर स्वामियां, घट घट में भरपूर।
जिनके सुमिरन मात्र से, पाप होत सब दूर।।

।। चौपाई ।।

सुनि-सुनि लोग नगर के आये, दरस हेत मनमोद बढ़ाये।
निरखि-निरखि छवि सुन्दरताई, भये प्रसन्न सब लोग लुगाई।
कहत परस्पर पुरजन सारे, योगी आये ग्राम हमारे।
ऐसे योगी हम नहिं देखे, और भेष तौ जहं तहं पेखे।
अब इनका आदर सनमाना, किस विधि करै सो कहो सुजाना।
तामें रहा एक सरदारा, सो मन अपने किया विचारा।
हम सब सेवक लोग घनेरे, केवल एक साधु के चेरे।
जैसा हुकम देई गुरुदेवा, तैसी आन करेंगे सेवा।

।। दोहा ।।

नगर निकट एक मठ रहा, धन से अति भरपूर।
जहां साधुजन बहुत से, रहे मस्त मगरूर।।

।। चौपाई ।।

नगर लोग तब गये मठमाहीं, समाचार बोले तेहि ठाहीं।
योगी बहुतक सहित समाजे, ग्राम हमारे आन बिराजे।
नागा तपस्वी भस्म लगाये, कानन कुण्डल नाथ कहाये।
हैं अवधूत सकल बनखांडी, रमता योगी एकै मंडी।
धूना जिनका है अति भारी, तपसी तपैं सदा हितकारी।
आदर मान भाव संयोगा, किस विधि जाय करैं हम लोगा।
दया दृष्टि कर हमें बताओ, तुम गुरु मेरे परम कहाओ।
याही कारण हम सब आये, समाचार जो तुम्हें सुनाये।

।। दोहा ।।

साधु सुना यहि भांति जब, बोल्यो बचन विचार।
जैसा मैं तुम से कहूं , वैसा करो उदार।।

।। चौपाई ।।

खान पान भोजन सामगरी, दीजौ उनको सब मिल नगरी।
पूजा भेंट कछू ना देना, ये योगी रमता गरभीना।
हम साधू जन मण्डल केरे, देश ग्राम के हमीं पुजेरे।
ये तौ योगी हैं अभ्यागत, पूजा भेंट हमारी लागत।
जो यह पावैं एकौ बारा, दूजी साल लेइं फिर न्यारा।
ताते मानो मेरी बाता, केवल भोजन देउ सुहाता।
साधु वचन यहि भांति सुनाया, पुरवासिन के मन में भाया।
सत्य वचन तुम कहे पुनीता, सो सब माने प्रेम सहीता।

।। दोहा ।।

पुरबासी तब जायके, मस्तनाथ के पास।
हाथ जोर चरनन परे, कहत भये अरदास।।

।। चौपाई ।।

खान पान सामगरी सारी, देना चहत लोग हितकारी।
कौन वस्तु चाहिये गुरुदेवा, जासों होय तुम्हारी सेवा।
सो अब मोहिं हुकम करदीजै, खान पान आपन सोई लीजै।
बोले नाथ सुनो पुरवासी, तुम हो सेवक गुरुपद दासी।
पूजा भेंट धुनी की लागत, सो हम तुमसे पथ में चाहत।

एक रसोई सुन्दर खासी, श्रद्धा सहित देउ पुरवासी।
और नाहिं कुछ चाहत तुमसे, आशिरवाद लेउ फिर हमसे।
हम योगी रमता रमि जावें, बांधि कछू ना संग ले जावें।

।। दोहा ।।

चार खूंट रमते रहें, हम योगी सरनाम।
भक्ति भाव देखत फिरत, जहं तहं देश ग्राम।।

।। चौपाई ।।

कहत सकल सुनिये महाराजा, इस विधि नाहिं होयगा काजा।
केवल एक रसोई लीजै, पूजा भेंट छांड़ि सब दीजै।
देश ग्राम की याही रीती, खान पान देवें करि प्रीती।
रमता योगी हम पहिचानत, पूजा भेंट नाहिं कुछ आनत।
बोले नाथ सुनो तुम लोगा, पूजा बिना नाहिं कुछ होगा।
योगी की यह रीति है जूनी, पान फूल सों पूजत धूनी।
भेंट बिना नहिं लेत रसोई, पीर फकीर औलिया होई।
सुनिके सकल साधु के पास, जाय कहा सब हाल खुलासा।

।। दोहा ।।

कहत भये कर जोरी के, हे गुरु कृपा निधान।
योगी मांगत भेंट है, यथा शक्ति प्रमान।।

।। चौपाई ।।

साधु कहा सुनिये पुरबासी, बात कहूं मैं सुन्दर खासी।

कुशल आपनी जो तुम जानो, तौ तुम निश्चै करि के मानो।
भेंट कधीना उनको देना, वे योगी हैंगे गरभीना।
ऐसे योगी बहुतक आवें, देश विदेश सिद्ध कहलावें।
उनका बल कुछ हैगा नाहीं, हम यह जानत हैं सब ठाहीं।
सकैं न करि कुछ तुम्हरे साथा, बल के हीन ये योगीनाथा।
मेरे आगे कुछ अवधूती, चलि नहिं सकि है सिद्ध बिभूति।
तुम मत जाना उनके पासा, बैठो जाय आपने बासा।

।। दोहा ।।

मठधारी के बचन सुनि, भरमि गये सब लोग।
निंदा लागे करन तब, आनि लगाय कुजोग।।

।। चौपाई ।।

लोग नगर के सत करि जाना, निज-निज गये सदन अस्थाना।
बहुरि आनि नहिं पूंछी बाता, ना सनमान किया सुखराता।
आदर भाव छांड़ि सब दीना, किया निरादर अति गरभीना।
उपज्यो गर्भ भक्ति गई सारी, निंदक भये सकल नरनारी।
नाथ विचार किया मन माहीं, तीन दिवस बीते यही ठाहीं।
धूनि पानी ना कुछ पाया, मठधारी सबको भरमाया।
निंदा करत हमारी लोगा, दुष्ट करम के हैं सब भोगा।
श्रद्धावान नहीं है कोई, धनवंता सब गर्वित होई।

।। दोहा ।।

साधु निन्दक पातकी, भक्ति हीन मतिमन्द।
एते जग में ना भले, महा दुखन के बृन्द।।

।। चौपाई ।।

तातें यहां वचन परचाऊं, लीला अपनी कछू दिखाऊं।
जासों सुमिरैं निशिदिन बाचा, आया था यक योगी सांचा।
सदा लेइंगे नाम हमारा, भूलेंगे नहिं एकौ बारा।
शिष्य सकल तब नाथ बुलाये, या विधि सबको बचन सुनाये।
यह पुर हैगा अति गरभीला, देखि पड़त ना सजन सुशीला।
सो तुम जाय दलिद्दर गेरो, मानो वचन सही कर मेरो।
फटे पुराने मैले लूगर, जीरण होंय बहुत जे गूदर।
जो नहिं आवें काम तुम्हारे, लाओ बेगि तिन्हैं तुम सारे।

।। दोहा ।।

बांधि गेठरी शीस धर, तुरत फुरत सों जाय।
दीजौ सब मिलि डारिके, नगर मांझ हर्षाय।।

।। चौपाई ।।

जैसा हुकम दीन गुरुनाथा, तैसा सबन कीन्ह सुख साथा।
बांधि गेठरी गूदर केरी, योगी लेकर चले घनेरी।
जेता गूदर था यकबारा, ग्राम मध्य में जाकर डारा।
पूंछत भये नगर के लोगा, कहां से लाये बांधि के रोगा।
कैसा गूदर पुर बिच डारा, सो तुम हमसे करो प्रचारा।
योगी कहा सुनो पुरवासी, तुम तो लोग सबी उपहांसी।
हुकम गुरु का हैगा मेरा, सो हम आनि दलिद्दर गेरा।
एता कहि-कहि योगी आये, गुरु चरणन पर शीश झुकाये।

।। दोहा ।।

योगी सोच विचार के, हो गए रमते राम।
भक्ति भाव देखी जहां, कीन्हा तहां मुकाम।।

।। चौपाई ।।

नगर लोग तब कौंसिल कीना, योगी डारि दलिद्दर दीना।
यह तो बात भली ना होवे, योगी श्राप ग्राम को खोवे।
लोग देखि के बहुत डराने, अपने मन में बहुत पछताने।
योगी का कीन्हा अपमाना, ताते हम हैं अधम समाना।
मोहिं साध ने है भरपाया, शोक दोष में हमें गिराया।
नहीं कुशल अब देत दिखाई, कहा करैं अब हम तुम भाई।
करत विचार परस्पर माहीं, है कल्याण कछू अब नाहीं।
सुनि-सुनि दुख भये नर नारी, ग्राम दलिद्दर आया भारी।

।। दोहा ।।

बोला यक परधान तब, सुनो सकल चितलाय।
जिन भरमाया तोहि है, तिन गृह डारो जाय।।

।। चौपाई ।।

जेता गूदर योगी डारा, फटा पुराना लूगर सारा।
तेता सब लेकर पुरवसी, मठ में डारा जाय भिनासी।
लेउ साधु यह लूगर सारा, योगी ग्राम दलिद्दर डारा।
सो दलिद्र यह हम सब लाये, तुम्हारे मठ में डारन आये।

तुम छल कीना मेरे साथा, हम तो हो गये आजु अनाथा।
तुम्हरे कहे सकल पुर लागे, योगी बचन वृथा हम त्यागे।
मेरी मति तुमने भरमाई, ऊजर नगरी तुम करवाई।
निज-निज सदन गये पुरलोगा, उपजा भय अति जानि कुयोगा।

।। दोहा ।।

सकल साधु तब देखि के, मन में गए दुखाय।
पुरबासी मति हीन के, डारा मो गृह आय।।

।। चौपाई ।।

पुरबासी यह सकल मलामत, मेरे मठ में बिरथा डारत।
जैसा कीन्हा तैसा पाया, हमको नाहक दोष लगाया।
देखि-देखि मन करत बिचारा, काधौं बिधना होवन हारा।
साधु दलिद्दर फिर उठवाया, तुरत ग्राम में जाय डराया।
बचन कठोर साधु सब बोले, ग्राम नगर बिच जहं तहं डोले।
कोई-कोई हंसत परस्पर माहीं, देखि-देखि गूदर तेहि ठाहीं।
नाथ चरित्र कीन्ह कुछ अपना, सुमिरन करत साधु यह रचना।
सप्त दिवस कुशल सों बीते, फिर तो भया कुजोग इन्हींते।।

।। दोहा ।।

देखि गूदरा बहुत सा, पुरबालक तब जाय।
चरचा कीन्हा परस्पर, सबसों अति हरषाय।।

।। चौपाई ।।

बालक सकल ग्राम के आये, लै-लै गूदर गेंद बनाये।
लागे खेलन खेल पुनीता, दोउ ओर से करि-करि मीता।

एक-एक के मरन लागे, यक मारत यक जात हैं भागे।
एक गिरैं अरु एक उठावें, सप्त खाय के फिर-फिर धावें।
चढ़ा रोस आपस में भारी, गहि-गहि मारत होत दुखारी।
गिरत फिरत लागत अति चोटा, बिहंसत रोवत कोई-कोई जोटा।
खेलत-खेलत तब अधिकाई, मार पीट की परी लराई।
बहा रुधिर फूटा तन छाती, असगुन भया प्रथम यहि भांति।

।। दोहा ।।

एक पहर बालक डटे, करि-करि बहुत उमेद।
गए सकल निज-निज सदन, ले-ले अपने गेंद।।

।। चौपाई ।।

घर-घर अपने बालक रोये, अंसुआ भर-भर नैन भिगाये।
चोट लगत अरु सुजत गाता, रुधिर बहुत देखे पितु माता।
तब-तब गृह-गृह पूंछन लागे, यह क्या कीन्हा आजु अभागे।
सत्य-सत्य तब बालक भाखा, गोप नहीं कुछ पितुसों राखा।
हाट बाट गलिहारे कूंचा, घर-घर जाय दलिद्दर पहुंचा।
कछूक दिवस पाछे पुर माहीं, लागे होन बिघन सब ठाहीं।
जूड़ि ताप रोग अति गाढ़ा, प्रथमै सबके घर-घर बाढ़ा।
जासों दुखी भये अति भारी, लागे मरन बहुत नरनारी।

।। दोहा ।।

व्याकुल ह्वै नर नारी सब, कहैं परस्पर आय।
विपत परी चहुं ओर से, ना कोउ होत सहाय।।

।। चौपाई ।।

होन लगा उत्पात घनेरा, चोर हरैं धन घर-घर केरा।
अम्बर बरसे ना जल धारा, लागत पावक बारम्बारा।
मरैं पशु अरु होंइ दुखारी, बाढ़ा रोग चहुं दिशि भारी।
धन दौलत कुछ रहा न पासा, ग्राम दलिद्दर कीना बासा।
खेती पाती उगै न बीजा, लोग गाम के सबही खीजा।
महा दुखी होवत मुहताजा, भूखे रहत मिलत नहिं नाजा।
ऐसी दशा देखि पुर लोगा, त्यागी नगरी जानि अयोगा।
छांड़ि-छांड़ि के अपना बासा, बसे जाय पुर दूसर खासा।

।। दोहा ।।

सकल गर्व अभिमान तजि, सज्जन करो बिचार।
साधु निरादर कारने, नगरी भई उजार।।

।। चौपाई ।।

जेते लोग त्यागि के ग्रामा, बसे जाय पुर दूसर ठामा।
तेते लोग सब भये सुखारी, गये नाहि ते रहे दुखारी।
अब लग खेड़ा ऊजर देखा, कोई-कोई सन्त बतावत लेखा।
रहे साधुजन जे मठधारी, तेउ हो गये निर्धन भारी।
घर-घर जिनके यही कहानी, अपना दुख जनावत प्रानी।
चार खूंट अरु देश विदेशा, विदित चरित नाथ महेशा।
सोई किंचित मैंने बरना, गुरु के चरण कमल है सरना।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ सतगुरु सदा, राखत जन की टेक।
निज प्रताप भवजालसों, निकसें सिद्ध अनेक।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत साधु निरादर वर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः।।१२।।

।। दोहा ।।

अलख निरंजन स्वामियां, तुम मेरे गुरुदेव।
चरण कमल चित लायके, करूं तुम्हारी सेव।।

।। चौपाई ।।

एक समय श्रीनाथ अनूपी, तेज पुंज ॐकार स्वरूपी।
डावढी नगर महकमा थाना, एक दिन गुरु कीन्ह पयाना।
ग्राम निकट एक बड़का रूखा, रहा पुराना सो अति सूखा।
तामें एक पातहू नाहीं, कर विचार अपने मनमाहीं।
ताके नीचे धूनी लगाई, शोभा छवि कुछ कही न जाई।
सेवक लोग श्रवण जब कीना, पूजा भेंट साथ लै लीना।
आये तुरत सिद्ध के तीरा, दरशन कीने अती गंभीरा।
पूजा भेंट चरण पर धरके, हाथ जोरि अरु अस्तुति करके।

।। दोहा ।।

कहत भये पुरलोग सब, सुनो नाथ सुखधाम।
मेहर करी तुम आपनी, जो आए यहि ग्राम।।

।। चौपाई ।।

दूर किया तुम सकल अंधेरा, आजु पुनीत भयो पुर मेरा।
जिन चरणन की मुनि जन देवा, निशदिन करत जान सुखसेवा।
सोई चरण कमल इत आए, बड़े भाग से दरशन पाए।
कटि गए फन्द पाप सब नासा, पूरण भई हमारी आसा।
करि सनमान बहुत सा नीका, ले चरणोदक प्रेम अमीका।
सुधा समान सुनावत बैना, दरशन पाय जुड़ावत नैना।
भए प्रसन्न नाथ गुरु देवा, भक्ति जनन की देखी सेवा।
श्रद्धावान सकल नरनारी, साधु सन्त के अति हितकारी।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ के नाम सों, जो कोइ लेत विभूत।
निश्चय करके जानियो, भागि जात सब भूत।।

।। चौपाई ।।

नगर माहिं यक जाट सुशीला, बसत रहा नित भक्ति रसीला।
अधिक वृद्ध कम्पित तन गाता, स्वेत केस संतन पद माता।
था धनवान उजल कुल केरा, निशिदिन रहै साधु का चेरा।
बांझ रहै जाकी प्रिय नारी, बिन संतान दुखी था भारी।

किए उपाय अनेक प्रकारा, पुत्र भयो नहिं एकौ बारा।
याही चिन्ता में निसिवासर, वृद्ध भई सो भी प्रिय आगर।
निशिदिन राखे उर में चिन्ता, तासों सुख नहीं पावे किंता।
धन से होये नाहिं उजियारा, पुत्र बिना गृह है अंधियारा।

।। दोहा ।।

चिन्ता तो बहुतै घनी, निशिदिन रहै उदास।
वृद्ध अवस्था जानिके, छाँड़ी सुत की आस।।

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ बाबा सिद्ध साईं, तिनके दरस परस के ताईं।
करि-करि सुमति दोउ मनमाहीं, बाढ़ी रुचि जिनकी सब ठाहीं।
दूध घृत खीर का भोजन, लेकर आये बहुत प्रेमसन।
पूजा भेंट अनेक प्रकारा, चरण कमल पर धर एक बारा।
शीश नवाय निवेदन कीना, चरण कमल की रज ले लीना।
मस्तक अंग हृदय तन माहीं, लेत लगाय सोच कुछ नाहीं।
बहुत प्रेम सों उन अधिकाई, भक्ति जनन की रीति दिखाई।
चरण कमल ढिंग बैठी सुशीला, निरखन लगे गुरु की लीला।

।। दोहा ।।

कानन कुण्डल शिर जटा, भस्म अंग आखंड।
तेज पुञ्ज प्रकाश अति, छायो सकल ब्रह्मण्ड।।

।। चौपाई ।।

बैठ रहे बहुत पुरबासी, तिन सब मिलकर कीनी हांसी।

ये दोउ वृद्ध भक्त हितकारी, आये कहा लेन नर नारी।
बोला एक बिहंसि के बानी, पुत्र हेत आये दोउ प्रानी।
इनके नाहिं कोई सन्ताना, पुत्र बिना हैं दुखी अजाना।
एकन कहा बहुत हैं बूढ़े, कम्पित गात अधिक हैं रूढ़े।
इनके पुत्र कधी न होगा, निश्चय करके मानो लोगा।
मरण काल की वृद्ध अवस्था, सो आई इनकी अलबत्ता।
पर हैं भक्त बहुत सन्तन के, सदा सनेही गुरु चरनन के।

।। दोहा ।।

एकन कहा विचार के, मन की संशय त्याग।
दूध पूत ये रतन द्वै, मिले पुरुबुले भाग।।

।। चौपाई ।।

एकन कहा सत्य हम भाखत, गोप नाहिं कुछ तुमसे राखत।
यह जो मोटा बड़ का रूखा, बहुत काल सों खड़ा है सूखा।
जो यह हरा फेर ह्वै जावै, तौ हम जानै सुत यह पावै।
ना यह तरूवर होवे हरा, ना यह सुत को पावे नरा।
भांति-भांति पुरजन की रसना, जस आवत तस बोलत वचना।
मस्तनाथ तब मन में जाना, ये तो लोग देत हैं ताना।
नाथ कहा सुनियो पुरबासी, बात कहूं मैं सुन्दर खासी।
बड़ भी हरा होय एक बारा, सुत भी इसके होय सितारा।

।। दोहा ।।

सुनो योगियो सकल तुम, वचन कहूं अनुकूल।
एक सैकड़ा कलश जल, डारो बड़ की मूल।।

।। चौपाई ।।

सुनत शिष्य तब जहं तहं धाये, भर-भर नीर कलश ढरकाये।
कलश सैकड़ा जल उन गेरा, हर्षि-हर्षि लागी नहिं बेरा।
जैसा हुकम दीन गुरुनाथा, तैसा सवन कीन सुख साथा।
एक महूरत पाछे स्वामी, बोले वचन सर्व सुख गामी।
देखो जाय वृक्ष की मूला, शाखा निकसी कै अकूला।
एक शिष्य उठि देखन लागा, निरखि-निरखि मूल अनुरागा।
नूतन कोमल पात सहीता, देखा शिष्य बहुत कर प्रीता।
शाखा तीन मूल बिच पाया, ताहि बिलोकि अधिक हर्षाया।

योगेश्वर श्री मस्तनाथ जी का वृद्ध जाट को पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद

।। दोहा ।।

शिष्य कहा कर जोरि के, सुनिये कृपा निधान।
शाखा कोमल तीन हैं, सहित पात परमान।।

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ तब राजिब लोचन, बोले वचन सकल दुख मोचन।
जाट जाटनी सुनो उजेरे, तीन पुत्र होवेंगे तेरे।
यह बरदान श्रवण जब कीना, हाथ जोरि चरणन सिर दीना।
मस्तनाथ की जै-जै कारी, बोलत हर्षि जात बलिहारी।
हे प्रभु तुम राखी मम लाजा, किये सुफल सब मेरे काजा।
तुम गुरु मेरे परम पुनीता, शून सदन में किया उजीता।
संकट काटे गुरु दयाला, कियो सुखी तुम मोहिं बिशाला।
उपजेऊ आनन्द अति चहुं ओरा, मानों जैसे चन्द्र चकोरा।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ कृपालु तुम, दयावन्त सुखधाम।
निशिदिन सुमिरन मैं करूं, हिये करो विश्राम।।

।। चौपाई ।।

सप्त दिवस लौं किया मुकामा, नाथ निरंजन सब सुखधामा।
ऐसा सिद्ध कधी ना आया, न कहुं आन देश सुन पाया।
आश्चर्य सब लोगन माना, सूखा वृक्ष फेर हरियाना।
पुत्र जाट के अवश्य होगा, निश्चय करके जानत लोगा।
कछू काल पीछे शुभ सम्वत, तीनों पुत्र जाट गृह जन्मत।
उत्सव कीना विविध प्रकारा, आनन्द मोद बढ़ावन हारा।
साधु गुरु का करि सनमाना, विप्रन को दीने बहुदाना।
कहं लग बरनूं गुरु प्रतापा, दुख जंजाल कटे संतापा।

।। दोहा ।।

नाथ कृपालु दयाल हैं, करत निहाल बिशाल।
काटत जम के फंद सब, दूरि करत जंजाल।।

।। चौपाई ।।

ग्राम लोग यह लीला गावत, गुण यश कीरत बहुत बखानत।
अब लग बड़ का तरुवर हैगा, को जानै कबताईं रहैगा।
ताही बड़ के दरशन काजे, साधु दुनियां बहुत निवाजे।
पावन जानि पूजैं सब लोगा, जाको भेंटत छूटत सोगा।
जुगति-जुगति सों वाको राखत, एक महातम वाको भाखत।
दूरि-दूरि के सन्त सुजाना, देखन जात हैं बड़ अस्थाना।
मस्तनाथ सन्तन के प्यारे, लाज शरम के राखन हारे।
मन वांछित फल दे अनूपा, सदा विराजत ब्रह्म स्वरूपा।

।। दोहा ।।

सिद्धों में तुम सिद्ध हो, नाथों में तुम नाथ।
मस्तनाथ सतगुरु सदा, तुम्हैं नवाऊं माथ।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत बांझ सन्तान वर्णनो नाम त्रयोदशोऽध्यायः।।१३।।

।। दोहा ।।

गुरु मन्त्र गुरु तन्त्र है, गुरु ही सबका सार।
रूम-रूम गुरु ही बसैं, गुरु ही सिरजन हार।।

।। चौपाई ।।

नाथ निरंजन कृपा निकेता, सब गुण आगर परम समेता।
महा सिद्ध योगी जग जाहर, जिनकी कीरत महिमा आगर।
बरणि सकै नहिं रसना ताही, लिख-लिख थकि-थकि कोविद जाही।
घट-घट व्यापक सोइ अबिनासी, सुमिरत नाम कटत चौरासी।
अन्धकार घट दूरि बहावै, दीपक ज्ञान प्रकाश करावै।
जन्म-जन्म के काटत फन्दा, देत अभय पद महा अनन्दा।
गुरु सम और देव नहिं कोई, गुरु निस्तारन सबका होई।
ऐसे गुरु की करिये सेवा, जिनसे मिलै आत्मा देवा।

।। दोहा ।।

नाथ निरंजन स्वामियां, सब देवन के देव।
खोलैं पाट कपाल के, करैं भरम सब छेव।।

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ समर्थ गुरु सोई, रहे कछुक दिन नगर कलोई।
भाव भक्ति जहं होत घनेरी, सन्त बास आनन्द बहुतेरी।
आदर भाव नहिं सनमाना, तहां संत नहिं करत पयाना।
भाव भक्ति पुण्य ना कोई, तहं भण्डार दुखन का होई।

जानि उपाधी नगरी त्यागत, संतन के उर बन ही भावत।
विघन कलेश जहाँ कुछ नाहीं, संत सदा रहते उहि ठाहीं।
एक समय की बात बताऊं, लीला अद्भुत श्रवण कराऊं।
नाथ चरित्र विचित्र अनेका, जासों उपजत बहुत विवेका।

।। दोहा ।।

नगर कलोई से चले, एक समय श्रीनाथ।
बालक वृद्ध जवान अति, रहे शिष्य गुरु साथ।।

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ साईं सिद्ध वाला, दया रूप सागर प्रतिपाला।
बोहर ग्राम निकट जब आये, लोग बिलोकि बहुत हर्षाये।
दरस हेत सबही जन दौरे, बहुत लोग तब भये यकठौरे।
तहां रहा यक कूप पुनीता, शोभित सुन्दर वृक्ष सहीता।
पनिहारी जल भरैं अनेका, तिन सब देखा नाथ विवेका।
तामें रहै एक प्रिय नारी, रूपवान सुन्दर अधिकारी।
पाई नाम जाटनी सोई, हरीसिंह पति जाका होई।
ताने देखा नगरी केरे, लोग साथ हैं अती घनेरे।

।। दोहा ।।

पाई बोली बिहंसि के, सुनो सकल पनिहार।
बात कहूं परमान की, हिरदे लेउ विचार।।

।। चौपाई ।।

योगी एक बावला नङ्गा, देखु सही कस जात बिहङ्गा।

धूल लपेटे अङ्ग में सोई, लाज शरम जाके ना होई।
ताके पाछे केती दुनियां, दौरे जात हैं ब्राह्मण बनियां।
कीधौं भये बावरे लोगा, कीधौं भये गमार कुयोगा।
मति के हीने सकल पुरबासी, देखि-देखि मोहिं आवत हांसी।
सुनि-सुनि के यह गर्बित बानी, लगे विचारन तब गुणखानी।
यह नहिं जानत मोंको नारी, याको गर्व रूप को भारी।
ताते करूं कछु मैं लीला, जासों जानैं सब गर्बीला।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ बोले वचन, सुन पाई यहि आन।
तू भी नंगी होयगी, तजिके सब अभिमान।

।। चौपाई ।।

एता वचन कहा गुरुदेवा, लोगन जाना सत्य अभेवा।
है कुछ याकी लीला भारी, नंगी होय सही यह नारी।
आये नाथ खोखरा कोटा, धूना रहा जहां अति कोटा।
सुनिके वचन नगर की नारी, विहंसन लगीं सकल पनिहारी।
तब तौ पाई पूंछन लागी, सुनो सकल नारी अनुरागी।
योगी वचन कौन सा बोला, देहु बताय मोहिं अनमोला।
सुनु पाई यह बात अजूबा, तो सौ कहूं प्रेम रस खूबा।
नाथ वचन बोले हितकारी, तू भी नंगी होजा नारी।

।। दोहा ।।

पाई बोली क्रोध करि, मोंको है गल्यान।
योगी कीनी मसखरी, मेरे साथ अजान।।

।। चौपाई ।।

मैं पतिव्रता नारि कहाऊं, शील धर्म कुल कान बढ़ाऊं।
लागी निंदा करन घनेरी, साधु सन्त अरू योगी केरी।
कैसा योगी नंगा आया, जो मोहिं वचन अशुद्ध सुनाया।
दोऊ हाथ से गागर भीनी, सो उठाय सीसहि धर लीनी।
गई सदन अपने छिनमाहीं, कलश उतारि धरा एक ठाही।
चित्त नाहिं कुछ गृह विचलागा, बैराग अधिक जाके उरजागा।
छिन में जागि उठी प्रिय नारी, पलट गई बुधि जाकी सारी।
भई उदास काज सब छांड़ा, नाथ चरण चित अति बाढ़ा।

।। दोहा ।।

पति सुत की ममता गई, गई सकल कुल कान।
भई दिवानी नारि तब, तजि अपनो अभिमान।।

।। चौपाई ।।

नेह विकार देह का जाना, दीना त्यागि रूप अभिमाना।
भयो निरस तन का सब भोगा, लेन चहा पद पावन जोगा।
तनके कपड़ा काढ़ि बहाये, हार सिंगार सबी दुराये।
पद के नूपुर सकल उतारे, चूरि कंगन फोरि निवारे।
सेदुर बदन भाल का टीका, सो भी उर में लागा फीका।
ताहि विलोकि मेट के सारा, विष समान लागा सिंगारा।
करन फूल नक बेसर बाला, तुरत निकासि धरा जंजाला।
तजि सिंगार बदन का अगरा, डारा धोय नैन का कजरा।

।। दोहा ।।

भूषन बसन उतारि कै, नंगे ह्वैकर अङ्ग।
केस दिये छिटकाय के, उपजै जामें रङ्ग।।

।। चौपाई ।।

चूल्हे केरी लई विभूती, दिल में अपने करि मजबूती।
सर्व अंग में खूब लगाई, आंगन बैठी जाय लुगाई।
आसन बांधि नेत्र ना खोलै, शिवगोरख शिवगोरख बोलै।
दूजी बानि नेक ना लावै, प्राण छूटि चहुं तन से जावै।
सतगुरु रंग चढ़ा जब भारी, भूलि गई तिनकी सुधि सारी।
गृह को त्यागि चली बन ओरा, लोक बिलोकि किया अति शोरा।
पाई भई दिवानी देखो, महा अभाग कर्म को लेखो।
लाज शरम कुल कानि बहाई, महा अमंगल भई लुगाई।

।। दोहा ।।

एक पुरुष तब जायके, हरीसिंह के पास।
हाल सुनाया तुरत यह, छांड़ो गृह की आस।।

।। चौपाई ।।

स्त्री तेरी भई दिवानी, सत्य-सत्य मानो यह बानी।
भूषन बसन उतारयो सारा, छांड़ि दिया तन का शृङ्गारा।
कहा कहूं मैं तुमसे भाई, भस्म अंग आखण्ड लगाई।
पीवत दूध पुत्र को त्यागा, गरल समान भोग सब लागा।

शिव गोरख शिव गोरख बानी, मुख सों बोलत नारि दिवानी।
नंगे बदन वस्त्र कुछ नाहीं, गई अकेली जंगल माहीं।
ताके पास बेगि तुम जाओ, नारि पकरि के गृह में लाओ।
अपने मन में करो विचारा, कैसी लीला भई अपारा।

।। दोहा ।।

हरीसिंह तब वचन सुनि, मन में भया उदास।
नारि दिवानी हो गई, कीन्हा गृह का नास।।

।। चौपाई ।।

हरीसिंह तब गृह को आया, गृह के लोग न हाल सुनाया।
करि विचार अपने मन माहीं, ढूंढन चला बेगि बन माहीं।
एक वृक्ष जो रहा सुहावन, ताके नीचे परम उदासन।
शिव गोरख शिव गोरख बाबा, बोलत वचन नारि को पावा।
निकट जायके पट पहिराया, भलि-भाँति सों फिर समझाया।
हे प्रिय कुमति मौन सी ठानी, जो तू हो गई आज दिवानी।
कारण अपना मोहिं सुनाओ, दिल का सारा हाल बताओ।
तू तौ रही बहुत सी प्यारी, लाज शरम की राखनहारी।

।। दोहा ।।

रूप बनाया कौन सा, कारण कैसा होय।
सत्य-सत्य मोसों कहो, लाज दई क्यों खोय।।

।। चौपाई ।।

एक वर्ष की आयु केरा, रहा गोद में बालक तेरा।
ताहू की तै ममता त्यागी, कैसी रूचि तेरे मन लागी।
मेरे कुल में दाग लगाया, मात पिता का नाम लजाया।
कौन पुरुष तोकों भरमायो, राज छुड़ाय फकीर बनायो।
कौने तोहिं दियो उपदेशा, जासों लियो कुमति का भेशा।
संकट विपति कौन थी तोको, सो समुझाय कहो तुम मोको।
की कोई पुरुष वचन तोहिं मारा, की कोई नारी मिली गमारा।
हे प्रिय मानो मेरा वचना, अपनो नाम सदा तुम रखना।

।। दोहा ।।

चलो हमारे साथ तुम, वचन मानि यहि बार।
ममता राखो हृदय बिच, अपनो भवन विचार।।

।। चौपाई ।।

बहु प्रकार के वचन सुनाये, नारी के मन एक न भाये।
शिव गोरख शिव गोरख भाखै, दूजी बात और ना राखै।
बांह पकरि तब गृह में लाया, कोठे माहिं जाय बैठाया।
लोग नगर के देखन आवैं, बहुत प्रकार ताहिं समुझावैं।
सुनै न काहू केरि बाता, बहिर समान जनुता के गाता।
बार-बार मुख भस्म लगावे, निकसि-निकसि बाहर को जावे।
नांगी रहै वस्त्र नहिं लेवे, उत्तर काहू को नहिं देवे।
धन दौलत अरु कुल परवारा, दियो त्यागि नहिं लागी बारा।

।। दोहा ।।

जो कोइ देवै वस्त्र को, फाड़ बहावै दूर।
लोग लुगाई सब कहैं, है पागल भरपूर।।

।। चौपाई ।।

बन्द किया तब कोठे माहीं, अबलाके उर भय कुछ नाहीं।
भोजनादि सबही बिसराया, नाथ चरण पर ध्यान लगाया।
कछू दिवस पाछे पनिहारी, हाल सुनाया सब यह भारी।
तेरी स्त्री भरने पानी, गई रही सो हमने जानी।
मस्तनाथ बाबा को देखा, रूप दिगम्बर जान अलेखा।
ताहि बिलोकि हंसी यक बारा, निंदा कीन्हीं बहुत प्रकारा।
योगी मुख सों वचन उचारा, तू भी नंगी होजा दारा।
ता दिन से यह भई दिवानी, सोई हमने बात बखानी।

।। दोहा ।।

कारण रहा सो कहि दिया, पनिहारी समुझाय।
योगी को कुछ खेल यह, अद्‌भुत मोहि दिखाय।।

।। चौपाई ।।

हरीसिंह तब क्रोध बढ़ाया, लाल नेत्र करि भौंह चढ़ाया।
योगी मोसन बैर बिसाहा, नाश करन अब मोकों चाहा।
क्या मोहिं जाना अधिक कमीना, बल अरु पौरुष मेरा हीना।
करी घाट मोंसन अधिकाई, ईजति मोरी धूरि मिलाई।

एक दिवस देखूंगा ताको, केता तप बल हैगा वाको।
औसर पाय बांधि हथियारा, प्रात समय तब चला गमारा।
कछुक दूरि नगरी के बाहर, रहा तड़ाग एक अति आगर।
जहाँ रहा कुछ बन अनुरागा, हरीसिंह तहं देखन लागा।

।। दोहा ।।

तहं देखा श्रीनाथ को, नागा सिद्ध निर्बान।
सनमुख मेरे हैं खड़े, तुरत लिया पहिचान।।

।। चौपाई ।।

बोला नहीं वचन कोई मुखसों, उपजा क्रोध बहुत तन दुखसों।
मस्तनाथ को देखि अगाई, हरीसिंह ने सैल चलाई।
निस्फल गई लागी नहिं अंगा, सिद्ध भयो नहिं काज कुरंगा।
दूजी बार फेर लै फेंकी, सोभी अंग नाहिं कुछ छेकी।
तीजी बार क्रोध करि भारी, सैल उठाय लई भयकारी।
बहुरि चलाई करि अति जोरा, सनमुख अपने योगी ओरा।
सोभी निस्फल देखि खुलासा, अपने मन में होत उदासा।
तीन वार मैं इन पर कीने, वृथा गये कुछ काज न दीने।

।। दोहा ।।

योगी निडर बिलोकि के, निश्चय जान अभंग।
करामात हैगी कछू, जासों लगत न अंग।।

।। चौपाई ।।

सिद्ध पुरुष की गति मति न्यारी, लखि ना सके कोउ संसारी।
नाथ भयंकर रूप दिखाया, बड़ि-बड़ि भुजा भूदरी काया।
छिन आगे छिन पाछे देखे, छिन दायें छिन बायें पेखे।
कहीं गुप्त कहीं परघट सूरा, कहीं निकट कहीं देखै दूरा।
हरीसिंह तब देखि डराना, अपने मन में अति पछिताना।
यह तौ सिद्ध औलिया कोई, मानुष नाहिं देवता होई।
काहू के बस में यह नाहीं, जो चाहैं सो हो छिन माहीं।
तीन लोक का यह महाराजा, शरण गये राखै सब लाजा।

।। दोहा ।।

हाथ जोरि चरण परा, बिनती करी अपार।
कृपा करो मों दास पर, हे गुरु सिरजन हार।।

।। चौपाई ।।

क्षमा करो मोंपर गुरुदेवा, हौं अजान मैं बहुत दुखेवा।
माफ करौ मेरी तकसीरा, वेग धरावो मोंको धीरा।
अब मैं आया तुम्हरी सरना, मेरी लाज सदा तुम रखना।
जब यह बचन सुना आधीना, भये प्रसन्न नाथ परवीना।
बैर भाव संत नहिं राखत, सत्य वचन सोइ मुख सों भाखत।
छलबल कपट निकास बहावें, दया धीर सन्तोष धरावें।
हरीसिंह निज सदन सिधारा, हाल कहा तब जाकर सारा।
पुरबासी सुनि अचरज माना, गुणजस कीरत अधिक बखाना।

।। दोहा ।।

लोग सबी आये तहाँ, कौसल किया अपार।
पाई त्यागा अन्न जल, ताको कहा विचार।।

।। चौपाई ।।

एक मास देखत मोहिं बीता, बिन अन्न जल बिखाद सहीता।
दुर्बल देही मरण सनेहा, भई नारि नहिं कुछ संदेहा।
तुमरे बस अब ना यह आवै, लिखा बिरंचि सत्य ह्वै जावै।
ताते मानो मेरी बाता, जो सुख उपजै दिन अरु राता।
याको लै गुरु चरण चढ़ाओ, करो बेगि देर मत लगाओ।
मरै जिये या दुख सुख होई, परालब्द बस है सब कोई।
जाके भाल लिखी है जैंसी, सोइ अवश्य होयगी तैंसी।
तासों छाँड़ो याकी ममता, धरो धीर मन में कर समता।

।। दोहा ।।

मैंना पाई साथ लै, हरीसिंह तब आय।
करी निवेदन जोरि कर, पायन शीस नवाय।।

।। चौपाई ।।

सुनो नाथ यह बिनती मेरी, चरण कमल की करूं निहोरी।
मैंना पाई दोउ चढ़ाया, चरण कमल तुम्हरे गुरुराया।
एक मास बीता अनुमाना, बिन आहार नित रहै अजाना।
वस्त्र अंग एकौ नहिं राखै, शिव गोरख शिव गोरख भाखै।
गृह ब्योहार काज तजि दीना, निशिदिन रहै चरण लौलीना।
सो यह चाहत करन फकीरी, नीकी लागत नाहिं अमीरी।

तातै शरण आपने लीजै, करि अवधूत योगिनी कीजै।
मोंपर मेहर करो निशि बासर, श्रीनाथ तुम जगत उजागर।

।। दोहा ।।

मैंना पाई छांड़ के, लेकर आशिरवाद।
हरीसिंह गृह को गया, पूरण भई मुराद।।

।। चौपाई ।।

नाथ शरण जानि अधिकाई, अधिक आनन्द भई तब पाई।
एक दिन शुभ जानि महूरत नाथ चरण पर धर के सूरत।
कान फड़ाय मुद्रिका लीन्हा, भई दरसनी सब कोऊ चीन्हा।
भस्म अंग आखंड लगावे, निशिदिन ब्रह्मतत्व उर ध्यावे।
पाई नाथ नाम बखाना, जाको जाने देश हरियाना।
गुरु की आज्ञा ले परवीनी, खड़ी तपस्या कुछ दिन कीनी।
तरुण अवस्था गोरे गाता, रही प्रसिद्ध अवधूतिनि माता।
गुरु प्रताप भेद लै सारा, योग जुगति करि मन को मारा।

।। दोहा ।।

अद्‌भुत लीला नाथ की, महा पवित्र पहिचान।
गुरु प्रताप बरणन करी, बुद्धि अपनी अनुमान।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत अवधूतिनी लीला वर्णनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः।।१४।।

।। दोहा ।।

बार-बार सुमिरन करूं, धरूं ध्यान दिन रात।
श्रीमस्तनाथ गुरुदेव तुम, हरो सकल दुख गात।।

।। चौपाई ।।

एक दिन यक जाट सुहावन, प्रात गया बन धेनु चरावन।
धेनु मुई तहं जाय अचानक, जानि पड़ा नहिं भेद भयानक।
जाट बिलोकि शोक अति कीना, बिधना मोकों यह दुख दीना।
रही निरोग रोग ना कोई, कारण कौन आज यह होई।
बार-बार मुख धेनु उठावैं, रोइ-रोइ हिय कंठ लगावै।
भया दुखी अति जाट बिचारा, माया मोह प्रबल संसारा।
ता बन माहिं रहे श्रीनाथा, तपसी रूप महा सुखदाता।
लगा करन सुमिरन बहु भांति, होउ सहाय नाथ अविनासी।

।। दोहा ।।

धेनु मुई तब छाँड़िके, गया नाथ के पास।
हाथ जोरि चरणन परा, दृढ़ करके विश्वास।।

।। चौपाई ।।

हाथ लकुटिया लीन्हे बाला, सिर से ओढ़े कम्बल काला।
ठाड़े होकर अर्ज लगाई, हे गुरुनाथ सुनो सुखदाई।
सिद्ध शिरोमणि हो निरधारा, तुमको जानत सब संसारा।
अंधे लोचन कुष्टी काया, बाँझ स्त्री बालक पाया।

सूखे वृक्ष हरै करि दीने, रंक से राव तुरत तुम कीने।
सूखी नदिया नीर बहाये, जहं तहं अम्बर तुम बरसाये।
बादशाह ने परचा लीना, मानसिंह को गादी दीना।
मृगा रूप तुम्हीं ले बिचरे, देव सभा सिंहासन उतरे।

।। दोहा ।।

तुम कृपालु गुरुनाथ अति, सर्व सुखन के रास।
मोपर करुणा कीजियो, मैं हूं तुमरो दास।।

।। चौपाई ।।

आज प्रात मैं घर से आया, धेनु चरावन हे गुरुराया।
चुगते-चुगते या बन माहीं, धेनु मुई मेरी यहि ठाहीं।
केवल एक गऊ थी मेरी, सेवा टहल करी बहुतेरी।
मैं हूँ निरधन अधिक विचारा, यासों मेरा रहा गुजारा।
सुत बालक मेरे हितकारी, बिना दूध के भये दुखारी।
कृपा आपनी मोंपै कीजै, गऊ जियाय मोर अब दीजै।
बड़-बड़ काज किये जग माहीं, तुमसों दुर्लभ है कुछ नाहीं।
एता सुयश लेउ गुरु मेरा, मैं हूँ दास तुम्हारा चेरा।

।। दोहा ।।

तुम समर्थ गुरुनाथ हो, सबके दीन निवाज।
एता दुख मेरा हरो, करो सुखी मोहिं आज।।

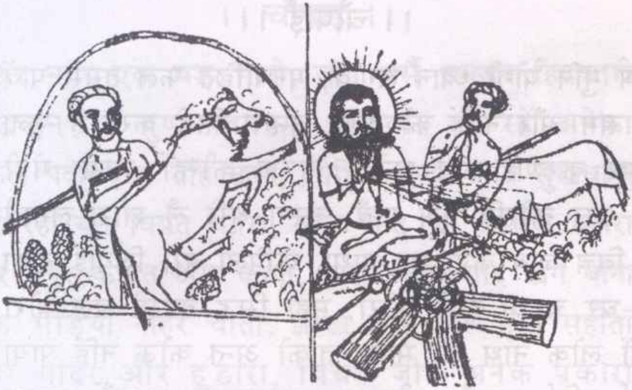

दयामूर्ति बाबा मस्तनाथ जी का मृत गाय को जीवन दान

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ तब सिद्ध अनूपी, मूंठी भरके लई विभूति।
नाथ निरंजन गोरक्ष देवा, एता कहिकर तुरत अमेवा।
दयारूप अति तप बल जोरा, फेंक दई तप कपिला ओरा।
आये प्रान गऊ घट मांही, लगी चुगन उठिके तेहि ठाहीं।
नाथ कहा सुनु वचन हमारा, जीवै धेनु देखु यहि बारा।
गुरु का वचन मानि गम्भीरा, जाट गया तब गइया तीरा।
तृण चुगत कपिला को देखा, उपजा आनन्द बहुत अलेखा।
कहा धन्य तुम बाबा साहब, कीरति महिमा बहुत अजायब।

।। दोहा ।।

जाट धेनु ले आपनी, गया नाथ के पास।
बिनती कीन्हीं बहुत सी, जानि सकल सुखरास।।

।। चौपाई ।।

ऋषि मुनि योगी ध्यान लगावें, मनवांछित फल तुमसे पावें।
तुम सम और नाहिं को दूजा, तुम्हरी सिद्ध करत हैं पूजा।
मोंपर करुणा करी घनेरी, पूरण कीन्हीं आसा मेरी।
बार-बार कीरति गुण गावै, चरण धूरि लै शीस लगावै।
पुर बिच जाय कही यह गाथा, कपिला मरी जियाई नाथा।
घर-घर चरचा होय घनेरा, महा सिद्ध तपसी बल केरा।
तीनों लोक नाथ की माया, ताको अन्त कोऊ नहिं पाया।
हर्षि-हर्षि सुमरै श्रीनाथा, बारम्बार नवावैं माथा।

।। दोहा ।।

करैं बड़ाई बहुत सी, हर्षि-हर्षि नर नार।
मस्तनाथ सिद्ध औलिया, साईं सिरजनहार।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत कपिला जीवन वर्णनो नाम पंचदशोऽध्यायः।।१५।।

।। दोहा।।

अज अविनाशी अच्युत है अभय अनादि अनाम।
नाथ निरंजन सर्व घट, ताहि करूं परनाम।।

।। चौपाई ।।

झांझर नगर एक बड़ भारी, जहां बसैं सज्जन हितकारी।
बुद्धिवान जन गुणी विवेका, भक्तिवान तहं रहें अनेका।
सकल पदारथ थे तेहि ठामा, शोभित सुन्दर अति सुखधामा।
तहां रहा बन विपत घनेरा, जीव जन्तु का अधिक बसेरा।
कीर मयूर कपोत अरू कागा, सारस चील गीद खग बागा।
सिंह भेड़िया नाहर चीता, झांख ससा अरु मृगा सहीता।
बंदर गीदर और हुंडारा, विचरैं जीव अनेक प्रकारा।

।। दोहा ।।

जहं तहं रहे निवास जल, भरे तड़ाग अरू कूप।
बिटप मंजरी लतायुत, शोभा ललित अनूप।।

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ साईं सुख धामा, विचरत-विचरत गये तेहि ठामा।
देखे ढूह विपिन बन आगे, कंदमूल फल जहं तहं लागे।
शीतल पवन चले सुखदाई, जल समीप रमणीक सुहाई।
देख्यो बड़ तरुवर की छाया, धूनी सिद्धवर जाय लगाया।
नागा सिद्ध महा निर्बानी, निर्भय योगी सब गुणखानी।
तेज पुंज तप बल अति भारी, निर्मल ज्ञान मूर्ति हितकारी।
भूत पिशाच प्रेत गण नाना, सो सब धरे पुरुष का बाना।
आनि करैं सेवा बहु भांति, सकल रहैं सब दिन अरु राती।

योगेश्वर श्री मस्तनाथ जी का मृग रूप में विचरना और ग्राम के सरदार का गोली मारना

।। दोहा ।।

एक दिन श्रीनाथ ने, मन में मोद बढ़ाय।
मृगा रूप धारण कियो, अति अनूप सुखदाय।।

।। चौपाई ।।

शुद्ध गात शोभा छबि सोहै, अतिहि अनूप रूप मन मोहै।
कुंजलता तरुवर की छाहीं, फूले पुष्प सकल बन माहीं।
उठत सुगन्ध भंवर गुंजारत, जहं तहं पंक्षी बोल सुहावत।
है निर्भय ममता सब त्यागे, जहं तहं बन में बिचरन लागे।
ताही समय ग्राम सरदारा, खेलन आयो बिपिन शिकारा।
पुरजन साथ रहे बहुतेरे, ढूंढन लगे मृगा बन केरे।

ढूंढत-ढूंढत कुंजल माहीं, आये सकल दया उर नाहीं।
देखि मृगा मन मोद बढ़ायो, लोगन चहुं दिशि घेर लगायो।

।। दोहा ।।

छल बल करि अति गर्व सों, जान सकारी चोट।
गोली मारी चरन बिन, गहि तरुवर की ओट।।

।। चौपाई ।।

जानि कपट मृगराज अगारी, कुंजन ओट चले तेहिबारी।
रुधिर बहत अति चरण मकुंदा, जहं तहं परत रक्त के बुन्दा।
झाड़ी ओट आय गुरुराया, दूरि करी तब मृग सी काया।
तपस्वी रूप प्रथम का बाना, सो धर लीन्हा नाथ सुजाना।
दयारूप गुरुदेव निवाजे, धूनी ऊपर आप बिराजे।
श्रीनाथ सतगुरु ओंकारा, होनहार हिये माहिं बिचारा।
महा प्रबल फल करम गती का, हो अवश्य नहिं दोष किसी का।
दुखसुख जान्यो भोग शरीरा, कीना क्रोध नाहिं तप धीरा।

।। दोहा ।।

पग पसारि गुरुनाथ जू, मन में अति हर्षाय।
लागे पोंछन रक्त तब, तरुवर पात उठाय।।

।। चौपाई ।।

ढूंढत-ढूंढत तब सरदारा, आयो निकट लगी नहिं बारा।
देख्यो निरख सकल आधीरा, जटा जूट तपसी गम्भीरा।

तेजवान योगी कुलदीपा, तरुवर नीचे धूनी समीपा।
पग में बहुत रुधिर ततकाला, राव बिलोक भयो बेहाला।
दंत अंगुलि दै मन पछतावै, बात कही मुख से नहिं जावे।
मृगा रूप से या बन माहीं, विचरें नाथ और कोउ नाहीं।
मृग बिलोकि हम चोट चलानो, सो पग लगा चीन्ह में पायो।
गिर रुधिर हम जहं तहं देखा, आये तुरत चीन्ह पग रेखा।

।। दोहा ।।

चूक भई मोंसन अधिक, मैंने किया अकाज।
यह तो कोई सिद्ध हैं, जानिपरा मोहिं आज।।

।। चौपाई ।।

अस्त्र शस्त्र पृथवी में डारा, गुरुपद परा तुरत सरदारा।
तुम स्वामी मेरे महाराजा, मोसों भयो बहुत अकाजा।
मैं नहिं जाना तुमको स्वामी, हौं अजान मैं अति खलकामी।
जो मैं जानूं ऐसा भेवा, मृगा रूप बिचरैं गुरुदेवा।
तौ मैं या बन परम सुहाता, मृग शिकार खेलन नहिं आता।
मैं अपराधी दास तुम्हारा, मेहर करो मोंपर यहि बारा।
बारम्बार चरन शिर नावैं, अस्तुति बिनती बहुत सुनावै।
जेते हते साथ में चाकर, चरण परे तेउ सब आकर।

।। दोहा ।।

सन्त सदा शीतल रहत, जैसे निरमल गंग।
दया रूप सन्तोष गुण, क्षमा है जिनका अंग।।

।। चौपाई ।।

नाथ कहा सुनु क्षत्री बालक, डरु मत राखु धीर हम पालक।
भयो अकाज अजान घनेरा, जानत भेद नहीं तू मेरा।
पूंछा हाल सकल कहि दीना, मृगा रूप हमहीं धर लीना।
सुनत बचन कांपन सब लागे, जाने श्राप देइंगे आगे।
तब गुरु शीतल बचन उचारा, सुनो बात मेरी सरदारा।
तुम मृग जानि कंजु पग मारा, दोष होय कुछ नाहिं तुमारा।
होनहार होवेगी अवशय, तू मत अपने मन में सकुचाय।
सुनत बचन धीरज उर आया, बोल्यो तब सुनिये गुरुराया।

।। दोहा ।।

तुम प्रताप श्रीनाथ जी, सब कुछ मेरे धाम।
हुकम करौ लाऊँ सोई, करिये बास मुकाम।।

।। चौपाई ।।

हुकम करौ तो दौलत लाऊं, महल मकान गढ़ी बनाऊँ।
बाग बगीचा या बन माहीं, मैं लगवाय दऊँ यहि ठाहीं।
सदाबरत क्षेत्र जो चहिये, देऊं लगाय अन्न का कहिये।
नौकर चाकर दास घनेरे, सब हाजिर चरनन के चेरे।
ना मोहिं चहिये महल मकाना, ना मोहिं चहिये कोट खजाना।
ना मोहिं चहिये बाग बगीचा, ना मोहिं चहिये वस्त्र गलीचा।
ना मोहिं चहिये नौकर चाकर, ना मोहिं चहिये सेवा नादर।
ना मोहिं चहिये कूप तड़ागा, ना मोहिं चहिये पृथवी जागा।

।। दोहा ।।

हम योगी रमते रहैं, अबध अशोच अनाम।
मोह माया ममता सकल, तजत हैं आठोयाम।।

।। चौपाई ।।

फिकर भई तब कहां फकीरी, संतोष नाहिं तब कहाँ अमीरी।
जो जंजाल छांड़ि गृह आया, सोई मूर्ख फेर उठाया।
छांड़ि के आया एके बासा, अनेक सदन की हो गई आसा।
बांधे मठ सथल बहु भांती, जाल पसार फिरे दिन राती।
मान मोह ममता यह खोवै, जिमि जल बधा गदीला होवै।
खाया आप न और को दीना, आये चोर मूस धन लीना।
किया न कुछ जो ते परमारथ, खो दिया सब जन्म अकारथ।

।। दोहा ।।

सदा अगोचर ध्यानरत, रहैं अभय गम्भीर।
फिकर तजै तन बस करैं, ताको नाम फकीर।।

।। चौपाई ।।

हाथ पात्र अरु ऊदर छोरी, सब सों उत्तम नहिं कुछ खोरी।
पृथ्वी आसन अजब गलीचा, आकाश वस्त्र अरु ज्ञान बगीचा।
आहद सिंगी पवन जनेऊ, सुरत मुन्दरा खोजि के लेऊ।
आशा तृष्णा खांडै सारी, निर्भय सहा रहै ब्रह्मचारी।
काम क्रोध अरु लोभ बहावै, कालजीत अवधूत कहावै।
भंवर गुहा बिच राखै ध्याना, उनमुन मुदरा जोत समाना।
निर्भय योगी परम विवेका, लाख करोड़ में होवै एका।

।। दोहा ।।

अभय बिवेकी धर्म तप, इन्द्रजीत अच्यूत।
काल जीत निर्द्वन्द हो, सो जोगी अवधूत।।

।। चौपाई ।।

झिरना झील पियन को पानी, बन फल भोजन सुन्दरखानी।
छाया तरुवर गुहा बसेरा, सबसों उत्तम योगी केरा।
कहा करै दौलत लै योगी, चहिये उनको जो हैं भोगी।
मन हाथी अरु इन्द्री घोरा, बांधत सन्त सदा बल जोरा।
नाम अचल धन राखत पासा, धर्म धुजा ऊंची परकाशा।
जग में जीवन हैगा थोरा, ताते सुनो वचन यह मोरा।
हिंसा सकल जीव की त्यागो, भक्ती में तुम हरकी लागो।
साधु सन्त पट दर्शन देवा, तन मन धन से करना सेवा।

।। दोहा ।।

सब सों उत्तम भक्ति है, नहिं कुछ विघ्न कलेश।
सन्त सहज सोइ जानिके, देत सदा उपदेश।।

।। चौपाई ।।

इस विधि सुनि अमृत की बानी, बोला राव महा अज्ञानी।
धनि-धनि हो तुम सतगुरु स्वामी, दयारूप आनन्द घनगामी।
जो उपदेश मोहिं तुम दीना, सत्य जान शीस धर लीना।
सन्त मिले जनु मिले महेशा, मैं अब जाना सिद्ध गणेशा।

करि आदेश जोरि युग पाना, विनय सुनाय बहुत विधिनाना।
आज्ञा लेकर तब सरदारा, भवन आपने तुरत सिधारा।
पुरवासिन को हाल सुनाया, आश्चर्य सबके उर आया।
नाथ चरण चित सब कोउ आनै, पुनि-पुनि कीरति बहुत बखानै।

।। दोहा ।।

तेज पुंज प्रकाश अति, महिमा अधिक अनूप।
घर-घर चरचा होत यह, नाथ धरा मृग रूप।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत मृग लीला वर्णनो नाम षोड़शोऽध्यायः।।१६।।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ गुरुदेव सम, दयावन्त कोऊ नाहिं।
जाके सुमिरन मात्र से, कोटि विघ्न टरि जाहिं।।

।। चौपाई ।।

एक समय गुरुनाथ विचारा, दिल्ली शहर लखूं यकबारा।
साधु सन्त जहं हैं बहुतेरे, यक से एक अति गुणी घनेरे।
जमुना सरिता जहाँ सुहावन, निर्मल जल सुन्दर अति पावन।
वेद पुराण महातम गावें, अरस परस किये पावक जावें।

भाव भक्ति गुण देखूं नाना, कैसा बसै शहर सुलताना।
जाय चिताऊं मैं यक बारा, परचा अजब दिखाऊं सारा।
भक्त जनन की रक्षा करूं, कंटक तोरि दूरि परिहरूं।
परस्वारथ के कारण सन्ता, विचरें सदा महा गुणवन्ता।

।। दोहा ।।

यह विधि मन में ठान के, शिष्य लेत बुलवाय।
निज इच्छा सब सों कही, गुरुनाथ हर्षाय।।

।। चौपाई ।।

शिष्य अनेक संग ले लीन्हा, नाथ गवन दिल्ली को कीन्हा।
सनय-सनय पहुंचे अभिरामा, पंचकुंइया पर किया मुकामा।
यथा योग्य सब आसन कीने, गुरुनाथ आयुस जम दीने।
दिल्ली शहर खबर भई सारी, सिद्ध शिरोमणि आया भारी।
संग में वाके शिष्य अनेका, यक से एक अति गुणी विवेका।
कोइ-कोइ खाखी दूधाधारी, कोइ-कोइ मौनी हैं फलहारी।
कोइ अवधूत निर्बान अखंडित, कोइ बुद्धिवान चतुरअति पंडित।
नाथ कहावत जोगी भेखा, जिनकी माया बहुत अलेखा।

।। दोहा ।।

सुनि-सुनि धाया शहर तब, मन में अति हर्षाय।
गुरुनाथ के दरश सों, जन्म सुफल है जाय।।

।। चौपाई ।।

पंचकुंइया पर नर अरु नारी, आये सकल भीर भई भारी।
पान फूल नारियल अरु भेवा, धरि-धरि भेंट करैं सब सेवा।
दरशन पाय सुखी भई परजा, सबके उर में आनन्द उपजा।
ऋद्धि सिद्धि दोनों कर जोरे, आन खड़ी भई चरनन धोरे।
कह्यो वचन आनन्द सुखरासी, नाथ चरण की हम हैं दासी।
आलमशाह खबर जब आया, मस्तनाथ योगी कोई आया।
साईं बली है मस्त फकीर, बेपरवाह औलिया पीर।
दरशन जाय करूं यकबारी, मन की आश पुरावहुं सारी।

।। दोहा ।।

बादशाह मन आपने, कीन्हा अधिक विचार।
दरश परस जो सन्त का, हैगा अति सुखसार।।

।। चौपाई ।।

आमखास बैठे जब आनी, सिर पर धरे ताज सुलतानी।
शाह मौलवी तुरत बुलाये, काजी मौला सबही आये।
शाह वचन बोले यहि भांती, सभा बीच अति परम सुहाती।
पीर फकीर औलिया भाई, आया एक सुना यहि ठाईं।
पंचकुंइया पर आसन कीने, शिष्य अनेक संग परवीने।
योगी जग में है सरनामी, सिद्ध पुरुष कोई अन्तरजामी।
मोंमन लगी दरशन की आसा, तासों चाहत जान खुलासा।
कहो विचार वक्त परवीना, तुम सब जानत राजकरीना।

।। दोहा ।।

कह्यो मौलवी वचन तब, सुनिये शाह सुजान।
शरह दीन की विदित जो, सो मैं करूं बयान।।

।। चौपाई ।।

हमहूं सुना नगर मुख बानी, कीरत वाकी बहुत बखानी।
भस्म अंग आखंड लगाये, जटा मुकुट तन पै छिटकाये।
कानन कुण्डल वाके छाजै, सेली सिंधी कण्ठ बिराजै।
बैठा आसन धुनी लगाये, नागा पीर फकीर कहाये।
तन पर वस्त्र एकहू नाहीं, बेपरदा योगी तेहि ठाहीं।
लाज शरम कुछ नाहिं वाके, हिन्दू मजहब निशिदिन ताके।
नंगों का दरशन नहिं चहिये, हजरत सोच विचार के रहिये।
दीन ईमान कुरान बतावे, शहर से बाहर कधी न जावे।

।। दोहा ।।

विधि पूर्वक समुझाय के, कहत भये सब कोय।
आगे मरजी आपकी, जो कहिये सो होय।।

।। चौपाई ।।

आलमशाह वचन जब सुन्यो, तुरत विचार वचन अस कह्यो।
जो वह योगी रहता नंगा, एक दुशाला भेजो चंगा।
कछुक मोहर धूनी की पूजा, दीजो उनको और न दूजा।
साधू सन्त द्रव्य ना चाहत, भोजन बस्तर सदा दोइ मांगत।

हुकम पाय लेगया सिपाही, मस्तनाथ बाबा ढिंग जाही।
मोहर दुशाला आगे धरा, द्वै कर जोरि चरन बिच परा।
आलमशाह भूप गम्भीरा, भेज्यो मोहिं आपके तीरा।
हे गुरुनाथ भेंट यह लीजै, आशीरबाद आपनो दीजै।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ मन आपने, कीनो यह अनुमान।
शाल दुशाले क्या करूँ, मैं नागा निर्बान।।

।। चौपाई ।।

गुरुनाथ तब लिया दुशाला, निज हाथन धूनी बिच डाला।
खाक भया जब धूनी परा, देखि सिपाही मन में डरा।
करि आदेश तुरन्त सिधारा, हाल कहा यह जाकर सारा।
सुनिये हजरत साहब बाला, जला दिया वह सबी दुशाला।
बेपरवाह औलिया साईं, लोभ नहीं वाके मन माहीं।
सत्य-सत्य सब हाल सुनाया, बादशाह सुनिके तुरसाया।
कैसा योगी है निरमोही, दिया जलाय दुशाला को ही।
तब तौ मन में शाह बिचारा, परचा लेऊं मैं यक बारा।

।। दोहा ।।

देखूं मैं सिद्ध औलिया, कैसा है सरनाम।
जो ना अजमत पाइहों, कैद करूं यहि ठाम।।

।। चौपाई ।।

कामदार को शाह बुलाया, विधि पूर्वक ताको समझाया।

मस्तनाथ बाबा ढिंग जाओ, मांग दुशाला वासों लाओ।
कामदार बाबा के तीरा, बोल बचन जाय गम्भीरा।
हे गुरुनाथ दुशाला दीजै, वाके बदले दूसर लीजै।
कम कीमत का रहा दुशाला, तुमको देंगे कीमत वाला।
सुनिके बचन नाथ मन माना, बादशाह का दिल पहिचाना।
परचा मांगै आज हमारा, ताको सही देउं यकबारा।
बिना परचा पूंछै नहिं कोई, ब्रह्मा विष्णु महेश चहुं होई।

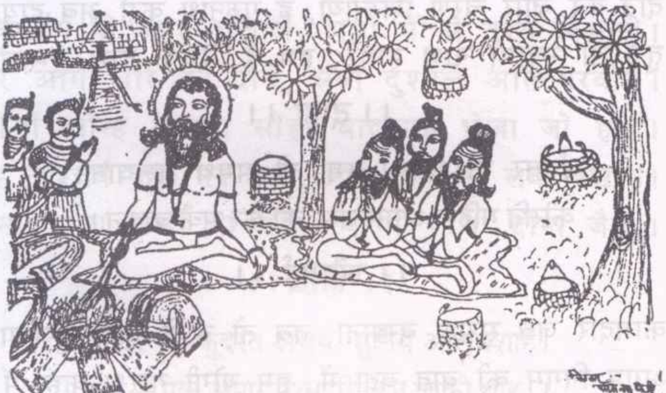

श्री मस्तनाथ जी जलते हुये धूने में से अनेक दुशालें निकाल रहे हैं

।। दोहा ।।

मस्तनाथ त्रिभुवन धनी, दाता हरता शोक।
जो चाहैं सोई करैं, सकै न कोई रोक।।

।। चौपाई ।।

धूनी में से बहुत दुशाले, गुरुनाथ ने तुरत निकाले।
कामदार के आगे डारे, लेओ चीन्ह जो होई तुम्हारे।
कामदार तब देखि लजाया, अपने मन में अति पछताया।
सिद्ध पुरुष का परचा लीन्हा, आपन पाँव काठ में दीना।
योगी रमते किसके मीता, इनसों करिये थोरी प्रीता।
ऊंच नीच कुछ नाहिं विचारैं, जो चाहैं सोई कर डारैं।
दोउ कर जोरि चरण शिरनाया, हे गुरुनाथ करो अब दाया।
तुम तो स्वामी नाथ हमारे, हम हैं सेवक दास तुम्हारे।

।। दोहा ।।

ईश्वर गोरक्षनाथ तुम, हो समर्थ बलवान।
कीरति महिमा अगम जस, को कर सकै बखान।।

।। चौपाई ।।

कामदार जब सुयश बखाना, तब तो बोले नाथ सुजाना।
अगम निगम की बात बता में, हम योगी गोरक्ष कहा में।
बार खूंट में रमते रहैं, बेपरवाह कछू नहिं चहैं।
रंक से राव राव से रंका, छिनमें करैं नहीं कुछ शंका।
आलमशाह भयो है अन्धा, विषय भोग का कीना धन्धा।
लेने कारण ना हम आये, देवे को हमहीं चलि आये।
शोच बिचार नहीं कुछ कीना, है किसमत का बहुतै हीना।
जैसा करै सो तैसा पावै, नाहक बिधना दोष लगावै।

।। दोहा ।।

बचन सत्य तब मानि के, आज्ञा ले सरदार।
लिये दुशाला हाथ में, गया शाह दरबार।।

।। चौपाई ।।

जाय दुशाला आगे धरा, हाथ जोरि के अरजी करा।
सुनिये हजरत बात हमारी, योगी परचा दीनो भारी।
मैंने मांगा एक दुशाला, खुशी हुआ योगी मतवाला।
एक रंग के बहुत दुशाले, धूनी में से तुरत निकाले।
मेरे आगे धरि उन दीने, सबी दुशाले अति परवीने।
लीजो चीन्ह आपना सोई, बादशाह भेजा जो होई।
यह आश्चर्य बहुत मन माना, आदि अन्त लों सबी बखाना।
देखा सुना कधी ना ऐसा, योगी परचा दीना जैसा।

।। दोहा ।।

कादर की कुदरत अजब, सुनिये आलमशाह।
एक से एक अपार सिध, मिले न जाकी थाह।।

।। चौपाई ।।

तब मन अपने शाह बिचारा, सत्य बचन भाषै सरदारा।
सांई औलिया बेपरवाह, चार खूंट में जिनकी चाह।
चरचा करत परस्पर माहीं, मस्तनाथ सम दूजा नाहीं।
शिष्य सकल तब नाथ बुलाये, यथा उचित सबको समुझाये।

उलटा नाद बजाओ योगी, एक बार घनघोर जो होगी।
तब तुम कहना येही होनों, राम खुदाय गये हैं दोनों।
गुरु बचन सबके मन भाया, उलटा नाद तुरन्त बजाया।
राम खुदा यह दोनों गये, योग मुख सों कहते भये।

।। दोहा ।।

एक साथ कहते भये, सब मिल चित्त लगाय।
उठा शब्द घन घोर का, रहा गगन में छाय।।

।। चौपाई ।।

शिष्य एक जो रहा प्रवीना, कीरतनाथ नाम आधीना।
ताने नाद बजाया नाहीं, कछू सोच कीन्हा मनमाहीं।
शिष्य एक तब आन बताया, कीरत ने नहिं नाद बजाया।
गुरु समर्थ ने तुरत बुलायो, शिष्य आन के शीस नवायो।
नाथ कहा सुनु शिष्य बिहूने, क्यों नहिं नाद बजाया तूने।
सबने मेरी आज्ञा मानी, तू मन अपने कैसी ठानी।
कारण कौन आज तुम कीना, देउ बताय मोहिं परवीना।
हाथ जोरि जब सनमुख गया, कारण अपना कहता भया।

।। दोहा ।।

तुम गुरुनाथ कृपाल अति, तुमसे कहूं सुनाय।
संशय मेरे एक मन, दीजै सोइ छुड़ाय।।

।। चौपाई ।।

हिन्दू मुसलमान दोउ दीना, या जग में हैं गे परबीना।

दोउ दीन जब हो गये गौन, दिल्ली राज करैगा कौन।
यह संशय मेरे मन माहीं, ताते नाद बजाया नाहीं।
सो करुणा करि मोहि बताओ, संशय मन की आज मिटाओ।
गुरुनाथ बोले मृदु बानी, सुनो शिष्य यह तुम नहिं जानी।
दिल्ली राज करेगा साहब, जाका तीजा दीन अजायब।
सबी जात में जात समावे, भाव भिन्न अन्तर नहिं लावे।
दोउ दीन पर हुकम करैगा, राजा परजा सबी डरैगा।

।। दोहा ।।

कछु काल बीते अवश्य, होवै दिल्ली राज।
जामें संशय है नहीं, सत्य कहूं मैं आज।।

।। चौपाई ।।

गुरु बचन सत्य कर जाना, सुनिके सकल निश्चय उरआना।
जहं-जहं बचन दिये गुरुनाथा, तहं-तहं सकल भये सुखसाथा।
हैं समर्थ जानत त्रैकाला, दयावन्त सागर प्रतिपाला।
नाथ बिचार किया मन माहीं, रहना यहां उचित अब नाहीं।
ताते चलिये दूसर ठाऊं, अब मैं बार न नेक लगाऊं।
योगी कीन्हा कुंच मुकामा, गढ़ चित्तोर किया बिश्रामा।
योगी रहैं स्वतन्त्र सदाहीं, निर्भय वास करैं बन माहीं।
जीवा जून चराचर जेते, सब पर हुकम अज्ञाबस तेते।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ गुरुदेव को, गोरक्ष कर पहिचान।
जिनके लीला जगत में, महासुखन की खान।।

।। चौपाई ।।

सज्जन सुनो राज का धन्धा, जाविधि भयो शाह है अन्धा।
गुलाम कोकर एक सरदारा, बादशाह का रहा पियारा।
दिल्ली माहिं रहै निशि बासर, हुकम अदल में था अति आगर।
ताने कर बहुत बिपरीती, बादशाह सन करी अनीती।
औसर दैकर हुकम लगाया, बादशाह को पकड़ मंगाया।
खंजर से आंखैं निकसायो, बन्दीखाना, जाय डरायो।
गोरा गदर मिटाया जंगी, दिल्ली राज तब किया फिरंगी।
विदित बात यह है जग माहीं, चरचा जाको है सब ठाहीं।

।। दोहा ।।

राई से परबत करै, परबत राई होय।
यह लीला गुरुनाथ की, जान सकै ना कोय।।

।। चौपाई ।।

सब घट भीतर नाथ निरंजन, दयारूप सागर दुख भंजन।
कोई-कोई सन्त बिवेकी जानै, मूरख नाहिं ताहि पहचानै।
विषय वासना दुख की खानी, बारम्बार करै अज्ञानी।
योगी सदा योग में रहै, दमड़ी चमड़ी दो नहिं चहैं।
माया स्त्री दोउ समाना, जोग भङ्ग में अति बलवाना।
ज्ञानी पुरुष संग ना चहैं, सदा अगोचर निर्भय रहैं।
बाद बिवाद करैं ना कोई, सम दृष्टि जिनकी अति होई।

।। दोहा ।।

हीरा परखे जौहरी, सोना सहज सुनार।
सन्त को परखैं सन्त ही, जो उतरैं भवपार।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत आलमशाह परचा वर्णनोनाम सप्तदशोऽध्याय:।।१७।।

।। दोहा ।।

तुम स्वामी मैं दास हूं, बन्दों चरण तुम्हार।
भवसागर दुख जाल सों, कीजौ मोंको पार।।

।। चौपाई ।।

एक दिवस श्रीनाथ अनूपा, गवन किया कोउ ग्राम यचूपा।
नागा तपस्वी मौनी सन्ता, रहे हाथ जिनके गुणवन्ता।
ग्राम निकट जंगल के माहीं, धूना जाय किया तरु छाहीं।
सुनि मुनि लोग नगर के आये, करि प्रणाम पद शीस नवाये।
देवीदास एक था साधू, बसै नगर बिच सिद्ध अगाधू।
आदर मान भाव बहु तेरा, जिनका निशिदिन रहा घनेरा।
तासों जाय कह्यो पुरबासी, आये ग्राम सन्त सुख रासी।
नागा तपसी दूधा धारी, हैं समर्थ सिधिवर उपकारी।

।। दोहा ।।

पुरबासी उर हर्षि के, सिद्ध शिरोमणि जानि।
करी बड़ाई बहुत सी, कीरति सुयश बखानि।।

।। चौपाई ।।

योगी आये अति मन माने, मुल्क-मुल्क में बहुत बखाने।
जिनका सुयश बखानत देशा, तेई आये नाथ महेशा।
किस विधि करिये मान बड़ाई, उचि होय सो देउ बताई।
देवीदास श्रवण जब कीना, उपज्योखुंस अधिक मति हीना।
पुरवासिन को निकट बुलाये, तिन सबको यह बचन सुनाये।
जाय कहो यह बात बड़ोई, परचा हमें दिखावो कोई।
आदर मान विविध प्रकारा, फिर हम करि हैं अधिक तुम्हारा।
योगी रमता हैं सब ठाहीं, बिन परचा हम मानत नाहीं।

।। दोहा ।।

पुरबासी तब जायके, गुरुनाथ के पास।
कहत भये कर जोरि के, हे दीनबन्धु सुखरास।।

।। चौपाई ।।

तुमतो नाथ शिरोमणि ज्ञानी, सिद्ध पुरुष पूरण जगमानी।
सुनियत देश विदेश पराए, जहं तहं परचा बहुत दिखाए।
पहिले परचा मोको दीजै, मान पान फिर आपन लीजै।
मेटो संशय तुम सब जीके, चरण कमल पुनि पूजैं नीके।

बिन देखे अजमत पुरबासी, सेवा टहल करें नहिं खासी।
इस विधि कहि-कहि सबचलि जाहीं, उपज्यो गर्व अधिक मनमाहीं।
पुरजन सकल महा अज्ञाती, फिर नहिं पूछी बात सुहाती।
तीन दिवस लों सन्त निर्बानी, रहे तहां बिन आदर पानी।

।। दोहा ।।

भक्ति हीन पुर देखि के, सन्तन कियो विचार।
चलिए दूसर ग्राम को, जहं सज्जन हितकार।।

।। चौपाई ।।

गवन समय यक सज्जन आयो, हाथ जोड़ के शीस नवायो।
बोल्यो वचन एक यहि भांती, मालिक ग्राम भयो बिष्याती।
घर-घर ताने हुकम लगाया, परजा को भय अधिक दिखाया।
जो कोई जावे योगी तीरा, ताको त्रास देउं गम्भीरा।
सदन उजार ग्राम के बाहर, दूंगा तुरत निकासि उजागर।
ता कारण तुम्हरे ढिंग माहीं, कोई पुरबासी आये नाहीं।
कृपा आपनी मोंपर करना, चरण शरण नित मोंको रखना।
हों जाहिर दरबार तुम्हारे, क्षमा करौ गुरुनाथ हमारे।

।। दोहा ।।

शिष्य सहित गुरुदेव तब, आन नगर में जाय।
बन एकान्त कोई देखिके, धूना दिया लगाय।।

।। चौपाई ।।

पीछे-पीछे सजन बिचारा, बहुत दूर तक साथ सिधारा।
तब गुरुदेव बचन यह कहा, भक्तिवान सज्जन तैं रहा।

तेरी भक्ति देखि मन मोंदा, रंक से राव सजन तैं होंदा।
जेता धन तेरे गृह होई, आन नगर में धरिदे सोई।
यह नगरी है दुष्ट अभागी, बार-बार लागैगी आगी।
सज्जन बचन सुनत यही भांति, करि प्रणाम तब चला सुहाती।
करत बिचार हृदय बिच नाना, नगर लोग हैं दुष्ट अजाना।
साधु निरादर बिपता भारी, वेद पुराण सोई कहत पुकारी।

।। दोहा ।।

ग्राम निकट तब जायके, बैठयो तरुवर छांह।
यहं देखा दृष्टांत यह, अद्‌भुत मारग मांह।।

।। चौपाई ।।

देखी जात एक मंजारी, पुरसों बाहर अती दुखारी।
मुख में दाबे निज सुत अपना, अगम बिचार नाथ की रचना।
सेवक यह दृष्टांत अजूबा, देखि बिचार किया मन सूबा।
ऋषि मुनि ज्ञानी कहत पुकारे, भावी बिपता टरत नहिं टारे।
कोबिद पंडित बुद्धिजन राजा, समय विचारि करत हैं काजा।
कोटि-कोटि कोउ जतन करावे, गया वक्त फिर हाथ न आवे।
भाषत मुनिवर वेद पुराना, औसर चूके है पछिताना।
ताते करिये बेगि उपाई, जो गुरुदेव कहा समुझाई।

।। दोहा ।।

अगम देखि दृष्टांत यह, सेवक निश्चय जान।
बेगि गया पुर माहिं तब, जहं तहं करत बखान।।

।। चौपाई ।।

पुर पर आई बिपता भारी, सुनो सकल मेरे हितकारी।
मंजारी मुख में सुत दाबे, पुर सों बाहर गई है धावे।
यह देखा अचरज अंकूला, सो मैं कहा विपति का मूला।
जो तुम चाहो निज कल्याना, आन नगर धन करो पयाना।
एता कहि निज सुत बुलवाया, भली-भांति ताको समझाया।
करि-करि सुमती विविध प्रकारा, लागे ढोवन धन तेहि बारा।
ढोवत माल देखि पुरबासी, आनि करी तब मिलके हांसी।
क्या तू भया दिवाना खासा, जो निज हाथ उजारत बासा।

।। दोहा ।।

अटपट बोलत बचन सब, करत बहुत उपहास।
सज्जन सुनि-सुनि बात यह, मन में होत उदास।।

।। चौपाई ।।

आवत शीस विपत की खानी, बिसरजात तब सुधि बुधिवानी।
दशकंधर मन्दोदरि राया, कौरव ब्यास बहुत समझाया।
भावी बिवस कही ना मानी, राजबंस बिनसे जग जानी।
धन अरु माल सहित परिवारा, आन नगर बिच सकल पधारा।
होत प्रात घर-घर सब ठाहीं, लै-लै पशू गये बन माहीं।
इक नगरी बिच पावक लागी, अगिनि ज्वाल जहं तहं से जागी।
देखी ज्वाल नगर सब धाये, कलश नीर जहं तहं ढरकाये।
कीन्हे यत्न अनेक प्रकारा, कारज सरा न एकौ बारा।

।। दोहा ।।

चहुंदिशि पवन झकोर तब, लगा चलन तेहि ठांह।
अगिनि ज्वाल गम्भीर तब, पहुंची घर-घर मांह।।

।। चौपाई ।।

देखि-देखि भय ज्वाल निहारै, मात-पिता सुत बन्धु पुकारै।
रुदन करत पग मही घसीटत, आपन शीस आपही पीटत।
रोवत पीटत नर अरु नारी, देवीदास पहं गये दुखारी।
यहि औसर तुम होउ सहाई, चरण कमल तुम्हरे बल जाई।
परि-परि चरण शिर धूरि लगावें, रोय-रोय दुख बहुत सुनावें।
पान फूल से चरण पुजाये, अन्त समय यह दुःख दिखाये।
तन मन से हम कीनी सेवा, सिद्ध शिरोमणि जान अभेवा।
सेवक हम सब रहे तुम्हारे, अब नहिं होत सहाय हमारे।

।। दोहा ।।

अग्नि बुझाई न बुझी, चला ना एको तन्त्र।
सादिक पूंछा सिद्ध से, कहां गये वे मन्त्र।।

।। चौपाई ।।

देवीदास लज्जित अति होई, नगर लोग देखा सब कोई।
गये बहुरि सब निज-निज ठामा, कहैं परस्पर कोपे रामा।
धन अरु माल जरा बहुतेरा, भए निहाल देख नर डेरा।
सज्जन लौट ग्राम को आया, देखा नगर लोग दुख पाया।

कहें परस्पर दै दै झोंपा, मस्तनाथ हैं योगी कोपा।
युक्ति-युक्ति सों ताहिं मनाओ, जे सुख बेगि बहुरि तुम पाओ।
मोंपर कृपा करी गुरुराया, अग्नि बिपति सों हमें बचाया।
तुम सब गर्व कियो बिकराला, ताको फल पाया ततकाला।

।। दोहा ।।

चरण सेई हित आपनो, करलो पूरण आस।
नाथ निरंजन जगतपति, काटैंगे सब त्रास।।

।। चौपाई ।।

योगी कोप महा दुखदाई, चौदह भुवन देत थर्राई।
सागर पर्वत छिन में जारै, कोप किये परलौ करि डारै।
अगिनी तेज सीत कर राखै, कालहि जीत ब्रह्मरस चाखै।
राई परबत परबत राई, करि-करि छिन में देत दिखाई।
सूखी नदिया नीर बहावै, बिन बादल जल को बरसावै।
तीनि लोक का करता योगी, सदा अकाल ब्रह्मरस भोगी।
असंख्य कल्प मन्वन्तर ताईं, योगी जन्म लेत हैं नाहीं।
रहत अकाल काल ना जाके, अष्ट सिद्धि आज्ञा बस ताके।

।। दोहा ।।

सोच समुझि पुरलोग तब, सुमति कियो अंकूल।
सन्त निरादर हम कियो, भई हमारी भूल।।

।। चौपाई ।।

ले-ले मेवा पान सुपारी, चले सकल मिलि नर अरुनारी।

पहुंचे जाय बेगि तेहि ठाहीं, मस्तनाथ जहं थे सिध साईं।
पूजे चरण महासुख द्वारा, विनय सुनाई बिविध प्रकारा।
भये प्रसन्न नाथ जगदीसा, सुख संपति का दिया अशीसा।
आये बहुरि सकल निज सदना, हो गई आनन्द गई कल्पना।
कछुक दिवस पाछे सुखदाई, घर-घर जिनके सम्पत्ति छाई।
गुण यश गावें बहुत अनन्दा, धर्म कर्म बिच भये सुखदा।
नाथ चरण भजिले दिन राती, महासुखन के सागर स्वाती।

।। दोहा ।।

श्री चेतनाथ सतगुरु सदा, हंस बंस के ईस।
शंकर पाये भाग से, पद निर्मल बकशीस।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत अगम दृष्टांत वर्णनो नाम अष्टदशोऽध्यायः।।१८।।

।। दोहा ।।

दीनानाथ दयाल तुम, मैं बिनवत हूं तोहिं।
विषय दुःख जंजाल सों, सदा बचाओ मोहिं।।

।। चौपाई ।।

नाथ निरंजन सब सुखरासी, अजर अमर पूरण अविनासी।
अगम अनादि पुरुष निर्वाना, एक बुन्दसों रच्यो जहाना।

स्थावर जंगम रूप बनाये, निर्गुण से सरगुण कहलाये।
जोत स्वरूप अगम पुर आसन, ब्रह्म कला भरपूर सनातन।
सहस कमल पर ब्रह्म की कला, झिलमिल झलके नूर निर्मला।
गैबी अनहद बाजै द्वारा, रूम-रूम सोहं झनकारा।
सुरत निरत कर अंभो याले, पवित्र सन्त होत मतवाले।
गगन मण्डल बिच ऊधमुख कुआ, साहब सन्त एक जहं हुआ।

।। दोहा ।।

सतगुरु पूरा खोज के, गही अगम की बाट।
अमरापुर साहब बसे, त्रिवेणी के घाट।।

।। चौपाई ।।

योगी योग कला भरपूरा, अष्ट सिद्ध सब रहै हजूरा।
निर अभिलाष चाह नहिं जाके, चौदह भुवन अदल बस ताके।
जो चाहै सो करै तुरन्ता, निर्भय रहै मिलै नहिं अन्ता।
सो दृष्टाँत कहूं मैं समझाई, सज्जन सुनो सकल चितलाई।
नाथ चरित्र बिचित्र बड़ोई, श्रवण करे अति अचरच होई।
बीकानेर शहर अति भारी, जहां बसै भूपति बलकारी।
महा बिचित्र देव स्थाना, सुमन बाटिका शोभित नाना।
दया धरम जहं अति अधिकाई, सुख सम्पत्ति जिनके ग्रह छाई।

।। दोहा ।।

नगरी अगरी बहुत है, गुलजारी सरसात।
शोभा सुन्दर ललित छबि, कवि बरनत सकुचात।।

।। चौपाई ।।

नगर नरेश गजसिंह राजा, रहा एक जहं अति सिरताजा।
अति सुशील गुणवान विवेका, सर्व चराचर जाने एका।
दया धरम रति अति उर धरज़ा, बसै कुशल सो जाकी परजा।
अन्त समय भूपत चितलाये, राजा मन्त्री सबी बुलाये।
सूरतसिंह को गादी दीना, आपन बास स्वर्ग का कीना।
राज सिंहासन कुंअर बिराजे, चहुंदिशि मंगल बाजन बाजे।
भई धूम जह तहं अति भारी, राज दुवार मङ्गलाचारी।
अन धन कंचन दान दक्षिणा, दिया भूप हिय हर्षिं वादिना।

।। दोहा ।।

भूपति मोद बढ़ाय के, करिकै बहुत विचार।
उत्तम-उत्तम सब किये, राज काज ब्योहार।।

।। चौपाई ।।

भूप कहा मन्त्री यहि बारी, ब्रह्मभोज की करो तयारी।
अटक नहिं कुछ होवै जामें, साधू सन्त षटदर्शन आमें।
चातुर मन्त्री विविध प्रकारा, लै सामान अधिक यकबारा।
नाड़म बाग बीच धर दीना, चौकी पहरा बहु बिध कीना।
तहं-तहं ब्राह्मण नौत बुलाये, शहर नगर के सबही आये।
साधु सन्त आय बहु तेरे, राज बाग में कीने डेरे।
चहुं दिशि होय मंगलाचारी, चढ़े कड़ाह माल के भारी।
रुचि-रुचि ब्राह्मण करैं रसोई, देख-देख हर्षित अति होई।

।। दोहा ।।

मोहन हलवा तसमई, षटरस बिविध प्रकार।
रुचि-रुचि ब्यंजन अति घने, होन लगे तइयार।।

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ सतगुरु अभिरामा, जात रहे कोइ दूसर ठामा।
मारग माहिं मिला यक पाली, ताने हाल कियो ततकाली।
नीमड़बा बाग भूप अरु रानी, ब्रह्मभोज यज्ञ यक ठानी।
बड़-बड़ सिद्ध महात्मा आये, बाग नीमड़ी डेरा पाये।
यज्ञ भीर बरणी नहिं जावे, राज नगर शोभा अति पावे।
पाली बचन सुनत गुरु साईं, देखन चले यज्ञ तेहिं ठाईं।
नगर निकट उष्ट पग हाड़ा, देखा एक पड़ा है जाड़ा।
रूपनाथ शिष्य आधीना, जिनके साथ रहा परवीना।

।। दोहा ।।

हुकम दिया गुरुदेव तब, शिष्य सुनी यह बात।
हाड़ उठाय कांधे धरो, ह्वै अशंक मन गात।

।। चौपाई ।।

रूपनाथ शिष्य आधीना, हाड़ उठाय कांध धर लीना।
आगे-आगे गुरु दयाला, पाछे-पाछे शिष्य बिशाला।
पहिले नगर मंझाया सारा, फिर तो गये यज्ञ के द्वारा।
देखी भीर बहुत है भारी, हर्षित होकर चले अगारी।
देखा यक कड़ाह है भारी, माल भोग सीजत अधिकारी।

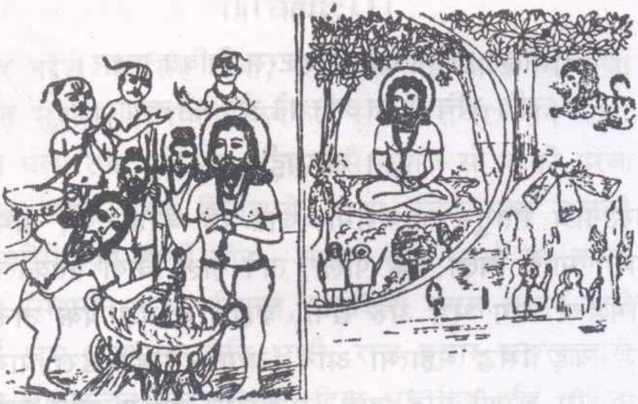

बाबा मस्तनाथ जी ने खीर के कड़ाह में ऊँट का हाड़ डलवा दिया और निकालने पर वही हाड़ सोना हो गया

मस्तनाथ बोले तेहि बारा, सुनो शिष्य यह बचन हमारा।
उष्ट हाड़ जो तेरे पासा, सो कड़ाह में डारु खुलासा।
निर्भय होकर शिष्य बिचारा, हाड़ उतार कड़ाह में डारा।

।। दोहा ।।

शिष्य सहित गुरुदेव तब, ग्राम से बाहर जाय।
बड़ तरुवर की छांह में, धूना लिया लगाय।।

।। चौपाई ।।

डारत हाड़ बिप्र जब देखा, भये उदास सकल द्विज भेखा।
भई भ्रष्ट यह राज रसोई, कहैं परस्पर क्षोभित होई।

जीमन योग्य रहे नहिं बिंजन, छांड़ि दिये तुरतै सब बिप्रन।
सुनि-सुनि चरचा यह सब ठाहीं, उपजा शोक सकल उरमाहीं।
कैसा योगी रहा दिवाना, किये भ्रष्ट बिंजन सब नाना।
साधु करम ऐसा नहिं होवे, धर्म त्याग अपयश को बोवे।
देखि रसोई शोक बढ़ावे, खोंट बचन सब बिप्र सुनावें।
सुमिरन कर-कर योगी गाढ़े, कोई-कोई हंसत परस्पर ठाढ़े।

।। दोहा ।।

मन्त्री भूपति पास तब, कहा हाल समुझाय।
यज्ञ रसोई छूत भई, अब क्या कीजै राय।।

।। चौपाई ।।

साधू एक दिवाना आया, ताने हाड़ कड़ाह डराया।
बिप्रन छांड़ि रसोई दीना, वृथा भया सब माल नवीना।
भूपति सुनि के अति पछताया, ऐसा योगी कहां से आया।
षट दर्शन तुरतै बुलवायो, पूंछा साधू हाल बतायो।
कहा सकल रमता है योगी, मस्तनाथ शुभ नाम अशोगी।
भूप कहा हम दंड करेंगे, राजनीत कर नाहिं डरैंगे।
धर्म सनातन जग मरजादा, सो हम पालत राखत जादा।
ऐता बचन कहा परवीना, बोलि सिपाही हुकम जो दीना।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ योगी यहां, रमता है कोई एक।
ताको लाओ पकड़िके, करो मत देरी नेक।।

।। चौपाई ।।

खोजत-खोजत चले सिपाही, डगर मिला तब सुन्दर राही।
पूंछत कहा सुनो यह लेखा, पुर सों बाहर योगी देखा।
गये सिपाही पुर सों बाहर, तरुवर नीचे देखा जाहर।
निकट गये तब सिंह का रूपा, देखा सबहूं अजब अनूपा।
उपज्यो भीत बहुत दरगाही, लागे कम्पन गात सिपाही।
सकल बिलोकि लौटि के भागे, जाय कहा भूपति के आगे।
दूर खड़े ह्वै देखूं योगी, निकट जाऊं तो सिंह बिरोगी।
है अचरज मोकों बड़ भारी, कैसे लाऊं पकरि अगारी।

।। दोहा ।।

राजा कहा दीवान से, तुम जाओ तत्काल।
बेगि सुनावो आनि के, कैसा है यह हाल।।

।। चौपाई ।।

भक्ति सहित दीवान सिधारा, फल अरू फूल लिए तेहि बारा।
तेजवान योगी सिधराया, देख्यो बैठे तरुवर छाया।
बड़-बड़ नेत्र कपाल का ऊंचा, भारी गात सकल है सूंचा।
द्वै कर जोरि चरण शिरनाये, चरण पुष्प दीवान चढ़ाये।
बड़ी कृपा तुम मोंपर कीनी, दर्शन दै बिपता हर लीनी।
तुम गुरु मोकों आज उबारे, जन्म कृतारथ करे हमारे।
आज सुफल मेरे सब काजा, जो दर्शन दीनो महाराजा।
विनय सुनाई बिविध प्रकारा, राजा पास दिवान सिधारा।

।। दोहा ।।

कहत भया समुझाय के, सुनो बात महाराज।
योगी है सिद्ध औलिया, तेजवान सिर ताज।।

।। चौपाई ।।

कहत सकल मैं बचन अशोगा, यह तो योगी दरशन योगा।
आया नगर भाग से कोई, योगी सिद्ध औलिया होई।
राजा कहा जो ऐसा स्वामी, चलिके दरश करूं सुख गामी।
पूजा भेंट बहुत विधि नाना, लेकर संग गया तब राना।
शीस नवाय भेंट धरि दीनी, द्वै कर जोरि के स्तुती कीनी।
नवन सहित पूंछा गुरुराया, काहे हाड़ कड़ाह डराया।
यज्ञ रसोई नाथ बिगारा, उचित नाहीं था यहि बारा।
बोले नाथ बचन रस साना, भूपति हाल नहीं तुम जाना।

।। दोहा ।।

यज्ञ रसोई तुम देई, विप्रन को हर्षाय।
हम दीनी है दक्षिना, देखो तामें जाय।।

।। चौपाई ।।

करि आदेश भूप तेहि ठामा, देखन चला यज्ञ सुखधामा।
बिप्र तुरत तब हाड़ निकारा, देखा कंचन हैगा सारा।
करता खेल कहा दहुं होना, हाड़ पलट के कीना सोना।
पुनि-पुनि सुमरैं नाथ पदराजा, आश्चर्य सबके मन उपाजा।

देखि देखि सब कहैं बिशाला, योगी है यह अजमत वाला।
सुनि-सुनि लोग नगर के धाये, कंचन हाड़ देखन तहं आये।
षट दरशन सुनि बहुत सराहैं, करी अभिलाष दरस सब चाहैं।
ऐसा यागी दुर्लभ भाई, जाकी पूरण भई कमाई।

।। दोहा ।।

धन-धन योगी नाथ है, ब्रह्म कला परवीन।
तीन लोक चौदह भुवन, जिनके बस आधीन।।

।। चौपाई ।।

नगर माहिं यह घर-घर चरचा, अचरज मानैं सुन-सुन परचा।
पान फूल फल बहुत अनन्दा, दूध दही घृत मिसरी कन्दा।
औरी बस्तु अनेक प्रकारा, लै-लै लोग चले यकबारा।
आये सकल जहां सिधराई, नाथ चरण पूजे सुखदाई।
सुनि-सुनि आवें नर अरू नारी, होत भीर जहं अति बड़भारी।
गुणयश कीरति अधिक बखानैं, जन्म सुफल करि अपनो जानैं।
बार-बार निरखें गुरु मूरति, पुलकित गात चरण हिय चूमति।
बहुत प्रेम सों निज-निज हाथे, लै-लै धूरि लगावें माथे।

।। दोहा ।।

छांड़ि भर्मना दूर की, भूला नर तू जाग।
सन्त जहां तीरथ तहां, पुष्कर और पराग।।

।। चौपाई ।।

रूपनाथ बालापन माहीं, रहा बिवाहा सो तोहि ठाहीं।

ताकी स्त्री मुनि बिपुलाई, गुरुनाथ पहं दौरी आई।
हाथ जोरि कर करि आधीनी, बात कही यह परम प्रवीनी।
यह जो शिष्य चरण का चेरा, बालापन का है पति मेरा।
करम बिवस यह जग संसारा, मोहिं त्यागी इन योग सम्हारा।
धनसम्पति कुछ गृह नाहिं डारा, किस विधि होवै उमर गुजारा।
नाथ कृपालु महाबुध धीरा, देखा आगे धरा मतीरा।
ताहि उठाय नारि को दीना, उमर गुजारा करु परवीना।

।। दोहा ।।

नारि मतीरा को छल, घर जब पहुंची जाय।
दीना धरि यक ताक में, मनकी मोद बढ़ाय।।

।। चौपाई ।।

नाथ सुमिरि के बहुत करारी, जाय मतीरा फोरा नारी।
जेते बीजा सो सब मोती, नारि बिलोकि खुशी अति होती।
नाथ कृपा तुम मोंपर कीनी, भली भांति प्रभुता यह दीनी।
धनि-धनि भाग आजु है मेरा, सकल दरिद्र हुए जनकेरा।
जहं तहं खबर गई यह सारी, अचरज मान्यो नर अरु नारी।
जा पर करैं गुरु साईं, देत अभय पद ऊंच समाई।
नाथ अनाथन के रखवारे, वांछित फल देवन हारे।
जन प्रतिपालक पूरण दाता, अति समर्थ गुरुदेव विधाता।

।। दोहा ।।

जात लखी नहिं गति कछू, मुनिवर कहत पुकार।
नाथ चरित्र विचित्र है, लीला अपरमपार।।

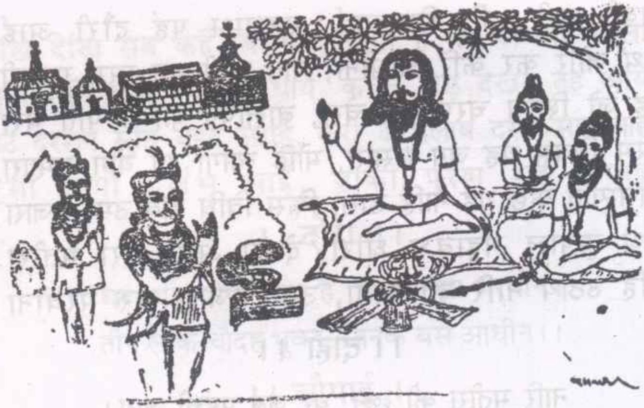

महाराजा सूरतसिंह द्वारा थेड़ी ग्राम श्रीनाथ जी को सप्रेम भेंट

।। चौपाई ।।

भूपति गया नाथ के तीरा, जाय कह्यो यह बचन गंभीरा।
राज परगना लीजै स्वामी, पान फूल यह सदा मुदामी।
यही ठौर सुखन के मूला, करिये बास सदा अनुकूला।
नाथ कहा हम रमता राही, राज परगना ना कुछ चाही।
राज करो तुम कुशल सदाई, हुकम चलै तुमरा सब ठाई।
निर्भय रहो करो मत चिन्ता, राज धर्म यह बढ़ै अनन्ता।
साधु सन्त बिप्रन की सेवा, करते रहना सदा अभेवा।
नाथ दियो उपदेश अनूपा, भयो कृतारथ ताछिन भूपा।

।। दोहा ।।

पूरण आशिरवाद ले, करि अस्तुत सुखजान।
द्वै कर जोरि नवाय शिर, भूपति गया मकान।।

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ गुरुदेव महेशा, रमता भये बहुरि कोई देशा।
कछुक दिवस पाछे सुख धामा, श्री तोतानाथ गये तेहि ठामा।
ये भी सिद्ध योग के पूरे, श्री मस्तनाथ के चेला सूरे।
हंस वंश कुलदीप उजागर, अगम अपार ज्ञान के सागर।
दयावन्त आनन्द स्वरूपी, जन के पालक सदा अनूपी।
थे सरनाम बहुत सब ठाहीं, गुण यश कीरति महिमा माहीं।
कुछ चरचा इनहूं दिखलाया, सूरतसिंह भूप तब आया।
द्वै कर जोरि चरण करि सेवन, विधिपूर्वक फिर करी निवेदन।

।। दोहा ।।

कृपा करी गुरुदेव तुम, उपजा ज्ञान बैराग।
दरशन दे पावन कियो, धन-धन मेरे भाग।।

।। चौपाई ।।

बार-बार भूपति कर जोरत, करि-करि बन्दन बहुत निहोरत।
कहा प्रेम सों हे गुरुराया, सदा करो हम पर तुम दाया।
थेड़ी ग्राम एक हम दीना, दूध पियन को परम प्रवीना।
सन्त बैठि तहं तपैंगे नाना, राज देश होवै कल्याना।
देखि-देखि पद प्रेम अनन्ता, नाथ किया मंजूर तुरन्ता।
भूपति लिखत तुरत कर दिया, शिष्य पर शिष्य बंशलों किया।
अजमति देखि सूरतसिंह भूपा, थेड़ी ग्राम तब दियो अनूपा।
यह परसिद्ध बात सब ठाई, कहूं सांच बिर्था कुछ नाहीं।

।। दोहा ।।

नाथ निरंजन दुख हरन, भव भंजन सुख रास।
गुणातीत निर्गुंण सदा, परम बिभू परकाल।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत बचन सिद्धि वर्णनो नाम एकानविंशतिऽध्यायः।।१९।।

।। दोहा ।।

बार-बार सुमिरन करूं, चरण कमल चितलाय।
श्रीमस्तनाथ सतगुरु सदा, जन पर होउ सहाय।।

।। चौपाई ।।

गुरुदेव सदा हमरे सिर ताजा, बिन गुरु कृपा सरै नहिं काजा।
निशिदिन करिये गुरु की पूजा, गुरुसम और नाहिं कोउ दूजा।
चरण छांड़ि कहुँ अन्त न जइये, शरण सदा गुरु ही के रहिये।
गुरु से मिलै तत्व निर्बाना, बिन गुरु मूरख अन्धस माना।
तन मन धन सब अरपन कीजै, करि प्रसन्न प्रेम रस पीजै।
गुरु की महिमा वेद बखानी, गुरु निंदे मूरख अज्ञानी।
गुरु निंदा सम पाप न होई, वेद पुराण कहत सब कोई।
आवागमन महा दुख जावे, गुरु प्रताप अमर पद पावे।

।। दोहा ।।

तातै गुरु की सेवना, कीजै मन चित लाय।
जिनकी करुणा दृष्टि सों, सहज पार हो जाय।।

।। चौपाई ।।

अचरावल एक ग्राम पुनीता, बसै भूप जहं नीत सहीता।
ताको कुछ परचा दिखलाया, भूप आनि तब भेंट चढ़ाया।
मस्तनाथ गुरु दया स्वरूपी, जन के पालक महा अनूपी।
सबी भेष से जियावे कोई, ऐसी अजमत जामें होई।
मुरदा मरा जियावे कोई, ऐसी अजमत जामें होई।
योगी सुनि अस देव जुआबा, सामर्थवान तुम्हीं हो बाबा।
जो चाहैं सोई कर डारो, चाहों जियावों चाहों मारो।
हम सब हैंगे दास तुम्हारे, सेवा टहल बंदगी वारे।

।। दोहा ।।

सुनि के बोले बचन तब, मस्तनाथ सुखरास।
गऊ धसी यक गार में, कहो तो लेंइ निकास।।

।। चौपाई ।।

गुरुनाथ तुम बड़े दयालू, निशि बासर सबके प्रतिपालू।
बेगि निकासो करो न देरी, बिनय सुनो तुम अब यह मेरी।
किसकी गऊ कौन सा गारा, धंसी कहां सो करो उबारा।
कृपा आपनी मोपर कीजै, हाल बताया बेगि अब दीजै।
सतगुरु कहा सुनो तुम योगी, सत्य कहूँ मैं सो सब होगी।

जालोर किला यक बहुत बखाना, जोधपुर राजा का थाना।
ऊँचे बुरजन पर अति आगर, तोपें चढ़ी रहैं निशिबासर।
लशाकर फौज जहां बहुतेरा, चौकी पहरा रहत घनेरा।

।। दोहा ।।

अनासुरत संजोग से, बीच कला जालोर।
जाय फंसा यकबारगी, मानसिंह तेहि ठौर।।

।। चौपाई ।।

भीमसिंह भूपति बल जोरा, जोधपुर का रहा कठोरा।
भाई बन्धु राज हक दारा, ढूंढि-ढूंढि के करै असारा।
धेरा दे-दे पकर मंगावै, सबके शीस द्वार कटवावैं।
मानसिंह यक बाकी रहा, ताहू का शिर काटन चहा।
सो भी आयो घेरे माहीं, बंधन अधिक तहां पर जाहीं।
अति अधीन ह्वै परबस पड़ा, चौकी पहरा चहुंदिस खड़ा।
सो वह मोंको सुमरन करै, चरण कमल मेरे चित धरै।
ताहि अवश्य मैं जाय उबारों, सकल बिपत को तुरत बिडारों।

।। दोहा ।।

सतगुरु नाथ दयाल अति, ह्वै प्रसन्न हर्षाय।
जो कुछ पूंछा शिष्य था, दीनो सकल बताय।।

।। चौपाई ।।

श्रीमस्तनाथ साईं कृपाला, शहर जोधपुर गये ततकाला।

बाबा वाली एक डेकरी, बहुत बखानी रही आगरी।
तापर आसन जाय लगाया, लोग सभी सुनके जहं आया।
रहे शिष्य संग बहुतेरे, सेवा टहल बन्दगी केरे।
जहं-जहं गये चरण गुरुनाथा, तहं-तहं रिद सिद पहुंचै साथा।
हैं समर्थ अति बाबा साहब, जिनकी लीला बहुत अजायब।
हैं प्रसिद्ध सिद्ध जग माहीं, मनबांछित फल देत सदाहीं।
अन्तरयामी ब्रह्म स्वरूपा, घट-घट ब्यापक नाथ अनूपा।

।। दोहा ।।

खाते पीते सोवते, बैठे चलते माहिं।
सुमरन करलो नाथ का, भूलरे कोऊ नाहिं।।

।। चौपाई ।।

भीमसिंह ने हुकम लगाया, सूरबीर सरदार बुलाया।
सबको दीना हुकम कठोरा, भुजबल राजनीत का जोरा।
तुम सब लश्कर लेकर जाओ, जालोर किलाय फते कराओ।
मानसिंह को पकड़ ले आना, शत्रु मेरा है मन माना।
राज काज का कटिहै लटका, निशिदिन मोकों रहता खटका।
निर्भय राज करन नहिं पाऊं, सकल करो जेहि भांति बताऊं।
जो तुम किला फते कर लाओ, बहुत इनाम राज से पाओ।
इज्जत सबकी करूं सवाई, ओहदा सबका देऊं बढ़ाई।

।। दोहा ।।

भूपति कठिन कठोर यक, औधक दीनी खींच।
किला फते कर लाओ तुम, सात दिवस के बीच।।

।। चौपाई ।।

तुरही बिगुल बजी घन घोरा, दल बिच खबर भई चहुं ओरा।
साजि-साजि के सब सरदारा, ले-ले फौज चले यकबारा।
किया जाय जालोर मुकामा, चहुं दिशि घेर लिये सब ठामा।
कोई-कोई बुद्धिवान सरदारा, मानसिंह को चहत न मारा।
तासो ढील युद्ध में कीनी, मानसिंह को खबर जो दीनी।
राजा तुमको चाहत मारा, भेजी फौज साजि सरदारा।
करो बचाओ अपना सोई, जा विधि उचित तुमको होई।
भूपति कठिन करार कराया, सप्त दिवस औधक बधि आया।

।। दोहा ।।

मानो मेरा वचन सत, हूजौ तुम हुशियार।
युगती सोई कीजियो, जा विधि होय उबार।।

।। चौपाई ।।

मानसिंह सुनि के घबराया, बिधना कैसा दिवस दिखाया।
कसि-कसि कमर बांधि हथियारा, हाथ खरग ले करत बिचारा।
नाहिं बारूद नाहिं हैं गोला, खान पान लीन्हे नहिं मोला।
किस विधि युद्ध करूं यहि बारी, हे गुरुनाथ अलख औतारी।
यहि औसर तुम आनि उबारौ, भुजबल का मोहिं देहु सहारौ।
तुम बिन और नाहिं कोउ मेरा, चरण कमल का हूं मैं चेरा।
शरण तुम्हारे आयो नाथा, मेरी लाज तुम्हारे हाथा।
बार-बार सुमिरत यहि भांती, सेवा करूं नाथ दिन राती।

।। दोहा ।।

बिपत बिदारन दुख हरन, भव भंजन सुखरास।
भक्त बछल गुरुनाथ जी, आये ताके पास।।

।। चौपाई ।।

बीत दिवस रैन जब आई, एक जाम से अधिक सवाई।
बांधि कमर करि बहुत समाजा, कुछ सौवै कुछ जागै राजा।
ऊंचा बुरज किला के माहीं, रहा एक सुन्दर तेहि ठाहीं।
ता ऊपर बहुतै सुख साजे, आनि तहां श्री नाथ बिराजे।
तीन लोक के दाता दानी, बोले नाथ अमृत की बानी।

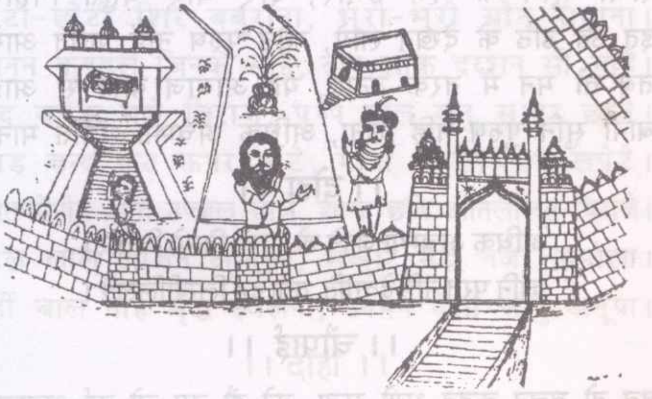

श्री मस्तनाथ जी जालौर के किले में

ऊंचे स्वर से देत अवाजा, मानसिंह सुनियो तुम राजा।
खोलि कमर तुम निर्भय थाको, तोपों पर हुशियारी राखो।
तीजे दिन पर तिलक चढ़ैगा, जोधपुर का राज मिलैगा।

।। दोहा ।।

मानसिंह यह बचन सुनि, नेत्र दिये तब खोल।
इत उत लागे देखने, किसका है यह बोल।।

।। चौपाई ।।

जब नहिं कोऊ पुरुष दिखाना, लागे सोवन फेर सुजाना।
कछू देर बीती जब रैना, भये उनींदे तब दोऊ नैना।
गुरुनाथ जगपति सुखदाई, अमृत बानी फेर सुनाई।
कही रही जो प्रथमै बारा, सोई कही फेर दूबारा।
राजा सुनि के नेत्र उघारे, दाएं बाएं बहुत निहारे।
इत उत उठि के देखन लागे, कोउ पुरुष नहिं पावत आगे।
तब तो मन में तरक उठाई, यह आवाज कहां से आई।
बानी सुनि पुरुष नहिं जाना, अधिक अचम्भा भूपति माना।

।। दोहा ।।

अधिक अचम्भा जानि के, राजा कियो बिचार।
जानि परत नहिं देवगति, क्या दहूं लिखीलिलार।

।। चौपाई ।।

तब तो बचन कहत भयो राजा, को हौ तुम जो दई अवाजा।
कै हौ ब्रह्मा कै हौ विष्णू, कै हौ शंकर रामा किष्णू।
कै हौ प्रेता कै हौ भूता, कै हौ जिन्द पीर अवधूता।
कै हौ मच्छा कै हौ कच्छा, कै हौ किन्नर कै हौ जच्छा।
कै हौ खेचर कै हौ भूचर, कै हौ नभचर दीजौ ऊतर।

कै हौ मानुष कै हौ देवा, दीजौ मोंको अपना भेवा।
कौन देव गोप तुम राखो, सांची-सांची मोंसन भाखो।
हे महाराज कृपा तुम कीजो, प्रगट आनिके दरशन दीजो।

।। दोहा ।।

सुनत बचन यहि भांति जब, श्रीनाथ कृपाल।
प्रगट मूरती धार के, आइ गये ततकाल।।

।। चौपाई ।।

भस्म अंग आखंड लगाये, श्रीनाथ शोभा अति पाये।
छोटी-छोटी शिर बबुराना, भूरी-भूरी सोन समाना।
कानन कुण्डल जिनके सोहै, तीन लोक दरशन सों मोहै।
नाद जनेऊ गले बिराजै, पुष्प माल जनु सुन्दर छाजै।
आड बन्द कट ऊपर फेंटे, मानों काला नाग लपेटे।
श्वेतकोपीन अति उज्जल छाजै, शोभा छबि अतिललित बिराजै।
लाल-लाल लोचन अंकूला, भृकुटि मद्धे नजर अमोला।
नहीं बाल नहिं बृद्ध स्वरूपा, उनमन ऐसी जानु अनूपा।

।। दोहा ।।

सूरत-सूरत सोहनी, सुघरी मधुरी बान।
सन्मुख अपने देखिके, मान भया कुरबान।।

।। चौपाई ।।

द्वै कर जोर चरण शिरनाया, करि अस्तुत बहुतै हर्षाया।

दरशन दै कृतार्थ मोहिं कीना, संकट दु:ख सकल हरलीना।
कहं लग महिमा करूं बड़ाई, शेष सहस मुख सकत न गाई।
सुनि-सुनि बिनय प्रसन्न भये नाथा, बोले बचन अमृतरस साथा।
पूरण हुवे तुम्हारे काजा, निर्भय हरो सदा तुम राजा।
तीजे दिन पर तिलक चढ़ैगा, जोधपुर का राज मिलैगा।
धर्म कर्म नित हो अधिकाई, गुण यश कीरत बढ़ै सवाई।
राजा सुनिके शीस नवाया, द्वै कर जोड़ि कह्यो सुनुराया।

।। दोहा ।।

घट-घट ब्यापक अलख तुम, हौ पालक श्रीनाथ।
कृपा तुम्हारी चाहिये, मों ऊपर सुख साथ।।

।। चौपाई ।।

हे गुरुनाथ भक्त हितकारी, कीरति महिमा अधिक तुम्हारी।
ब्रह्मादिक सेवें नित चरना, तीन लोक के तुम दुख हरना।
सकल बिपति गुरुनाथ कहूंगा, तीन दिवस केहि भांति रहूंगा।
दाना पानी का अति तोड़ा, भूखो प्यासे हाथी घोड़ा।
राजा चहुंदिस घेर लगाओ, हाट बाट सब ही रुकवायो।
नौकर चाकर दास तुम्हारे, दुखी रहत बिन अन्न बिचारे।
तुम बिन और नाहिं कोउ मेरा, जो सहाय होवै यहि बेरा।
सो तुम बिपति हरो सब मेरी, कृपा अपनी करो घनेरी।

।। दोहा ।।

बोले नाथ कृपालु तब, सुनु राजा यह बात।
बिपति बिदारूं दुख हरूं, करौं सुखी दिन रात।।

।। चौपाई ।।

कुआं एक है महजित माहीं, करो तलाश बेगि उहि ठाहीं।
ऊपर शिला एक है ढांका, देखौ जाय कूप अति पाका।
कूप सूथरा निर्मल नीरा, तामें भरा अधिक गम्भीरा।
कोठा एक किला कै माहीं, दिया बताय रहा जेहि ठाहीं।
अन्न भरा तामें बहुतेरा, लेउ निकास करो नहिं देरा।
हौं प्रसन्न मैं तुम पर राजा, सिद्ध भये तुमरे सब काजा।
भक्त देखि लागी मोहिं दाया, तेरे कारण मैं चलि आया।
राजा सुनिके अति सुख पाया, दोउ कर जोर चरण शिरनाया।

।। दोहा ।।

तुम कृपालु श्रीनाथ हो, दीन बन्धु करतार।
भौ दुख भंजन कारने, तुम लीना औतार।।

।। चौपाई ।।

हाथ जोरि पूंछा तब राजा, दीना बन्धु सुनिये सिरताजा।
नाथ सरूप मुरत का कहिये, कुशल निमन्त हमारे चहिये।
तब तो बोले अलख अजाती, ह्वै प्रसन्न मन अधिक सुहाती।
जालंधर नाथ नाम है मेरा, राखो निश्चय सही घनेरा।
नाम बताय भूप परचाया, अन्तर्द्धान भये गुरुराया।
जैसे लहर समुद्र लगाती, दीख परत नहिं फेर सुजाती।
योग सिद्ध जाके ह्वै जावे, गुप्त प्रगट की गति फुरआवे।
सकै न रोकि तिहूं पुर मांहीं, चाहैं जहां तहां चलि जाहीं।

।। दोहा ।।

त्रिभुवन के दाता धनी, तुम समर्थ गुरु ईश।
तन मन धन अरपन करूं, तुम्हैं निवाऊं शीश।।

।। चौपाई ।।

देवनाथ एक था योगी, बसत रहा नित सदा सयोगी।
ताके पास जाय सुख साथा, बोले बचन तहाँ गुरुनाथा।
मन्दिर माहीं मूरती देवा, जाकी तू नित करत है सेवा।
दरशन के कारण नित राजा, आवत है इत सहित समाजा।
तासों कहना बात सुहाती, तीजे दिन अवश्य परभाती।
जोधपुर का राज मिलैगा, निश्चय राखो काज सरैगा।
जो वह पूंछे भूपति ज्ञाता, तुमसे कही कौन वह बाता।
तब तुम उनसे येही कहना, जो मैं तुम्हैं बताऊं बैना।

।। दोहा ।।

जाने तुमसे है कही, ताने मोसे आन।
बात कही समुझाय के, भूपति करु परमान।।

।। चौपाई ।।

एति कहि गुरुनाथ कृपाला, अन्तर्द्धान भये ततकाला।
आये तहां जहां थे योगी, अगम अपार ब्रह्मरस भोगी।
धूनी तुरत तपन तहं लागे, पाया भेद नहीं कोउ नागे।
दायावन्त सन्त हितकारी, अगम अभेव हर बाना धारी।

ऐसे नाथ दीन के पालक, राखत टेक जानि जन बालक।
अलख भेष धर आपी जग में, सन्त रूप ह्वै बिचरत बन में।
जिनकी लीला अधिक उदारा, सुनि-सुनि दुरजन हो गए पारा।
भई प्रात योगी सब आये, मस्तनाथ को शीस नबाये।

।। दोहा ।।

गुरुनाथ बोले बचन, सुनो भेख अभिराम।
जोधपुर से कूंच कर, चलो दूसरे ठाम।।

।। चौपाई ।।

मस्तनाथ की गति नहिं जानी, छिन में कहां जात शैलानी।
ये तौ सबका मन पहिचानैं, इनका भेद नाहिं कोउ जानैं।

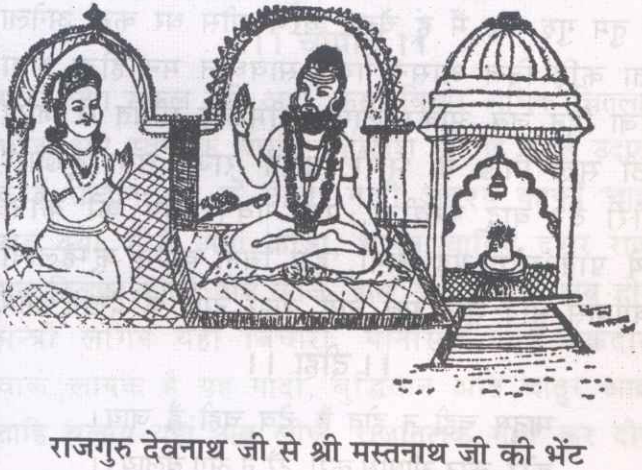

राजगुरु देवनाथ जी से श्री मस्तनाथ जी की भेंट

योगी जग में सुखसों बिचरैं, बाद विवाद कहूं ना करैं।
मानसिंह दरशन के कारन, जाय भया जहं मन्दिर पावन।
देवनाथ योगी तहं आया, हाल हकीकत सभी सुनाया।
भूपति कहा सुनो तुम स्वामी, तुम से कहा कौन अभिरामी।
तब तो बोला बचन अमोला, हृदय कमल परफुल्लित खोला।
जाने तुम से कही सुजाना, ताने हमसे करी बखाना।

।। दोहा ।।

भूपति भया प्रसन्न अति, सुनि-सुनि बचन उदार।
कहत भया कर जोर के, सुनु स्वामी यहि बार।।

।। चौपाई ।।

तीजे दिन जो राज मिलेगा, बचन तिहारा सत्य फुरैगा।
तौ तुम गुरु अरु मैं हूं चेला, चरण शीस धर करूं अगेला।
एता कहि निज आसन गया, सावधान मन होता भया।
तीजा दिन जब आकर लागा, भीमसिंह सोवत से जागा।
उठी सूल पिंड में भारी, तासों राजा भया दुखारी।
थोरी देर बाद परवीना, प्रान गवन स्वर्ग को कीना।
गये प्रान लोग यह जानी, हंस बिना काया कुम्हलानी।
स्वर्गवास सुनि-सुनि सब धाये, शहर नगर के देखन आये।

।। दोहा ।।

मानुष चही न होत है, देव चही ह्वै जाय।
कोट-कोट औषधि करो, टरै न अंग बलाय।।

।। चौपाई ।।

को जाने यह गति करतारा, छिन में कहा होत बिस्तारा।
भेद न पावत वेद पुराना, नेति-नेति सब कहत सुजाना।
जन्तर मन्तर अरु जादू टोना, पुण्यदान अरु चांदी सोना।
काम न आवै यह सुखदायक, जो बिधना ना होत सहायक।
सकै न मारि कोऊ जगमाहीं, अस्त्र शस्त्र कुंठित ह्वै जाहीं।
सुधा समान होत विष सारा, जो गुरु चाहत राखन हारा।
राजा मृत्यु खबर गई सारी, शोकवान सब भये नरनारी।
कही न जात महल की त्रासा, हाहा कार परी रनवासा।

।। दोहा ।।

सुनि-सुनि धाये लोग सब, देखि-देखि पछताात।
भीर भई भारी बहुत, सो बरनी नहीं जात।।

।। चौपाई ।।

मन्त्री लोग सकल जुरि आये, करत बिचार अधिक चितलाये।
भाजा भये स्वर्ग के बासी, चहुंदिशि हो गई बहुत उदासी।
कोई सन्तान भूप के नाहीं, गादी अवश्य काको चाही।
अब क्या कीजै आगे काजा, थापन चाहिये दूसर राजा।
रात तिलक काको अब कीजै, हाल बताय मोहिं अब दीजै।
मन्त्री लोगन यही बिचारा, मानसिंह गादी हकदारा।
वाके लायक है यह गादी, बुद्धिवान अति चातुर आदी।
ताहि बुलाय यहां अब लीजै, राजतिलक माथे कर दीजै।

।। दोहा ।।

राज मन्त्री सुमति करि, बात करी परकास।
गये तुरत जालोर गढ़, मानसिंह के पास।।

।। चौपाई ।।

राज मन्त्री आवत देखा, भूपति मन में बिसमें लेखा।
झुकझुक करि मुजरा बहुभांती, नीति मरजाद अदब संगाती।
मन्त्री तुरत जाय बतलाया, राजा मृत्यु हाल सुनाया।
राज तिलक है तुम्हरे माथे, भूपति चलिये हमरे साथे।
गादी बैठे राज संभालो, नीति सहित परजा को पालो।
जान्यो छल कुछ मन में राया, धोखा देन हमन को आयां।
धोखा दे दे राजा परको, भाई बिरादर काटे सबको।
इस जुगती से मोहि बुलावें, शीस हमारो तहां कटावें।

।। दोहा ।।

हम ना जावें जोधपुर, सुनिये मन्त्री लोग।
लौट घरन को जाउ तुम, हम छांड़ा सब भोग।।

।। चौपाई ।।

लौटे मन्त्री निज घर आये, बहुत बार पैगाम पठाये।
ताहू पै नहिं राजा गया, लोग मन्त्री विसमय भया।
राजा के उर निश्चय नाहीं, कहत सकल अपने मनमाहीं।
कह्यो परस्पर लोग सुजाना, निश्चय कोई भांति कराना।

राज मन्त्री रहा जो भारी, गया तुरत जालोर करारी।
कहत भयो सब हाल हकीकत, सत्य-सत्य मानो तुम भूपति।
राज तिलक के तुम अधिकारी, चलिके राज करो सुखकारी।
बिविध भांति राजहि समुझाया, मानसिंह उर निश्चय आया।

।। दोहा ।।

सुमिरन करि श्रीनाथ का, महिमा कीरत गाय।
मानसिंह जाता भया, जोधपुर हर्षाय।।

।। चौपाई ।।

हाथी घोड़े रथ अरु प्यादे, बिविध प्रकार साजिके जादे।
लश्कर फौज अनेक प्रकारा, लेकर चले साथ यक बारा।
पहुंचे तुरत जोधपुर माहीं, राज सिंहासन था जेहिं ठाहीं।
माथे तिलक राज की कीन्हा, मन्त्री लोगन गादी दीन्हा।
बैठे गादी भई अनन्दा, नौलखा मद्धे जैसे चन्दा।
घर-घर होत मंगलाचारी, दान दक्षिना लेत भिखारी।
बहु प्रकार के बाजन बाजे, राजा द्वार महा सुख साजे।
सुनि-सुनि आये नर अरु नारी, प्रजा आनिके भेंट गुजारी।

।। दोहा ।।

राजनीति अरु धर्म सों, होन लगे ब्योहार।
परजा पावत सुख घना, गुण यश होत अपार।।

।। चौपाई ।।

कछुक दिवस पाछे तेहिं ठाहीं, किया बिचार एक मन माहीं।

नाथ प्रताप चहूं दिशि छाया, मन बांछित फल हमने पाया।
देवनाथ योगी बुलवाये, आदर सहित भूप बैठाये।
भूपति करके ध्यान महेशा, विधि पूर्वक लीन्हा उपदेशा।
नाथ शिष्य उर भयो आनन्दा, उपजी भक्ति महा सुखकन्दा।
आदर मान योगेश्वर केरा, राजा निशि करै घनेरा।
राजनीति से धर्म चलावे, षट दर्शन बहुतै सुख पावे।
गुरु प्रताप भेद घट लीना, भया कवीश्वर अति परवीना।

।। दोहा ।।

बुद्धिवान चातुर घना, भया दुखन से मुक्त।
पदबानी जाकी बिदित, अगम निगम संयुक्त।।

।। चौपाई ।।

भक्तिवान आनन्दित राजा, जाके सुभल भले सब काजा।
ग्राम मेठरी मान सहीता, तांबा दफदर किया पुनीता।
मस्तनाथ की गादी ऊपर, दीना भेंट भूप तब आकर।
शाल दुशाले सेज पालकी, हाथी घोड़ा और नालकी।
राजा दीना बहुत घनेरा, इनकी कौन गिने तेहि बेरा।
मस्तनाथ की अद्‌भुत माया, जिसका भेद कोउ नहिं पाया।
सुमिरन करलो तुम निशि बासर, धरो ध्यान चरननका आगर।
ऐसा गुरु का है परतापा, सुमिरन मात्र कटत संतापा।

।। दोहा ।।

सतगुरु रंग अपार है, चटकीला रंग तोर।
कृपा भई गुरुदेव की, रंग दीना मन मोर।।

।। चौपाई ।।

त्रिभुवन से ऊंचे गुरुदेवा, मन बच करम करो नित सेवा।
अगम निगम की राह बतावें, निज स्वरूप आतम दरसावें।
भरथर आहि गोपीचन्द भूपा, गुरु प्रताप भये अमर अनूपा।
तीन लोक देवन बिच माहीं, गुरु समान दूजो कोउ नाहीं।
गुरु बचन मेट ना साकै, अचल गंभीर बचन गुरु थाकै।
आवागमन कहा दु:ख भारी, छिन में काटत गुरु निरधारी।
अजर अमर गुरु हैं अबिनाशी, सकल प्रपंच से रहत उदासी।
पूरन ब्रह्म अखिल पहिचानो, कर सतसंग अचलपद आनो।

।। दोहा ।।

शंकर कहत पुकारिके, दुबिधा मन की खोय।
मेरे तो श्रीनाथ जी, दूजा और न कोय।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत अवधूतिनी लीला वर्णनो नाम विंशतिऽध्यायः।।२०।।

।। दोहा ।।

बार-बार श्रीनाथ यह, मांगत हूं बरदान।
चरण कमल की प्रीतिनित, दीजै मोहिं सुजान।।

।। चौपाई ।।

धणीनाथ का एक सुजाना, श्रीमस्तनाथ का शिष्य बखाना।
धड़ी एक अन्न नित खावे, ताते धड़ी नाथ कहलावे।
गुरु की आज्ञा लै यकबारा, करने गया तीर्थ केदारा।
चार धाम तीर्थ बहुतेरे, करिके आयो गुरु पद नेरे।
करि आदेश चरण शिरनायो, पान फूल फल भेंट चढ़ायो।
चरण समीप देखि गुरु आगे, समाचार तब पूंछन लागे।
बहुत काल तुम भटकि गमाये, कौन-कौन तीरथ करिआये।
कही सांच जो कुछ हिय सूझा, दुख सुख हाल तीर्थ को ऊबझा।

।। दोहा ।।

शिष्य कहा कर जोरि के, सुनिये कृपा निधान।
जस कुछ बीता हाल तन, सो सब करूं बखान।।

।। चौपाई ।।

हे गुरुनाथ भटकि हम आये, गये तीर्थ बहुतै दुख पाये।
चलत बाट पायन बिच छाले, परि-परि गए सो सहैकसाले।
कंटक पायन चुभि-चुभि जावे, धूपसीत दोऊ अधिक सतावें।
चलत बाट काया थकि जावै, जूड़ी ताप फेर चढ़ि आवै।
राम-राम करि तीरथ पाऊं, तहां काल कुछ अधिक बिताऊं।

पुनि-पुनि चजूं फेर यहि भांती, होउं बिकल मैं दिन अरुराती।
धड़ी एक अन्न मैं खाऊं, मांग-मांग मुशकिल सों पाऊं।
ताते दुर्बल भयो शरीरा, मारग कष्ट महा गम्भीरा।

।। दोहा ।।

चार धाम तीरथ बहुत, हम परसे धरमार्थ।
दुख सुख पूंछा ना कोऊ, तुम बिन हे गुरुनाथ।।

।। चौपाई ।।

सुनि-सुनि बचन नाथ मुसकाने, तीरथ किए खूब मन माने।
बोल्यो बचन फेर यहि भांती, तुम गुरुनाथ कृपालु अजाती।
मांगूं तुमसे यह बरदाना, भूख लगै नहिं कोऊ आना।
तब शिर हाथ नाथ धर दीना, कहा भूख तोहिं लगै कधीना।
धड़ीनाथ तब शीस नवायो, बचन पाय मन मोद बढ़ायो।
तादिन से भोजन नहिं खाये, भूख रहित षटमास बिताये।
एक दिन कोउ रमते माहीं, भोजन दियो सो पायो नाहीं।
तब वह बोला सुनो अभोगी, तू तौ हैगा पाथर योगी।

।। दोहा ।।

यह लीला गुरुनाथ की, सुनो सकल सुख नाथ।
धड़ीनाथ से भूख बिन, हो गए पाथर नाथ।।

।। चौपाई ।।

कछू काल पाछे गम्भीरा, भ्रमत-भ्रमत आयो गुरु तीरा।
करि आदेश चरण शिर डारा, बिनती कीन्हीं बिविध प्रकारा।

कह्यो युक्ति सों फिर अंकूला, तुम गुरुदेव सुखन के मूला।
जहं तहं गयो नगर पुर भोगी, लोग कहा मोहिं पाथर योगी।
सुनि-सुनि बचन लाज अति आवे, बात कहो मोसों नहिं जावे।
तुमसों हाल कहूं मैं जीका, पाथरनाथ नाम नहिं नीका।
सो बरदान देउ तुम दूजा, भूख लगै फिर मोहिं उरूजा।
मैं मूरख अनजान तुम्हारा, कृपा करो हम पर हरबारा।

।। दोहा ।।

सुनि-सुनि बचन अधीन के, उचित है अब मोहिं।
गुरुनाथ तब यों कही, भूख लगैगी तोहिं।।

।। चौपाई ।।

तादिन से फिर भोजन खावे, गुरुनाथ का गुण यश गावे।
यह लीला अद्भुत है भाई, गुरु प्रताप मैं तुम्हें सुनाई।
एक समय गुरुदेव मुरारी, रम्मत करो नगर खिदवारी।

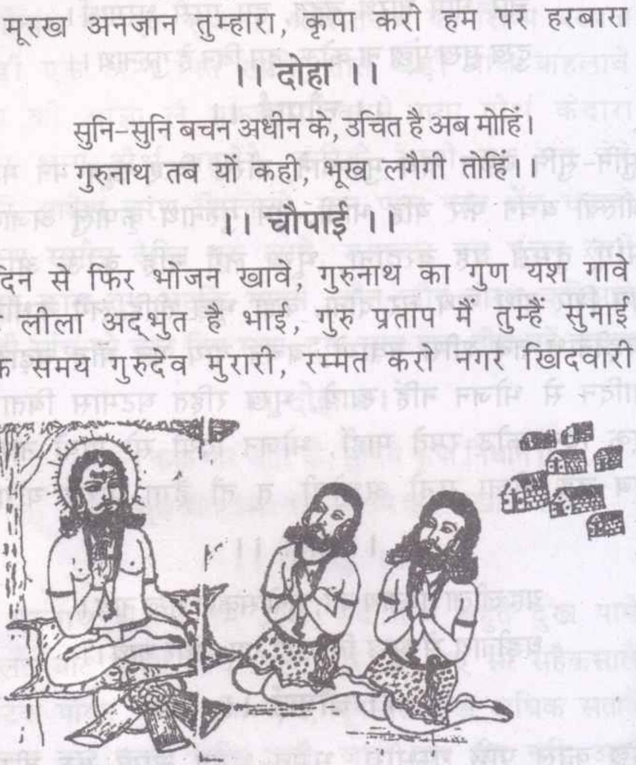

श्री मस्तनाथ जी का रनपत, मानधाता को आशीर्वाद

रनपतधाता शिष्य बुलाये, गुरु बचन अस ताहि सुनाये।
नगर माहिं तुम दोनों जाओ, धूनी काठ बेगि लै आओ।
हुकम पाय दोनों पुर माहीं, तुरत गये देखा तेहि ठाहीं।
बैठे पुर के लोग घनेरे, जाये कहा उनसे ह्वै नेरे।
आज तुम्हारे नगर सुहाये, श्रीमस्तनाथ साईं सिद्ध आये।

।। दोहा ।।

दोनों तपसी बैठके, बात कही समुझाय।
धूनी लकड़ी चाहिए, सो तुम देउ बताय।।

।। चौपाई ।।

सुन-सुन लोग बचन रसभीना, हँसी मसखरी तब उन कीना।
देहु बताय भार अनभाये, जो इनसे नहिं उठै उठाये।

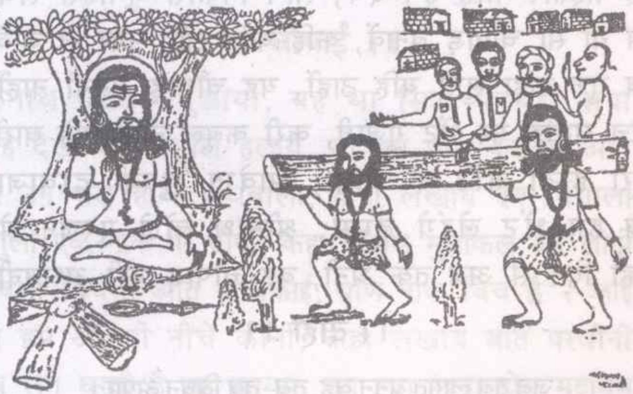

तेजस्वी शिष्य रनपत मानधाता सहतीर उठाकर ला रहे हैं

मोटा रूख एक था भारी, ताहि बताओ नर अरु नारी।
रणपतिधाता ताहि उठाए, श्रीमस्तनाथ बाबा डिंग लाये।
गुरुनाथ हुकम जौ पाया, धूनी माहीं तुरत लगाया।
रूख उठावत सब कोउ जाना, नगर लोग अचरज करिमाना।
नगर लोग बोले सब कोऊ, बड़े बली तपसी यह दोऊ।
गाड़ी एक भार अति भारी, सहज उठाय लीन यकबारी।

।। दोहा ।।

बहुत मोल सहतीर का, देखि लगा मन लोभ।
मूरख लोग अजान अति, करने लागे छोभ।।

।। चौपाई ।।

तब पुर लोग दौरि आए, अनुचित ऐसे बचन सुनाए।
यह सहतीर नाहिं हम देवें, लोग निकास धुनी से लेवें।
हम या सों चौपाड़ बनावें, कहि-कहि लोग नगर ले जावें।
तब गुरु कहा सुनो यहि ठाहीं, यह चौपाड़ बनेगी नाहीं।
सोच समुझि पर भेंट गुजारी, करी कबूल नाहिं तेहि बारी।
भूरा हस्ती बैठि के बाबा, आवेगा भुतनी दरवाजा।
तब हम भेंट लेइंगे तुमसे, श्रीनाथ बोले पुरजन से।
ताही दिन से अब तक घनी, बह चौपाड़ परी अधबनी।

।। दोहा ।।

जब तब लागत बनन वह, तब-तब बिघन अपार।
खून होय मानुष मरै, घर उपजै दुख सार।।

।। चौपाई ।।

एक दिन कहुं नाथ भरथरी, आये गुरु के पास सागरी।
गुरु सैन तब एक चलाई, हाथ अंगुली देत हलाई।
भरथर सैन कन्ध की कीनी, आंगुली एक नाक पर दीनी।
नाथ समुझि अंगुलि फिर नीचे, करी एक अद्‌भुतता पीछे।
सैन-सैन सेवा तैं कीन्हीं, भरथर बाट फेर लै लीन्हीं।
ताछिन शिष्य रहे बहुतेरे, मस्तनाथ के पास जुनेरे।
ते नहिं समुझे सैन प्रवीना, अचरज मान बहुत सा लीना।
एक-एक से पूंछन लागे, को योगेश्वर थे गुरु आगे।

।। दोहा ।।

भेद न पायो शिष्य जब, गुरु से पूछा जाय।
गुरुदयाल कहने लगे, सकल सैन समुझाय।।

।। चौपाई ।।

गुरुनाथ प्रगट समुझाया, यह था सिद्ध भरथरी राया।
ताहि देख कर अंगुलि हलाये, सो हम पूछा कहं से आये।
तब उन धरा हांथ कंधवाला, कहा लखाय देश बंगाला।
अंगुली एक नाक पर दीनी, कहा बिहंसि मुसकिल कर लीनी।
बिचरत-बिचरत अति अधिकाई, प्राण नाक बिच ह्वै २ जाई।
तब हम अंगुली नीचे कीनी, कहा लखाय बात परवीनी।
जब लग धरती है यह कायम, तब लग रहना होय मुदायम।
समुझि बूझि फिर गये अगाई, सिद्धसेन यह तुम्हैं सुनाई।

।। दोहा ।।

रहनी करनी अति कठिन, सिद्धन की सुन भाय।
मन मारैं तन बश करै, काल न जाको खाय।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत लीला वर्णनो नाम एकबिंशतोऽध्याय:।।२१।।

।। दोहा ।।

कानों कुण्डल सिर जटा, भस्म अंग उदार।
मेरे तो गुरुनाथ ही, पति के राखनहार।।

।। चौपाई ।।

एक समय गुरु रम्मत काजे, खरक ग्राम में जाय बिराजे।
ग्राम निकट पश्चिम की ओरा, धूना तहां लगाया घोरा।
पुरजन देखि बहुत हर्षाए, लोग नगर के देखन आए।
तब गुरु कहा शिष्य द्वै मेरे, निशदिन रहत नगर में तेरे।
सो मैं लेन आज इत आया, सांच-सांच यह तुम्हें बताया।
लोगन कहा नाम बतलाओ, शिष्य होई तुम लेकर जाओ।
ताछिन आये रणपति धाता, कहा लखाय देख दोउ भ्राता।
यह दोउ शिष्य आदि के मेरे, क्षत्री गृह जम्में सोई हेरे।

।। दोहा ।।

रणपति धाता जोर कर, कहा सुनो महाराज।
बड़ी कृपा तुमने करी, दीने दर्शन आज।।

।। चौपाई ।।

अब गुरु दीसत ये ही भलो, अपने साथ बेगि ले चलो।
तब गुरु कहा धीर धर मनमें, शनयशनय पर चलना रनमें।
मात पिता की आज्ञा लेकर, आना पास हमारे बेहतर।
मात पिता सुनि-सुनि कै आये, मन अपने अति शोच बढ़ाये।
हाथ जोरि करकै आधीनी, बात कही यह परम प्रवीनी।
हम जाये बालक अति प्यारे, सो तुम जानत शिष्य हमारे।
कोट करै बालक नहिं देहौं, तुमसे नाथ बकसि मैं लेहौं।
यहि विधि शोभित बचन सुनामें, बालक पकड़ि ग्राम ले जामें।

।। दोहा ।।

कछू दिवस पुर में रहे, परम गुरु सुखरास।
कोट खोखरा तपोबन, जाय किया फिर बास।।

।। चौपाई ।।

हाथ जोरि तब रणपति धाता, बोले बचन सुनो पितुमाता।
करम हमारे लिखी फकीरी, कैसे भोगैं राज अमीरी।
सो मैं तुम्हरी आज्ञा पाऊं, बन में जाकर योग कमाऊं।
अनुचित बचन श्रवण जब कीना, उपज्यो उरमें अति दुखभीना।

बालक पकड़ गोद बैठायो, बहुत भांति से फिर समझायो।
सुनो पुत्र बन मति जाओ, घर में बैठे राज कमाओ।
कठिन फकीरी ना तोहि सरै, रूख वृक्ष तर रहना परै।
रूखो सूखो टुकड़े जोवै, घर-घर भीख मांगना होवै।

।। दोहा ।।

मानो मेरा बचन सत, तुम मत होय फकीर।
भूख प्यास सहनो परै, महा दुःख गम्भीर।।

।। चौपाई ।।

रणपति कहा सुनो पितु माता, हम दुख सहैं सकल विख्याता।
हम ऐसी न फकीरी करैं, घर-घर भिक्षा मांगत फिरैं।
गुरु प्रताप देखौ तप मेरा, गज भूप कांपे बल केरा।
मैं अजान कुछ जानत नाहीं, गुरु समर्थ ब्यापक सब ठाहीं।
राज पाट सब त्याग अमीरी, नाथ शरण ह्वै करूं फकीरी।
बिविध भांति समझायो धाता, आज्ञा नहीं देई पितु माता।
वस्त्र आदि दधि गोरस भोजन, धन दौलत नित लगे लुटावन।
खोजि-खोजि पितु मातु प्रवीना, एक दिना तब आज्ञा दीना।

।। दोहा ।।

पुत्र बुलाये आपने, कही सुनो यह बात।
करो फकीरी जायके, हम राजी पितु मात।।

।। चौपाई ।।

आशिरवाद पाय दोउ भ्राता, तब बन गये पास गुरुदाता।
कुछ दिन करी तहां गुरु सेवा, भये दरसनी नाथ अभेवा।

एक दिन गुरु आज्ञा दीनी, खड़ी तपस्या करी प्रवीनी।
द्वादस बरस खड़े नित रहे, बैठे नहीं बचन गुरु गहे।
जटाजूट अरू भस्म अखंडी, रहे सदा एकै गुरु मंडी।
योगीनाथ नागा निर्बानी, धूना तपा सदा मैदानी।
तप बल तेज बदन पर झलकै, रहै दिगम्बर अतिगुरु बलपै।
गुरु के रहे सदा अगमानी, सेवा टहल खूब इन जानी।

तपस्वी रनपत, मानधाता बारह वर्ष खड़ेश्वरी रहे और घोर तप किया

।। दोहा ।।

रणपति धाता योगिया, बहुत भये सरनाम।
ऋद्धि सिद्धि जिनके चरन, रहती आठों याम।।

।। चौपाई ।।

चतुर मास मेघ की बरखा, सोनित सही शीसतन अधिका।
माघ पूस सीत के दिना, जल के ढाढे होवैं धना।
जेष्ट बैशाख धूप दुखरासी, तहां तपैं धूना चौरासी।
द्वादस वर्ष इसी विधि तपे, नाथ निरंजन हिरदे जपे।
गोपीचन्द भरथी जैसे, रणपति धाता तपसी तैसे।
गुरु प्रताप शालन जिन थापे, तप बल देखि भूप सब कांपे।
ह्वै प्रसन्न मन मोद विशाला, गुरुदेव दिया सरबंग प्याला।
जाति पांति जिन कुछ नहिं जाना, एक ब्रह्म करके पहचाना।

।। दोहा ।।

जियत समाधी जिन लई, जानत हैं सब लोग।
करामात प्रसिद्ध अति, पूरण जिनका योग।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत रणपति धातायोग वर्णनो नाम द्वेबिंशतिऽध्यायः।।२२।।

।। दोहा ।।

शोभा छबि श्रीनाथ की, मों मन बसी अपार।
निरख-निरख सुख उपजात, भागत भ्रम विकार।

।। चौपाई ।।

शहर भरतपुर निकट सुहाई, नगर पिगोर एक है भाई।
श्रीतोतानाथ तहां के बासी, गुणजस कीरति माहिं प्रकासी।
और कहां लग अधिक बखानो, भाई बन्धु राज के जानो।
एक समय अपने स्थाना, बैठे ऊँचे जाय मकाना।
तहं बिचार यह मनमें उपजा, अब लग मैं इस जग में भटका।
एकौ बार सुचित ह्वै भाई, हरका भजन किया नहिं जाई।
यह तन का कुछ नहिं भरोसा, नेह लगाय जो मल-मल पोसा।
बालू ऐसी भीत समाना, एक दिन होवे पछिताना।

।। दोहा ।।

कौन भूल भूले फिरौ, है मतिमन्द अजान।
काल बली छांड़ै नहीं, लेई अचानक प्रान।।

।। चौपाई ।।

भाई बन्धु कुटम परिवारा, धन दौलत अबला सुतदारा।
अन्त समय साथी नहिं कोई, इनका नेह अकारथ होई।
भर्म जाल यह दुःख अनन्ता, इससे बचा सोई गुनवन्ता।
बड़-बड़ योधा प्राण गमाये, इस माया का पार न पाये।
भर्म जाल की कटी न फांसी, अन्त समय भोगै चौरासी।

धृक-धृक जीवन बिन हर भजना, भूले मूढ़ देखि के रचना।
नर तन जन्म भाग से पावै, ताहि मूढ़ बिन भजन गमावै।
तासों उचित है यह भाई, करि बैराग भजूं युदराई।

।। दोहा ।।

जुगत-जुगत सों मनन करि, उपजा अधिक बिचार।
सुपन समान जानो जगत, त्यागि दियौ संसार।।

।। चौपाई ।।

काम काज गृहका सब छांड़ा, साधु सन्त चरनन चित बाढ़ा।
हिरदे नाम राम का लेवें, रहैं उदास भेद नहिं देवें।
बिंन गुरु भजन होत नहिं नीका, आपि मन से किया बिवेका।
तब गृह तजि हरियाना आये, श्रीमस्तनाथ बाबा तहँ पाये।
निरख रूप नागा निरबानी, तेजवन्त तपसी अति ज्ञानी।
लगे बिचार करन बहु भांती, करिहों सेवा मैं दिन राती।
ये गुरु मोकों परम उदारा, भव सागर से करि हैं पारा।
दया रूप जानि मन माहीं, निरखि-निरखि बोले तेहि ठाहीं।

।। दोहा ।।

हाथ जोड़ पांयन परे, कहा सुनो महाराज।
चेला करलो मोहिं तुम, दीनबन्धु सिरताज।।

।। चौपाई ।।

तब गुरु पूंछा हाल हकीकत, दियौ बताय आदि से भूपत।
गुरुदेव कहा है कठिन फकीरी, तुम मत छांड़ो राज अमीरी।

बहुत प्रकार ताहि समुझायो, वचन प्रवीन हिये नहिं लायो।
दृढ़ता देखि बहुत परवीना, तब गुरुनाथ शिष्य कर लीना।
निशिदिन रहैं गुरु के तीरा, सेवा टहल करैं गम्भीरा।
तब गुरुनाथ जानि अधिकारी, भये प्रसन्न बहुत यकबारी।
ब्रह्म ज्ञान उपदेश विशाला, देकर खोला घट का ताला।
द्वैत भर्म सब दूरि नसाया, एक ब्रह्म सब ठौर लखाया।

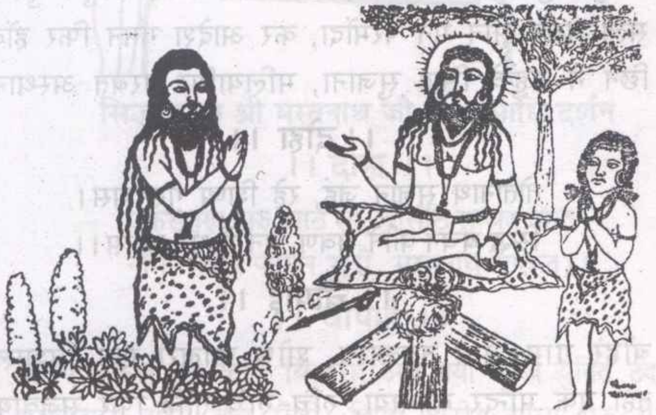

सिद्ध चौरंगीनाथ जी के प्रार्थना करने पर श्री मस्तनाथ जी बोले मैं फागुन सुदी नौमी के दिन समाधी लूंगा

।। दोहा ।।

बिनती करी विशाल तब, हे गुरु दीनानाथ।
अभय किया मोहिं जानजन, शिर पर धरिके हाथ।।

।। चौपाई ।।

एक दिना तपो बन माहीं, बैठे रहे करील की छाहीं।
तहां सिद्ध चौरंगी आये, सुधासमान सोई बचन सुनाये।
सन्तन बचन पुरावन काजे, भक्त हेत तुम आनि बिराजे।
कब तक बिचरोगे सुख धामी, चलना चाहिये रमता रामी।
सुनि के बचन प्रेम रस साने, मस्तनाथ बोले मरदाने।
फागुन सुदी नौमी के दिवसा, गमन करैंगे निर्गुन पुरुषा।
सत्य बचन सुनि मन परमोंदा, कर आदेश गमन फिर होंदा।
छिन में पहुंचे सिद्ध सुजाना, मलियागिर परबत अस्थाना।

।। दोहा ।।

तोतानाथ सुजान जहं, रहे शिष्य गुरु पास।
सिद्ध बचन कीने श्रवण, मन में भये उदास।।

।। चौपाई ।।

बोहरं ग्राम आय ततकाला, शोध कालरी एक बिशाला।
तहां एक मन्दिर बनवाया, रुचि-रुचि ताहि फिर सजवाया।
एक दिना बिधरायण केरे, आये सेवक सती घनेरे।
भक्त वत्सल नाथ गुरुदेवा, गबने साथ देखि अति सेवा।
कुछ दिन करा तहां विश्रामा, नाथ निरंजन सब सुख धामा।
समझ बूझि सिद्ध के बचना, आया समय बोही चितरुचना।
शिष्य सकल गुरुनाथ बुलाय, यथा उचित सबको समुझाय।
तुम सब राजी रहो समाना, हम अब गुप्त होत यहिआना।

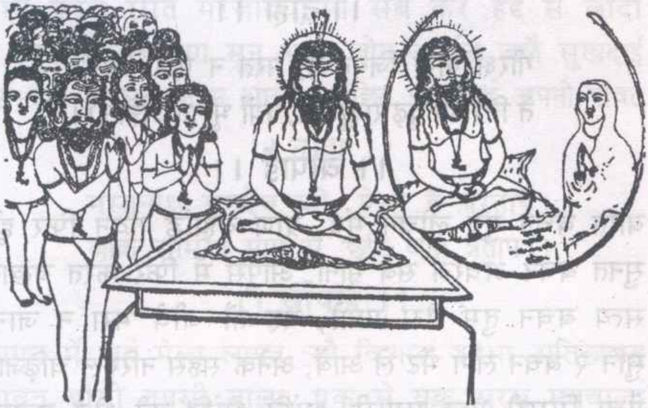

सिद्ध बाबा श्री मस्तनाथ जी का समाधि दर्शन

।। दोहा ।।

एकसहस्त्र अरु आठ सौ, चौसठि सम्बत अन्त।
नौमी तिथि फागुन सुदी, मस्तनाथ गुप्तन्त।।

।। चौपाई ।।

शिष्य सकल तब करत बिचारा, अब क्या कीजै युक्ति उदारा।
प्राणायाम योग बल सेती, दियो शरीर त्याग गुरु येती।
चहुं दिसि खबर भई ततकाला, देखन आये लोग बिशाला।
ढाई योजन योगी धीरा, लाये बोहर गुरु शरीरा।
निरखि-निरखि देखत सब लोगा, प्राणहीनता अधिक बियोगा।
एक सती बात चलाई, हम जानत थे गोरक्ष भाई।
सो यह गोरक्ष होवे नाहीं, यह संशय उपज्यो मन माहीं।
गुरु नाथ तब लोचन खोले, सती बुलाय बचन यह बोले।

।। दोहा ।।

गोरक्ष योगी जियत है, मरत न एकौ आन।
तैं निश्चय दृढ़ राखु मन, क्यों भूलत अज्ञान।।

।। चौपाई ।।

बोति बचन गुरु लोचन मूंदे, प्राण ब्रह्मांड गवन फिर हूंदे।
सुनत बचन अचरज सब माना, आपुस में फिर करत बखाना।
सत्य बचन तुम मेरा मानो, यह तौ जीवे मरा न जानो।
सुनि २ बचन लोग भेंट ले आवें, अनेक सहस नरियल चढ़िजावें।
मेवा मिसरी पान सुपारी, भांति-भांति की भेंट गुजारी।
जोत कपूर जलत तब ठाई, देखि प्रकाश सकल हर्षाई।
फूलन से मन्दिर भर जाई, गुरु मूरति नहिं देत दिखाई।
शंखनादूधनि विविध प्रकारा, जै जै कार होत हरबारा।

।। दोहा ।।

भई निछावर अति घनी, ताछिन बिविध प्रकार।
शाल दुशाले को गिनै, कंचन द्रब्य अपार।।

।। चौपाई ।।

शिष्य सकल उर शोच बढ़ायो, करी बिलम्ब समाधि न लाओ।
नभ मण्डल बानी तब होई, देउ समाधि डरो मति कोई।
श्रवण करा सब नर अरु नारी, होन लगी धुनि जै जै कारी।
सुमन टारी गुरु मूरति देखत, अति विशाल सुन्दर जनुबिहंसत।
जुगत-जुगत सों शिष्य अगाधी, मन्दिर मांझे दई समाधी।

काम काज रीति मरजादा, सो सब करे हद्द से जादा।
ता दिन से अब लग सुनु भाई, जोत अखंड जलै सुखदाई।
देश-देश के सब कोऊ आवत, बाँछित फल तहं अपनो पावत।

।। दोहा ।।

मस्तनाथ गुरुदेव को, ऐसो है परताप।
जाके सुमिरन मात्र से, छूटि जात त्रैताप।।

।। चौपाई ।।

फागुन में जहं मेला लागत, सौ विशाल शोभा अतिछाजत।
आवत योगी तपसी बाला, एक से एक सरस मतवाला।
षट दरशन की शोभा न्यारी, सो बरनी नहिं जात अगारी।
बिबिध प्रकार नाद जहं बाजै, ध्वज निशान पचरंग बिराजै।
सबका आदर अरु सनमाना, करत पीर दरगाह सुजाना।
नाथ दुलीचा भरत अपारा, एक से एक योगी सरदारा।
जिनकी शोभा परम बिशाला, देखि-देखि भागत दुख जाला।
बड़-बड़ हाकिम राजा लोगा, देखि-देखि योगी की शोभा।

।। दोहा ।।

कहं लग बरनौं कीरती, महिमा अगम अथाह।
चार खूंट सरनाम है, मस्तनाथ दरगाह।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत मस्तनाथ समाधी वर्णनो नाम त्रबिंशतिऽध्यायः।।२३।।

।। दोहा ।।

नाथ नवाऊं माथ मैं, स्वामी तुमको जान।
कृपा करो मों दास पर, करूं निछावर प्रान।।

।। चौपाई ।।

श्रोता ज्ञान महा निषकामी, बड़े धीर जग में सरनामी।
सेवा देखि गुरु हितकारी, बकसि दई गादी यकबारी।
मस्तनाथ के पाछे तासन, भये पीर बैठे सिंहासन।
फागुन सुदी नौमी का मेला, जिन ठहरायो आप अकेला।
देश-देश खट दरसन माहीं, शहर नगर घर-घर सब ठाहीं।
समाचार मेला अधिकाई, लिखि-लिखि पाती देत पठाई।
ऐसे पार महा दृढ़ जीके, जहं तहं हौज भराये घी के।
तन्दुल बूरा खांड मिठाई, जहं तहं कोठा देत भराई।

।। दोहा ।।

देश-देश में आपने, योगी दिये पठाय।
मेला का समान सब, लीना मोल मंगाय।।

।। चौपाई ।।

देश-देश के सब गुणवन्ता, खट दरसन अरु बारह पंथा।
बड़े-बड़े हाकिम अधिकारी, राजा बाबू और पंसारी।
सबी तरह के सजि-सजि आये, अपन बिरान ढूंढ नहिं पाये।
भई भीर मेला की भारी, सो बरनी नहिं जात अगारी।
तीन दिवस लों मेला राखा, पूरण करी गुरु अभिलाखा।
साहब एक फरीजन नामी, बन्दोबस्त में लिखा मुदामी।

एक लाख मूरति का भोजन, तोतानाथ दिया है तादिन।
और कहां लग बरनों भाई, सत्य-सत्य मैं तुम्हें सुनाई।

।। दोहा ।।

रिद्ध सिद्ध भण्डार सब, खोलि दिये सुख नाथ।
जो मांगा सोई दिया, ह्वै प्रसन्न गुरुनाथ।।

।। चौपाई ।।

चौंसठि में गुरुदेव समाये, पैंसठि में मेला करवाये।
एक साल के अन्दर भाई, एता नाम किया सुखदाई।
देश मण्डल में ऐसा मेला, होना मुशकिल फेर अगेला।
बीकानेर राज की धानी, सूरत सिंह भूप था मानी।
ताको परचा इन दिखलाया, थेड़ी ग्राम एक तहं पाया।
तीस वर्ष जिन भोगी गादी, साल चौरानबे लई समाधी।
श्री मेघनाथ शिष्य हितकारी, भये पीर अति बलकारी।
मन्दिर कुंआ बनाया रचिके, अपने गुरु का मेला करके।

।। दोहा ।।

भये प्रतापी अति घने, सकल गुणन के मूल।
तीस वर्ष पीरी करी, सुजस किये अंकूल।।

।। चौपाई ।।

सम्बत बाइस चैत महीना, त्रयोदशी सायत परबीना।
श्री मोहरनाथ शिष्य गुणवन्ता, गादी बैठे परम शुभन्ता।
बड़े धीर ज्ञान के सागर, बचनसिद्ध कुलमांहि उजागर।
मेघनाथ का मेला भाई, जिर फिर कीना अति अधिकाई।

बारह वर्ष मास नौ पीरी, सुन्दर भोगी राज अमीरी।
तिनके शिष्य परम गुणज्ञानी, श्री चेतनाथ शोभा के खानी।
सम्बत पैंतीस झिलमिल तारा, पूस सुदी पूरण बुधवारा।
तखत नशीन भये गुरु स्वामी, नौबत बाजी आनन्द नामी।

।। दोहा ।।

भेंट गुजारी आनिकर, लोगन अति हर्षाय।
भई निछावर अति घनी, मोसों कही न जाय।।

।। चौपाई ।।

घर-घर लोग भये आनन्दित, ज्यों कुमोदनी चन्द्र प्रफुल्लित।
जिन फिर घृत के हौज भराये, सब सामान सरस अधिकाये।
देस-देस में लिखि-लिखि पाती, लोग बुलाये सरस सुहाती।
अपने गुरु का मेला कीना, जैसा मांगा तैसा दीना।
बड़े उदार धीर सन्तोषी, ज्ञानवान मूरत निर्दोषी।
जन सुखदायक परम पियारे, अगम निगम के जानन हारे।
जिनका धर्म देखि सुख पाये, सूखे वृक्ष फेरि हरि आये।

।। दोहा ।।

कृपासिंधु गुरुदेव को, जानत सकल जहान।
सिद्ध शिरोमणि ज्ञानबल, दीनबन्धु श्रीमान।।

।। चौपाई ।।

कुआं घाट मन्दिर बनवाये, धर्म अर्थ जिन सोभा पाये।
अंधे लूले लंगड़े रायज, भूखो दुखो लुंज अपायज।
भोजन वस्त्र द्वै पुरवत काजा, सबकी खबर लेत महाराजा।
सदा बृत जिन अटल गाये, रात दिन भण्डार खुलाये।

हाथी घोड़े ऊंट घनेरे, ध्वजा निसान पद बहुतेरे।
तेज प्रताप भूप नहिं औटै, रिद्ध सिद्ध चरनों बिच लौटे।
बड़-बड़ हाकिम औ महाराजा, शीस नवावें जानि सिरताजा।
दूर-दूर से दुनियां आवे, दरशन को जिनके सुख पावे।

।। दोहा ।।

कीरति महिमा अति घनी, सुजस रह्यो है छाय।
मुल्क-मुल्क जाहिर भये, दाता नाम कहाय।।

।। चौपाई ।।

खट दरशन को बहुतै माना, एक ब्रह्म करके जिन जाना।
वेद पुराण शास्त्र गुण सागर, ज्ञानवान कुलदीप उजागर।
परमहंस पण्डित अति ज्ञाता, अभय असोच परम सुखदाता।
असत बचन मुख से नहिं भाखत, ब्रह्मज्ञान की चरचा राखत।
सील सन्तोष दया घट गामी, भक्तन के अति भूषण स्वामी।
धर्म अर्थ विद्या अधिकाई, जारी किया मदरसा भाई।
भव दुख भंजन ब्रह्म स्वरूपा, परमारथ नित करें अनूपा।
जापर कृपा करी गुरुराया, भव सागर से पार लगाया।

।। दोहा ।।

बलिहारी गुरुदेव की, कहं लग करूं बखान।
जिन प्रताप भवजाल कटि, पद पावत निर्बान।।

इति श्री मस्तनाथ चरित्रे महाविचित्रे शंकरनाथ योगीकृत पीरशासन वर्णनो नाम चतुरबिंशतिऽध्याय:।।२४।।

आई पंथ की प्रणाली जो श्रीगोरख टीले से इस देश में आए

१. श्रीसिद्ध भगाईजी	९. श्रीसिद्ध भगाईजी
२. श्रीसिद्ध गरभाईजी	१०. श्रीसिद्ध श्रुताईजी
३. श्रीसिद्ध तिरथाईजी	११. श्रीसिद्ध नरमाईजी
४. श्रीसिद्ध अरनाईजी	१२. श्रीसिद्ध बाबा मस्तनाथजी
५. श्रीसिद्ध रनाईजी	१३. श्रीसिद्ध पीर तोतानाथजी
६. श्रीसिद्ध दवाईजी	१४. श्रीसिद्ध पीर मेघनाथजी
७. श्रीसिद्ध लधाईजी	१५. श्रीसिद्ध पीर मेहरनाथजी
८. श्रीसिद्ध मनसाईजी	१६. श्रीसिद्ध पीर चेतनाथजी

बारह पंथ के नाम

प्राचीन भेष हो जाने के कारण सही-सही बारह पंथ के नाम प्राप्त होना दुर्लभ हो गया। वर्तमान काल में बारह पन्थ के नाम यह गिने जाते हैं-

आई पंथ-१, पागल पंथ-२, रावल पंथ-३, पाद पंथ-४, ध्वज पंथ-५, सत्तनाथ पंथ-६, वैराग पंथ-७, गंगनाथ पंथ-८, मन्ननाथ पंथ-९, नाटेश्वर पंथ-१०, धरमनाथ पंथ-११, दरिया नाथ पंथ-१२।

और महाकाल जोग श्री शिवजी ने पारबती जी प्रति बारह पंथ के नाम यह बताये हैं-

हेतू पंथ-१, आई पंथ-२, गोपाल पंथ-३, पाद पंथ-४, चोली पंथ-५, गम पंथ-६, ध्वज पंथ-७, दास पंथ-८, रावल पंथ-९, पागल पंथ-१०, किंथड पंथ-११, बन पंथ-१२।

निर्वाण अष्टक

।। कवित्त ।।

चार खूंट चार धाम भटकत फिरे नित दुख तन सीतधाम अधिक उठायो है। करिकै जतन भव बंधन छुड़ायो नाहिं बिन ज्ञान अन्ध सम मूरख भुलायो है।। घर-घर मांगि-मांगि रुचि-रुचि टूक खाय पशुवत पेट भर जन्म गमायो है। कहैं पीर चेतनाथ शंकर अजान सुन बिन सतसंग तैंने आत्मा न पायो है।।१।।

करि-करि ऊंच नीच करम उठाय फल स्वर्गऔ पैताल लग बन्धन परोयरे। काम क्रोध लोभ मोह ममता उठाय सिर वासना से दीन ह्वै अन्तकाल रोयरे।। जा मन मरन दुख दारुन कटत नाहिं पावन न चैन सुख अचल विगोयरे। कहैं पीर चेतनाथ शङ्कर बिचारिदेखु आत्मा के ज्ञान बिन मुक्ति नाहीं होयरे।।२।।

राज में असंख दुख रहत कराल नित पावत न सुख चैन भोगरोग याद है। मान औ बड़ाई बैर भाव अहंकार अति रहत परसपर ईर्षा विवाद है।। समतासु शीलगुण धीरजमिलत नाहिं चिन्ता के भंडार उर अधिक फसाद है। कहैं पीर चेतनाथ शङ्कर बिचारि देखु त्याग बिन राज एक महा अपराद है।।३।।

सन्त उपकार नित करत जगत ताहिं तिमिर बिनाश ज्ञान घट उपजा में जी। स्वप्न के समान यह जग दरशाय सब माया को विलास सर्प जेवरी बतामें जी।। भोग सब रोग और सम्पत्ति विपति जान शङ्कर असंख दुखजाल से छुड़ामें जी। कहैं पीर चेतनाथ सन्त की अलेख गति जीव और ब्रह्म सर्व एक ताल खामें जी।।४।।

शमदस करि-करि साधन विवेक सब बुद्धि को बढ़ाय

उपजाओ घट ज्ञान को। मन को अचल करि इन्द्रियन सो जीत लेओ अजपा को जाप जपि धरो नित ध्यान को।। माया को बिलास सर्प जेवरी समान जान तजि के विकार मारो मोह मद मान को। कहैं पीर चेतनाथ शंकर बिचारि देखु करि सतसंग पद लेओ निर्वान को।।५।।

रचना को देख तू तो गया है भुलाय आप बंधन फंसाय दीन भये सरकार के। भरमत फिर आप ही अजान ह्वै जप तप जोग कर तन को बिदार के। खोजत फिरत फिर पावत न भेद कहूं सहत कसाले दुख अति बेशुमार के। कहैं पीर चेतनाथ ब्रह्म है अनादी तुही अपने को आप देखु परदा उघार के।।६।।

दुख-सुख हानि-लाभ जीवन-मरण यह देह के विकार सब झूठे कर जान रे। तू तौ अविनाशी सिद्ध ब्रह्म अविकारी नित्य अजर अमर शांत पूरन समान रे। अचल अपार आदि अंत से रहित एक स्वयं प्रकाश वेद करत बखान रे। कहैं पीर चेतनाथ सर्व सों असंगत तुही शंकर तू चेत ब्रह्म पद निर्वान रे।।७।।

जगत प्रपंच जहं होत न प्रतीत कुछ लखि न सकत बुध निज अनुकूल है। जाति पांति बंध मोक्ष नाम रूप ज्ञानहीं अगम आनन्द जहं और सुख धूल है।। रोजा और निमाज पांच तत्व को रिवाज सब द्वैत को अभाव नहीं सूक्ष्म स्थूल है। कहैं पीर चेतनाथ शंकर विचार देखु सर्व सो असंग एक तूही ब्रह्ममूल है।।८।।

।। कवित्त।।

हर-हर करत मिटत सब पाप ताप छिन में पतित तिहूंपुर निसतारा है। योगी जती तपसी औ रिष मुनि देव सब जपि-जपि पद पाया परम अपारा है।। वेद औ पुरान जाको पावत न पार कहू

सुनि-सुनि जम डरपत जिय हारा है। शङ्कर कहत सठ बड़ो मतिमन्द भयो ऐसो हरनाम तैंने काहे को बिसारा है।।

मायाधर पंडित महीपति निबल बल ज्ञानी औ अज्ञानी नर जेते रङ्ग फूला है। तेते रङ्ग करि-करि छिन में बिलाय गई रही ना निसानी कहूं मिटत समूला है।। जाने नाहीं छिन पल विधि गत कैसी होय ताहि का बिसार मूढ़ माया बस भूला है। शङ्कर कहत नर नाहक गुमान करै तू तौ सठ ऐसो जैसे पानी को बबूला है

काम-क्रोध लोभ-मोह ममता में परि-परि मूढ तू अज्ञान बस काहे को भूलायेगो। धन और दौलत न आवे कुछ काम तेरे कुल परिवार कोई संग नाहिं जायगो। कीनी ना सुकृत कुछ हरसों विमुख रहे धनी के दुआर जाय कहा बतलायगो। शङ्कर कहत सठ चेती हो विमुख नर काल की चपेट माही फिर पछितायगो।।

राम-राम करि-करि मानुष शरीर पायो बड़ी तकदीर सेती साधू रुप धारती। ताहू पै भरमजाल परि-परि मूढ़ मति बैर भाव करि-करि कलंक को लगावती। निकसि-निकसि फिर दूबत है मूढ़ आप एक सतसंग बिन महादुख पावतो। बिना रे भजन दिन बृथा ही गमाय देत यो तो जो बिचार काहे जीती बाजी हारती।।

अगम अपार भवसागर बहत एकलख चौरासी धार कठिन अथाह रे। आपन बिरान जहं कोऊ ना सहाय होत सूझि ना पड़त तट मिलत न राह रे।। भेद बिन एक तैंने पायो है अपार दुःख होउ हुशियार दृढ़ करके सलाह रे। भटकि-भटकि अब लागी है किनारे आन अबकी सम्हार नाव अपनी मलाह रे।।

देहसों नियारों तू रहत है सदा आप देह तो बिकारी मोह माया की थाप है। देह तौ मरै कटै जरै पावक सों पै तू ना जरै ना मरै कहूं

की छाप है।। पुण्य अरु पाप मोह माया को आसा तज पूरण है ब्रह्म तू तोको सीत नहिं ताप है। शङ्कर चेतना अचेत भयो काहे को जाको तू ढूंढत फिरत सो तू आपै आप है।।

प्रथम बैराग मन करि-करि बहुविधि ढूंढि सतसंग भेद लीनो घट ज्ञान का। उपज्यो बिचार तब बुद्धि को प्रकाश भयो त्यागि दीनो दु:ख जाल भ्रम के स्थान का। बैठिके एकांत चित्त चंचल को शांत करि अपनो स्वरूप लखि ब्रह्म के समान का। करिके अभ्यास दृढ़ भावना अद्वैत सम गुरु के प्रसाद पद पाया निर्वान का।।

।। सवैया।।

आपहि खात औ आप खवावत आपहि पीवत आपहि डोलै। आपहि सोवत आपहि जागत आपहि भोगि के आप किलोलै। आपहि मारत आप जियावत आपहि बांध के आपहि खोलै। शंकरनाथ कहां लौं कहै देखो आपहि आप में आपहि बोलै।

।। कवित्त।।

देश हरियाना शुभ ग्राम है बोहर एक जहां मस्तनाथजी की भारी दरगाह है। जहं के हैं पीर चेतनाथ जी सुशील अति रंक अरु राव पर समता निगाह है। रिद्ध अरु सिद्ध जहं हाजिर हजूर खड़ी पावें नहीं पार कोऊ महिमा अथाह है। नौमी की बहार दिलसार है अपार एक सिद्ध की समाज जहाँ बड़ो उत्साह है।

बोहर स्थान आलीसान दरगाह एक धर्म क्षेत्र अन्न-दान राति दिन जारी है। जागती आखण्ड जोति कला श्रीनाथ जी की रिद्ध सिद्ध भरपूर अगन अपारी हैं। पावें मुख संग गुण गायन अनन्त और बाजै घनघोर नाद होत जै जै कारी है। कहाँ लौं बखान करूं जानत जहान सब श्रीमहाराज पीर जू की बलिहारी है।

परम गुरुदेव जस बिदित जगत माहिं आनन्द स्वरूप ज्ञान बुद्धि बलबीर हैं। राखत शरन जन लेत हैं उबार छिन शोभा के सदन अति अगम गम्भीर हैं। सन्त सिरताज अरु दीनबन्धु दीनानाथ करैं उपकार नित धर्म के शरीर हैं कहां लौं बखान करूं जानत जहान सब कृपा के समुद्र श्री चेतनाथ पीर हैं।

कोई है आता कोई जाता है सौदा करि कोई है सूता कोई जागता खुलासा है। कोई है ज्ञानी कोई मूरख अभिमानी चोर कोई है साहू कोई निरधन प्रकासा है। कोई है गाता कोई नाचता बजाता कोई-कोई है हंसता कोई रोता गलफासा है। कहत शङ्करनाथ बलिहारी उस कादिर की खलकत को बनाया आप देखत तमाशा है।

।। गुरुदेव जी की वन्दना।।

१. गुरुदेव तुम सबसे बड़े तुमसे बड़ा कोई नहीं। सिद्ध मुनिजन करत सेवा ध्यान राखत सब कहीं।।१।। कृपा सागर दयारूपी सतगुरु श्रीनाथ जी। बिनती करूं पायन परूं पुनि-पुनि करूं आदेश जी।।२।। महिमा घनी शोभा अधिक छाई सकल परकार से। इस कदर ताकत नहीं बरनूं जो मैं विस्तार से।।३।। कृपा करी तुम आपनी निर्भय किया है दास को। काटो कठिन सबसे बड़ी आवागमन की फांस को।।४।। सतगुरु चरण लागी लगन हिरदे भया है चन्दना। नाथ शङ्कर दस्तबस्ता करते गुरुजी की वन्दना।।५।।

।। तथा।।

२. गुरुदेव तुम सबसे बड़े श्रीनाथ अन्तर जामियां। विनती

करूं पांय परूं चूमों कदम हरबारियां।।१।। घट-घट बिराजो श्रीनाथ जी तुम दीनबन्धु सतगुरु। जिस पर हुई किरपा तुम्हारी सोइ पायो आबरू।।२।। वेद गावे यश तुम्हारा पीर पावे ना कोई। भेष की तुम टेक राखत हौ अपर निर्गुण सोई।।३।। रिद्धि सिद्धि चरण लौटै चौदह भुवन सब दास हैं। नाथ शङ्कर शरण सतगुरु बीनती परकाश हैं।।४।।

३. सतगुरु हमार जगत जाहर पीर चेतनाथ जी। जिनने किया निर्भय मुझै शिर पर जो धरके हाथ जी।।१।। महिमा बढ़ाई कीरती छाई सकल संसार में। मुक्ति जिनकी चरण चेरी नित खड़ी दरबार में।।२।। ब्रह्मरूपी है अनूपी तेज तप ज्यों भानु को। आवागमन की फांस काटत देत पद निर्वान को।।३।। रिद्ध सिद्धि चरण लौटे सर्व के सुखरास हैं। नाथ शंकर करत बिनती सिद्ध मुनिजन दास हैं।।४।।

४. सतगुरु बराबर ना कोई सतगुरु की कर तू बन्दगी। सतगुरु छुड़ावे फंद सब सतगुरु जो देवे जिन्दगी।।१।। सतगुरु मिला जनु हर मिला सतगुरु नहीं तोकूं दशू। सतगुरु करावै ज्ञान घट सतगुरु बिना होता पशू।।२।। सतगुरु छुड़ावे पाप सब जो कुछ किए हर रोज के। सतगुरु बिना रहना नहीं सतगुरु करो तुम खोज के।।३।। सतगुरु महातम वेद गावें जो बचावै पाप से। नाथ शंकर मुक्ति पावे सतगुरु परताप से।।४।।

।। चार बैत।।

५. मुरशद से पहले लै ढूंढा जो तन सुखपाल में। साफ जाहर हो गया तुही खुदा हरहाल में।।१।। तेरा जहूरा सब जगह तू अव्वली आखीर है। तुझसे बड़ा कोई नहीं तूही अजीमुल पीर है।।२।।

तूहि माई तूहि बाबा तूहि खिदमतगार है। तेरा नहिं कोई पार पावे तूहि इज्जतदार है।।३।। तूही खुदा तूही बंदा तूही डाली पात है। नाथ शंकर यह अचम्भा जात में बेजात है।।४।।

६. मुरशद इलाही पीर आजम याद कर तू हर घड़ी। गफलत न कर हुशियार हो बाजी तेरी अब आ पड़ी।।१।। पाँच को तू मार पहिले यह बड़ा दुख जाल है। फिर खुदी को दूर कर के मिल सहज परताल है।।२।। मालूम यह हैगा नहीं तन छाड़ि हंसा कब चलै। करना जो हो करले अभी फिर वक्त ऐसा ना मिलै।।३।। नाथ शंकर भजन बिन आखिर को है पछितावना। नर तन मिला तकदीर से क्यों जीति बाजी हारना।।४।।

७. हो अवारा ना गवारा शिर पर जो डाली खाक को। मस्ती लगी थी भूल की समझा जो मैं कुछ आपको।।१।। मालूम मुझको अब हुआ तू बेखबर गुमराह था। थी खुदी तेरी बहुत मगरूर का यह चाह था।।२।। भेद बिन महरूम या अफसोस मुझको है यही। उमर खोई इस कदर बेफायदा मुद्दत गई।।३।। नाथ शंकर है कठिन मिलना जो पद निर्बान का। मुरशद बिना होता नहीं घट में उजेला ज्ञान का ।।४।।

८. पांचों पचीसी मोड़ के तोड़ा सकल संताप को। परदा उठाया भूल का देखा जो अपने आपको।।१।। हर शाख में हर फूल में तू एक सा भरपूर है। रश्केचमन चौदह भुवन तेरा जहूरा नूर है।।२।। गुलहजारा फूल फूला चाँदनी दल्लान में। मेहरबां मुरशद हुए खुशबू गई आसमान में।।३।। प्याला पिया हरनाम का अलमस्त दिल मेरा हुआ। नाथ शङ्कर बेखबर खामोश बस आगे हुआ।।४।।

९. चलना सहज हँसना नहीं रहना सदा एकांत में। सबर

करना मांग खाना मौज हैगी शान्त में।।१।। डरना नहीं बेखौफ रहना दीन मत होना कहीं। बात नीकी नजर नीकी कोई खतरा नहीं।।२।। विषय त्यागो धन से भागो मत फंसाओ तुम गला। छांड़ो कुसंगत बैर कर मत लालच नहीं करना भला।।३।। भजन करा मगन रहना भेद तुम देना नहीं। नाथ शङ्कर मूल बातें खोज कर तुमसे कहीं।।४।।

१०. सबसे भली मैंने कही है यादगारी रब्ब की। दोस्ती दुनियां की छांड़ो सैल कर बेहद्द की। गैब का कुछ खेल अद्भुत नूर झिलमिल झलकता। गगन भीतर अमीं बरषै संत कोई पीवता।।२।। दावा नहीं चलता किसी का काम मुशकिल है बड़ा। हो हो अमर बेखौख रहते काल भी जिनसे डरा।।३।। प्रहलाद ध्रु करनी करी रुतबा लिया खुद जात से। नाथ शङ्कर सार करणी भेंटे हरी जो आप से।।४।।

११. बात मेरी मान ले तू भूल मत हैगा यहां तेरा खुदा तू में बसै तू ढूंढने जाता कहां।।१।। मुरशद से पहले पूंछ जाकर है कहां मेरा खुदा। वो बतावेगा तुझे तब कदम रखना है रवां।।२।। खिदमत बिना मिलता नहीं यह भेद पोशीदा कहीं। काम मुशकिल है बड़ा यह नान का लुकमा नहीं।।३।। नाथ शङ्कर भूल मत वो है नहीं तुझसे जुदा। पहली खुदी को मार तू पीछे रहे सोई खुदा।।४।।

।।बैत।।

१२. किस नींद में सोते पड़े तुम क्यों नही जागो सजन। दूर जाना दिन है थोड़ा राह जिन्नत की कठिन।।१।। तू अकेला आनि खेला कोई साथी है नहीं। है मुझे ये डर बहुत गालब तू न लुट जावे

कहीं।।२।। हुशियार हो देखो भला कर गौर दिल में ऐ सजन। कौन हो आये कहां से आपका कैसा वतन।।३।। था मौत का दुख जाल फैला समुझि धरना तुम कदम। मुरशद मुरब्बी पीर आजम याद करना दम बदम।।४।। नर तू न जानै आपको परपंच से आजाद है। तो मिला मालिक तुझे ये शङ्कर सदा दिलशाद है।।५।।

१३. क्या कहूं जाऊं कहां परदा करूं किसका भला। सब जगह देखूं वहीं हाजिर व गायब है खुदा।।१।। छांड़ी खुदी नेकी बदी रुतबा जो पाया सागरी। दीन का दावा गया मंजल हुई है आखरी।।२।। तूर में जब नूर पहुंचा आब कतरा आब में। हद से बेहद हो गया एक सा हुआ आफताब में।।३।। बन्दा निवाजी खाकसारी बुतपरस्ती सब बला। गफलत गई फुरसत मिली दुनियां से छूटा सिलसिला।।४।। ताला खुला है द्वैत का चमका सितारा मुश्तरी। हक से हकताला हुआ नाथ शङ्कर बोहरा।।५।।

।। गजल।।

१४. कहना मेरा माना नहीं आखिर को तू पछतायगा। यह खाक का पुतला बना सो खाक में मिल जायगा।।१।। भाई भतीजा माल दौलत चन्द रोजा जिन्दगी। किस पर करै मगरू तू मझधार गोता खायगा।।२।। होना जो था सो हो गया कर इश्क मालिक पाक से। सोहवत फकीरी ढूंढले इज्जत बहुत सी पायगा। समझ बूझा पाक कलमा हो गई पहचान जब। नाथ शङ्कर मिल गया फिर तूहि तू फरमायगा।।४।।

१५. रहना नहिं जाना जरूरी बात मेरी मान रे। कर गुजारा चन्द रोजा क्या झोंपड़ी मैदान रे।।१।। देवे खुदा जैसा तुझे कर सब्र उस पर हर घड़ी । मैला पुराना गूदड़ा क्या खुश्क टुकड़ा नानरे।।२।।

राजा हुआ दौलत मिली सातो समुन्दर दीपकी। दावा किया गारत हुआ क्या तख्त फिर गुलतानरे।।३।।। नाथ शङ्कर भूल मत हरदम मिला रहू ब्रह्म से। ख्वाहिश न कर बेफिकर हो क्या यह पहचान रे।।४।।

१६. जिह्व हलै नहिं कर चलै मुख से शबद होवे नहीं। आती जाती स्वांस सुमरन यह अजप्या सब कहीं।।१।। पाप नासै भरम भागै ज्ञान घट भरपूर हो। सतगुरु बताया भेद यह आवागमन सब दूर हो।।२।। सिद्ध रहनी सार करनी सन्त का ऐसा मता। त्यागै झमेला हो अकेला निहशंक बन विचरै सदा।।३।। शून ध्यानी ब्रह्मज्ञानी आखंड देखै सब कहीं। धन-धन योगेश्वर नाथ शङ्कर द्वैत का फुरना नहीं।।४।।

।। चार बैत।।

१७. मुल्ला जो बांग देकर कहता खुदा-खुदा। जानै नहीं खुदा को रहता जुदा जुदा।।१।। पंडित पढ़ै जो पोथी करता। फिरै निषेद। मुरशद मिला न पूरा पावे न ब्रह्म भेद।।२।। साधू भूलाया तीर्थ में पूजै पखान नीर। ऐसा हुआ है मन्द मति खोजै नहीं शरीर।।३।। शंकर पुकार कहते जाओ न दूर को। खोजो शरीर अपना पाओ हजूर को।।४।।

।। ख्याल।।

१८. करना हो तो करले बन्दा फिर पाछे पछतायेगा। एक दिना जमदूत आनकर तुझे पकड़ ले जायेगा।।१।। जब जमराजा लेखा मांगै तब तुम क्या बतलाओगे। घोर नरक में डालै तुझको फेर वहां दुख पाओगे।।२।। इस जग में है जीवन थोड़ा नेक काम कर

लेना जी। जहं तुक तुझको मुमकिन होवे परमारथ कर लेना जी।।३।। नेकी का है दरजा ऊंचा सुनले एक कहानी रे। ध्रु प्रहलाद हरीचन्द राजा भेंटे हर अगवानी रे।।४। बदी न करना हिलमिल रहना याद करो उस मालिक को। जिसने पैदा किया जगत यह जीया जूनि सब आदिक को।।५।। धन को पाय गर्व मत करना गर्व बुरा सुन भाई रे। इसी गर्व के कारण रावण मारा गया अताई रे।।६।। चेतनाथ हैं गुरु हमारे श्रीनाथ सब कहते हैं। पीर बड़े दाता महाराजा बोहर निशदिन रहते हैं।।७।। ब्रह्मज्ञान उपदेश किया जिन भरम का खोला ताला जी। शंकरनाथ कहैं बोहर के घट में भया उजाला जी।।८।।

१९. मूल बचन मैं तुम से कहता बात नहीं बहकाने की। सब काम तजो हरनाम भजो भाई सैल करो हरियाने की।।१।। दूध दही का आगर हमने इसी देश में देखा जी। पानी मांगो दूध पिलावें घर-घर यही लेखाजी।।२।। इसी देश में मस्तनाथ एक सिद्ध भये सरनामी जी। बोहर कसबा माहिं बिचितर जिनकी बनी समाधी जी।।३।। बड़े-बड़े शोभा के मन्दिर कलंगी जिनकी सजती है। चार जोत जहं हरदम भाई घृत की जलती रहती है।।४।। फागुन ने जहं मेला लगता वांछित फल को पाते हैं। दूर-दूर से राजा बाबू योगी तपसी आते हैं।।५।। चेतनाथ है पीर जहाँ के दुनियां निशिदिन नाम रटै। पीर बड़े दाता महाराजा दरशन से सब पाप कटैं।।६।। रिद्ध सिद्ध दरबार खड़ी नहिं पार मिलै दरगाहों के। हाथी घोड़े ऊंट घनेरे कारबार सब शाहों के।।७।। शंकरनाथ बोहर का बासी गुण यह निशिदिन गाता है। चार खूंट में नाथों का दरगाह बड़ा कहलाता है।।८।।

।। चार बैत ।।

२०. आकाश माँझे सून मन्दिर त्रिकुटी गुलजार में। आखंड तो जोति जलै अनहद बजै दरबार में।।१।। काल की जहं गम नहीं मन बुद्धि सूरती है। चन्द्र सूरज नाहिं तारा हंसा जहां कुरबान है।।२।। अमरापुरी में हंस आये ये कुजा हो गये मिले। सतगुरु लगन जिनकी लगी अखंड में जाकर मिले।।३।। नाथ शङ्कर भेद बिन कोई जतन चलता नहीं। लाखों करोड़ों ढूंढते असली वतन मिलता नहीं।।४।।

२१. रहना नहीं जाना जरूरी बात यह मशहूर जी। चार दिन की जिन्दगी पर क्या करै मगरूर जी।।१।। छांडै बदी नेकी करै होवे सुखी सब काम में। सुन-सुन के अपना शीश देवे राहे खुदा के नाम में।।२।। भाई कुटुम परवार दौलत दिल से जाने सब फना। शादी व गम में एक रस संतोष राखे अति घना।।३।। भूलै नहीं कोई आन में हरदम रहे हर से मिला। नाथ शंकर मुक्त जीवन सोई उत्तम पायला।।४।।

२२. हाथ पातर उदर झोरी पिरथवी आसन किया। कोपीन करके पवन की अगम का रास्ता लिया।।१।। दूध भिक्षा पान करते रखते नहीं कुछ पास में। गुफा बूटा किया बासा निर्भय सदा हर श्वास में।।२।। चारों दिशा रमतै रहैं अखण्ड बिरती धार के। जीवन मुक्त परमान संत कुवासना को जार के।।३।। दुख सुख सभी तन पर सहा कर करकै दिल मजबूत जी। नाथ शंकर ब्रह्मबानी बोलते अवधूत जी।।४।।

२३. मैं भी झूंठा तू भी झूंठा झूंठा सकल संसार है। एक बोही ब्रह्म सांचा जो सदा निरधार है। चन्द्र सूरज पवन पानी पांचहू होते फना। एक वोही ब्रह्मा पूरन अंत में रहता बना।।२।। नहीं ब्रह्मा

नहीं विष्णू नहीं देव महेश था। पंडित करौ तुम गौर दिल में तब कौन सा उपदेश था।।३।। नाथ शंकर ब्रह्म बानी बोलते चौगान में। हिन्दू तुरक दोनों भुलाने वेद और कूरान में।।४।।

२४. योगी कहै तू योग कर तपसी कहै तप से मरो। पंडित कहै तू यश कर साधु कहै तीरथ करो।।१।। भोगी कहै तू भोग कर भोग मिलता भाग से। त्यागी कहै तू त्याग दे भोग को बैराग से।।२।। सेवक कहै तू हो उपासक पूज पांचों देवता। सतगुरु बिना भरमें सबी पढ़-पढ़ के साथी रेखता।।३।। मूल तत्व पावे नहीं खोजै नहीं तन आपना। नाथ शंकर जगत भूला करि अविद्या साधना।।४।।

२५. पाँच तत्व गुण तीन से सब पिंड को रचना करी। फिर पिंड में ब्रह्माण्ड करके बैकुण्ठ कीना नर हरी।।१।। सर्व तीरथ सर्वदेवा सर्व सागर परबता। चन्द्र सूरज और तारा सब पिंड में आकर बसा।।२।। पिंड ही में सर्व सृष्टि लख चौरासी जाल है। पिंड से परतीत होता काल और अकाल है।।३।। नाथ शङ्कर ब्रह्मवानी बोलते खुद आप से। पिंड खोजा ब्रह्म पाया सतगुरु परताप से।।४।।

२६. आदि में अद्वैत से इस तौर से फुरना फुरी। एक से मैं बहुत होऊं आपसे इच्छा करी।।१।। प्रथम माया रुह ह्वै कर पांच तत्व होता भया। पांच तत्व गुण तीन से फिर सृष्टि की रचना किया।।२।। माया प्रकृती साथ मिल फिर जीव यह संज्ञा हुई। आप भूला देखि रचना भर्म से माना दुई।।३।। जीव ब्रह्म में भेद नहिं कछु समझ देखो तुम मना। नाथ शङ्कर ब्रह्मवानी बोलते सुन सज्जना।।४।।

२७. ना हम योगी न हम भोगी ना हम जंगल संन्यासी। ना हम त्यागी ना बैरागी ना हम तपसी ऊदासी।।१।। ना हम ब्राह्मण ना हम क्षत्री ना हम बैस न शुद्र जती। ना हम मानुष ना हम देवा ना हम

कोऊ जती सती।।२।। ना मैं स्वामी ना मैं सेवक ना मैं वाद विवादी हूं। केवल एक ब्रह्म परिपूर्ण सोई सदा अनादी हूं।।३।। पंडित खोजो ज्ञान ब्रह्म का पद पाओ जो अविनाशी। शङ्कर कहैं अगम की बानी समुझ बूझ तैं अभ्यासी।।४।।

२८. त्यागी होकर बन में रहना जात पांत कुल नासा जी। मान बड़ाई लोक वासना राखी मन में आसा जी।।१।। साध संत तो मन नहीं भावे दुनियां देखि के राजी जी। वाद विवाद करै बहुतेरा ऐसे कुल के पाजी जी।।२।। हँसी मसखरी करै घनेरी निंदा बहुतै करते हैं। धनकंचन को हाथ पसारैं नहिं बुरे काम से डरते हैं।।३।। ऊपर उजला भीतर गंदा सैन दृगन की करता है। शङ्कर नाथ कहैं कोई ठगिया कपट ठगेरी करता है।।४।।

२९. पर घर जावैं नैन मिलावैं हंस-हंस बातें करता है। गुरु गोसाईं नेन न मानै ज्ञान होन बिन फिरता है।।१।। दोहा सीखी सीख घनेरा दुनियां को भरमावें जी। साधू बानी बोलिं न आवे सिद्ध बड़े कहलावें जी।।२।। शील संतोष दया घट नाहीं अमल नशा अधिकाई जी। हिंसा जीव करैं बहुतेरी ऐस डोम कसाई जी।।३।। नाना रूप बनावें अपना करें घात अपराधां की। शङ्कर नाथ तजो तुम सङ्गत ऐसे खोटे साधां की।।४।।

३०. शील संतोष दया बहुतेरी निरमल सुन्दर बुद्धि है। ऊंचा नीचा गिनै न दूजा जिनकी चित की शुद्धी है।।१।। भिक्षा कारण पर घर जावे राग दोष नहिं लावे जी। वृथा वचन मुख से नहीं बोलै सत की भिक्षा खावे जी।।२।। चित्त प्रसन्न उजल मुख कांती वाद विवाद न कोई है। रहै एकांत द्वन्द से न्यारा नहिं कुछ मन में दूई है।।३।। आतम ज्ञानी परम विवेकी सत्त असत्त बिचारा है। शङ्करनाथ

साध की संगति दुर्लभ यहि संसारा है।।४।।

३१. आशा तृष्णा मान बड़ाई जिन चारों तज दीना है। हस्ती मनुआं ज्ञान अंकुश से अपने बस कर लीना है।।१।। हानि लाभ दुख सुख मन नाहीं एक ब्रह्म चित्त लाया है। द्वैत भ्रम को दूर बहायो पद अविनाशी पाया है।।२।। समदरसी है आतमज्ञानी वेद शास्त्र सब कहता है। अपनो स्वरूप सर्व मैं देखै निर्भय होकर रहता है।।३।। शङ्करनाथ अगम की बानी तज अभिमान सुनाता है। साध की संगत पारस भाई जो जीव ब्रह्म हो जाता है।।४।।

।। चेतावनी।।

३२. हर बिन नहीं तेरा कोई औ ना किसी का तू सगा। आया लिखा दरबार को तब छांड़ के जाता भगा।।१।। जो कुछ दिया है हाथ से वोही तेरे अब साथ है। जो नहीं कर से दिया वोह सब माटी खाक है।।२।। नेक बद तकदीर तेरी उस जगह नहिं माफ है। जैसा करै वैसा मिलै साहब के घर इन्साफ है।।३।। नेकी करै नेकी मिलै बद का बुरा अंजाम है। नाथ शङ्कर भजन बिन मिलता नहीं सुखधाम है।।४।।

३३. मोह मायाजाल में तू क्यों भुलाना चेतरे। हर बिन नहीं तेरा कोई तू हर से करले हेतरे।।१।। आवेगा जब यमदूत लेने तब अकेला जायगा। भजन बिन दोजख मिले फिर तू वहाँ पछितायगा।।२।। जिसने किया हरका भजन वोह तो हुआ भव पार है। जिसने नहीं जो हर भजा डूबा वोही मझधार है।।३।। सबसे कहूं समुझाय के तू मोह माया जाल तज। नाथ शङ्कर सरन सतगुरु रात दिन हर नाम भज।।४।।

३४. मुरशद मेहर अपनी करी भव से हुआ हूं पार जी। दास

से मोहिं नाथ कीना ख्वाब से बेदारजी।।१।। बन्धन कटे दुख सब मिटे खुल गया चहुं ओर से। दीनता तृष्णा गई निर्भय हुआ हर तौर से।।२।। परदा उठाकर द्वैत का अंभो किया पाया वहीं। घट-घट में देखा स्वरूप अपना दूसरा कोई नहीं।।३।। आखण्ड निर्मल निर्विकारी निश्चली अति अनित्य है। नाथ शङ्कर स्वरूप सोई तुरिया से रहित है।।४।।

३५. दुनिया दिवानी हो गई हरनाम को बिसरायके। मेरा कहा मानै नहीं सबसे कही समुझाय के।।१।। कोई पूजे जल अगनी प्रथवी पाषान की। कोई पूजै वृक्ष तरुवर पंछी पशु आन की।।२।। जिसने किया पैदा चराचर उसका नहीं सुमरन अपनी करै। खुशी से मान दूजा भूत के पायन परै।।३।। नाथ शंकर जनम मानुष खोय देते हार में। सुमरन बिना फंसते फिरैं सब कींच कादी गार में।।४।।

३६. कहना हमें जो यार था पहलेहि कह चुके। हम तो फकीर मस्त हैं जीतेहि मर चुके।।१।। कंचन रतन औ धन को सब खाक जानते। इंदर का राज सारा हम तुच्छ मानते।।२।। परवाह नहीं हमको किसी की संसार में। सिरको कटाय फिरते हैं कूंचे बजार में।।३।। शङ्कर पुकार कहते सत गुरु की फौज में। बेखौफ खतर रहते हम अपनी मौज में।।४।।

३७. सांचा वचन कहना सदा झूंठा नहीं तुम बोलना। हर दम सफा दिल से रहो सतसंग उत्तम खोजना।।१।। हिंसा करो मत जीव की जहं तक बनै रक्षा करो। धर्म की तुम राह चलकर पाप से बहुतै डरो।।२।। भौसागर बहै चहुं ओर से लख चौरासी धार है। सुमरन करो हरनाम का बेड़ा तुम्हारा पार है।।३।। धरम से तो स्वर्ग मिलता

पाप से तो नर्क है। नाथ शङ्कर समुझि देखो बात यह आतरक है।।४।।

३८. वृक्ष बूटा एक जैसे अनेक शाखा डाल है। जो नहीं उससे जुदा वृक्ष ही हर हरहाल है।।१।। ब्रह्म सागर एक समझो जगत उसकी तरंग है। जो नहीं उससे जुदा सब ब्रह्म ही का अंग है।।२।। समुझि देखो तुम मना जगत सारा भरम है। द्वैत तो कोऊ नहीं सर्व एकी ब्रह्म है।।३।। मैं भी वही तू भी वही वो ही सकल संसार है नाथ शंकर सर्व वोही ब्रह्म का विचार है ।।४।।

३९. किसको गहूं किसको तजूं किसको करूं बेराग जी। सर्व वोही ब्रह्म देखूं भाग औ आभाग जी।।१।। वोही दृष्टि वा वोही दरशन वोही दृश्य साकार है। वोही निर्गुण वोही गंदा वोही शुद्ध अपार।।२।। वोही निर्गुन वोही सरगुन वोही दाता सूम है। वोही छाया वोही माया वोही काया रूम है।।३।। वोही शाखा वोही पाता वोही बूटा फल फूल है। नाथ शङ्कर सर्व वोही सूक्ष्मो स्थूल है।।४।।

४०. मोह माया जाल परि डूब सबी मंझधार में। सुमरिन बिना फंसते फिरे सब कींच कादीगार में।।१।। हरनाम को जाना नहीं सेवा करी नहिं साध की। भोग विष्या प्रीति कर कर पोट बांधी पाप की।।२।। मानुष जनम है भाग से हरबार यह मिलता नहीं। ताहि खोवत भजन बिन शुभ करम को करता नहीं।।३।। आसा की फाँसी डाल गल में लख चौरासी भरमता। नाथशंकर अपनी करनी करी सोई भोगता।।४।।

।। दोहा ।।

साधू होना है कठिन, शंकर कहत पुकार।
अगम पन्थ का चालना, ज्यों खांडे की धार।।१।।

साधू उपमा क्यों कहूं, वह तो बड़े अमोल।
चांदी सोना और मणि, यह तो हल्की तोल।।२।।

साधू संगति है भली, खोलै स्वर्ग द्वार।
मूरख संगति ना भली, देत नरक में डार।।३।।

शङ्कर साधु राखते, दया धीर सन्तोष।
तृष्णा ममता मार के, सदा रहत निर्दोष।।४।।

संत सदा एकान्त रहि, भजन करत दिन रात।
परमानन्द सुख लहत है, मांगि टूकड़ा खात।।५।।

सुनिशिखर त्रिकुटी महल, झिलमिल झलके नूर।
शंकर संत कुरबान जहं, बाजै अनहद तूर।।६।।

सून शिखर अमरापुरी, अलख पुरुष की जोत।
संत जहां सिजदा करत, गैबी अनहद होत।।७।।

सून शिखर आसन किये, चले हंस की चाल।
बिन तागा बिन गूरिया, शङ्कर फेरे माल।।८।।

शङ्कर प्यारे जगत में, आशिक सूर सिपाह।
सैल बज्र सन्मुख कहै, नेक न करते आह।।९।।

शङ्कर आशिक सूर रथ, बिरलै है कोई एक।
मारें जूझैं परस्पर, पग न हटामैं नेक।।१०।।

अगम पियाला पान करि, संत रहत अलमस्त।
जहां काल की गम नहीं, अटल निरंजन तत्त।।११।।

सन्त करत शुभ कर्म को, बुरे कर्म को त्याग।
शनै शनै गम्भीरता, उजत ज्ञान बैराग।।१२।।

पांच तत्व काया सकल, तामें यक निर्धार।
ऊंच नीच है कर्म यक, बुधजन कियो विचार।।१३।।

जैसे धोबी कापड़ा, साबुन दै दै धोत।
तैसे संगत साधु से, देहियां निर्मल होत।।१४।।

शङ्कर अपनी भूल मत, तेरी होवे जीत।
सकल भर्मना त्यागिके, हर से करिले प्रीत।।१५।।

शङ्कर सदा असंग रहु, करि बिवेक बैराग।
निर बिकार तू ब्रह्म है, तुझे न लागै दाग।।१६।।

शङ्कर ज्ञानी ऊबरत, करि-करि ब्रह्म विवेक।
अज्ञानी डूबत सदा, फंसि-फंसि विष्य अनेक।।१७।।

शङ्कर रहो असंग नित, आतम एक विचार।
तजिदे मन की वासना, यह झूंठा संसार।।१८।।

स्वारथ के सब लोग हैं, माता पिता सुत वीर।
शङ्कर ममता छाँड़ि दे, सङ्ग न चलै शरीर।।१९।।

गङ्ग जमुना सरसुती, तन धोये ज्यों बैल।
शङ्कर बिना विचारिके, कटा न मनका मैल।।२०।।

शङ्कर बिना विचारिके, दुख भारी परजात।
काग की सङ्गति बैठिके, हंसा अति पछितात।।२१।।

करम करे शुद होत मन, फिर उपजत है ज्ञान।
ज्ञान उपजि मुक्ति मिले, कहते वेद पुरान।।२२।।

धन दौलत परिवार कुल, खान पान सुख तात।
लगन लगी हर भजन सो, मोको नहीं सुहात।।२३।।

शङ्कर कहत पुकारिके, सुन मेरे दिलगीर।
छेड़ो मत कोई हमें, मैं हूं मस्त फकीर।।२४।।

शङ्कर दुनियां बाबरी, नाहक अपजस लेत।
पहिले गाल बजाइके, पाछे तारी देत।।२५।।

शङ्कर कहै तो क्या कहै, देखो दिलगीर।
दुनियां ढोल बजाय के, डारत पांय जंजीर।।२६।।

यह जग निगुरा बहुत है, बांधत विष की गांठ।
भर्मजाल सिर पोट धरि, पांय फंसावत काठ।।२७।।

दुनियां निगुरी बहुत है, राखत अपनी टेक।
सत्य असत्य गुणदोष का, कोई नहिं करत विवेक।।२८।।

शंकर महल उठाइयां, रुचि रुचि पाथर काठ।
हंस चला परलोक जब, छूटि गया सब ठाठ।।२९।।

थोरे दिन के कारने, कौन बनावे ठाठ।
एक दिन हंसा जायगा, आग लगै तन काठ।।३०।।

विषय वासना कर्म नित, करते नीच गुलाम।
या में रंचक सुख नहीं, महानर्क को ठाम।।३१।।

महल विषय बंधन बहुत, त्यागत साधू लोग।
बन अखंड नित बास करि, साधत अपना योग।।३२।।

ध्रग ध्रग जीवन जन्म जिन, पशुवत दीना खोय।
भजन किया नहीं राम का, सुजस बीज को बोय।।३३।।

गांजा मलि मलि पियत है, घोटि घोटि के भङ्ग।
ब्रह्म अमल रस ना पियत, ऐसे मूर्ख अपंग।।३४।।

नर तन पाया भजन को, भूल गये हर नाम।
विषय भोग उनमत फिरैं, ऐसे नीच गुलाम।।३५।।

शङ्कर या संसार में, अपना है नहिं कोय।
ऐसी करनी कर चलो, बहुरि न आना होय।।३६।।

शङ्कर दुनियां बावरी, सागर गोता खाय।
जिंदा को मानै नहीं, मुरदा को पूजन जाय।।३७।।

रात दिना भ्रम जाल बिच, पड़ा रहत संसार।
शङ्कर नर यह बावरा, सो कैसे उतरे पार।।३८।।

शङ्कर नर यह बावरा, भूलि गया जगदीश।
पाथर आगे जाई के, हर्षि नवावै शीस।।३९।।

इस संसारी जीव का, कैसे हो कल्यान।
प्रीति लग विष्यान सों, छूटै न एक आन।।४०।।

इस सन्सारी जीव का, उल्टा है सब ठाठ।
भ्रम जाल शिर पोंट धर, पांय फंसायो काठ।।४१।।

जगत समाया बिंदु में, बिंदे में ब्रह्मण्ड।
बिंदु नूर परकास तन, बिंद में उपजै पिण्ड।।४२।।

आदि नूर है बिन्दु में, बिन्दु न खोवो कोय।
सूक्ष्म बिन्दु जानै बिना, ज्ञान मुक्ति ना होय।।४३।।
उतपति लै अरु स्थिति, होत जहाँ त्रैकाल।
शङ्कर ज्ञानी जानता, नाद बिन्दु का हाल।।४४।।
जल ऊपर पृथ्वी करी, ता ऊपर आकाश।
शुष्मन चक्र नक्षत्र जहं, चन्द्र सूर्य परकाश।।४५।।
गगन अटारी त्रिकुटी, जपि ले अजपा जाप।
आवागमन न होय पुनि, छूटि जाय सब ताप।।४६।।
गगन अटारी त्रिकुटी, जहां गैव का खेल।
निरत करत सुख ऊपजत, होत पिया का मेल।।४७।।
गगन अटारी त्रिकुटी, सुरत निरत से चीन।
जगमग जगमग हो रही, एक जोत परवीन।।४८।।
मन तुम भटकत क्यों फिरे, क्यों नाहीं थिर होत।
अपने घट में देख ले, पार ब्रह्म की जोत।।४९।।
सुरत निरत मन समुझि के, घट ही में तू ढूर।
साहब तेरे पास है, तू मत भटकै दूर।।५०।।
मन राजा मन राव है, मन परजा मन रङ्क।
मन पोथा मन पत्रा, मन अक्षर मन अङ्क।।५१।।
मन गूंगा मन बावरा, मन कपटी मन चोर।
मन दलिद्र मन लालची, यह सब मनकी डोर।।५२।।
मन हाथी मन तुरङ्ग है, मन सूकर मन घोर।
मन पंक्षी भर्मत फिरै, चौरासी सब ठौर।।५३।।

मन शाखा मन गाछ है, मन ही है फल फूल।
मनहिं छटै मन ही बढ़ै, यह सब मनकी भूल।।५४।।
मन समुद्र मन लहर है, मनहिं कहर दरयाव।
मन डूबे मन ऊबरै, यह सब मन को भाव।।५५।।
मन मोती मन मूंगरा, मन हीरा मणि लाल।
मन चांदी मन पीतरा, मन सोना टकसाल।।५६।।
उपजत बिनसत है सदा, पाँच तत्व की देह।
आत्मा न्यारी रहत है, शङ्कर जानत गेह।।५७।।
उपजत बिनसत देह सब, आतम सदा अकाल।
शङ्कर कहत पुकार के, ज्ञानी जानत हाल।।५८।।
शङ्कर तू पहिचान ले, दूसर कोऊ नाहिं।
एक आतमा रमिरहा, सब घट भीतर माहिं।।५९।।
घट घट में परमात्मा, सब देवन का देव।
शङ्कर समुझि बिचार के, कर आतम की सेव।।६०।।
आतम देव अनादि है, सदा एक रस होय।
घटत बढ़त शङ्कर नहीं, बिरला जानत कोय।।६१।।
चार खूंट भर्मत फिरत, पूजि फिरत सब धाम।
शङ्कर आतम ज्ञान बिन, ना पावत बिसराम।।६२।।
शङ्कर अलख अरुप है, नहिं नेरे नहिं दूर।
शांत तेज आकार बिन, घट-घट में भरपूर।।६३।।
घट-घट में भरपूर है, दीस परत ना नैन।
शङ्कर अचरज है बड़ा, परगट बोलै बैन।।६४।।

सून शिखर त्रिकुटी महल, अचरज बड़ा दिखात।
झिलमिल झलकै जोति जहं, बिनातेल बिनबात।।६५।।

जाति पांति वाके नहीं, बृद्ध तरुन नहीं बाल।
शङ्कर पुरुष अरुप यक, सदा रहत आकाल।।६६।।

ऊंचे कुल की रीत वह, शङ्कर सदा सुहात।
बड़े बड़ाई ना करें, हलकी कहैं न बात।।६७।।

सहज सहज पगधरनि धर, कर कर नीचे नैन।
सबके प्यारे रहत नित, बोलत मीठे बैन।।६८।।

शङ्कर कुल की रीत यह, कोटि यत्न नहिं जात।
हंसा मोती चुगत है, कागा भिष्टा खात।।६९।।

भले भलाई ना तजैं, बात कहत अनुकूल।
झुकि-झुकि ऊंचे रहत हैं, ज्यों तरुवर फलफूल।।७०।।

धन दौलत मुक्ता मिली, राजपाट परवीन।
धर्म बिना शोभा नहीं, ज्यों मोती जल हीन।।७१।।

शङ्कर सतगुरु शब्द सों, सकल पसारा जान।
लय स्थित जहं होत है, शब्द रूप पहिचान।।७२।।

शङ्कर सतगुरु देत हैं, पद पावन निर्बान।
जहां काल को गम नहिं, मन बुद्धि सकै न जान।।७३।।

शङ्कर सतगुरु स्वामियां, लाख जतन से खोज।
जन्म जन्म को व्याधि कट, जो ऊतरै सिर बोझ।।७४।।

मात पिता अरु बन्धु नहिं, जाति पांति है नाहिं।
शङ्कर भरम मिटाय के, मिले नाथ कुल माहिं।।७५।।

सून शिखर त्रिकुटी महल, जपे अजप्या जाप।
शङ्करनाथ प्रताप सों, कटि गये तीनों ताप।।७६।।

शङ्कर सुरत लगायके, भजिले आठों याम।
भौ भंजन अरु दुख हरन, नाथ चरण आराम।।७७।।

शङ्कर सत करि जानियो, नाथ चरण आराम।
भजन करो दिन रात तुम, यही तुम्हारा काम।।७८।।

शङ्कर कहत पुकार के, तजि ममता अभिमान।
सबसों उत्तम आत्मा, ताको करिये ध्यान।।७९।।

शङ्करनाथ सुतन्त्र रहु, तजि विषिया अभिमान।
बन्धन तोरि अबन्ध हो, तुझे नाथ की आन।।८०।।

काटि के बन्धन जाल सब, भये अबन्ध निरास।
शङ्कर अवधू यों कहै, श्री चेतनाथ के दास।।८१।।

अनभो प्याला सतगुरु, हमें पिलाया आन।
तिल मध्ये ब्रह्मांड सब, होन लगा मोहियान।।८२।।

शङ्कर कटि गये फन्द सब, दूर भये भ्रम कूप।
श्री चेतनाथ प्रताप सों, हो गये आनन्द स्वरूप।।८३।।

सब में देखूं एकसा, छोटा बड़ा नहिं ईश।
मैं पूंछौ गुरुदेव जू, किसै नवाऊं शीस।।८४।।

जनम जनम हारे रहे, बिना भरम परतीत।
अब की सतगुरु पायके, बाजी लीन्ही जीत।।८५।।

मैं तुम छांडा भेद सब, छुट गये तीनों ताप।
एक निरंजन मैं लखा, श्री चेतनाथ प्रताप।।८६।।

श्री चेतनाथ गुरुदेव को, दया सरुपी जान।
रतन पदारश मोहिं यक, दीना आतम ज्ञान।।८७।।

ब्रह्म मूरती परम गुरु, श्रीनाथ औतार।
मेरे सिर के ताज तुम, पतित के राखन हार।।८८।।

शङ्कर कहत पुकार के, गुरु प्रताप सब होय।
करी फकीरी मस्त मैं, जाति पांति कुल खोय।।८९।।

श्री चेतनाथ सतगुरु हमैं, दीन्हा अजपा जाप।
जन्म जन्म के दुख हरे, काटे सगरे ताप।।९०।।

श्री चेतनाथ सतगुरु कही, शङ्कर से समुझाय।
आती जाती सांस लखु तेरो, आवागन नसार।।९१।।

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

पुस्तक प्राप्ति स्थान–

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अंखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड) फोन : 01334-226583

Website : http://.yogigorakshnath.org, E-mail : yogivilasnath12@gmail.com

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह० जिला–रोहतक (हरियाणा) फोन : 01262–215718

नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन

	पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250/-
2.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250/-
3.	श्री नाथ रहस्य(खण्ड-1,2,3)(अंग्रेजी अनुवाद)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	400/-
4.	श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	65/-
5.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	45/-
6.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	125/-
7.	श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	35/-
8.	श्रीनाथ सम्प्रदाय के तीर्थ स्थल (प्राचीन भर्तृहरि गुफा महात्म्य)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
9. श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	10/-
10. श्री गोरक्ष तंत्रम् (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	80/-
11. श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि (उपासना-साधना)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	80/-
12. श्री नाथ सम्प्रदाय आरती-भजन संग्रह	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	45/-
13. ॐ शिवगोरक्ष व्रत कथा	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	15/-
14. श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तंत्र टोटके	महावीर सैनी (गुरु महन्त डॉ. योगी विलासनाथ)	160/-
15. योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	40/-
16. गोरक्ष स्तवांन्जलि	योगी भंभूलनाथ जी	20/-
17. श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-
18. शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	50/-
19. अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	60/-
20. श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	140/-
21. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	100/-
22. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/-
23. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	70/-
24. चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
25. दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
26. श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
27. श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
28. श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
29. श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य

उप कार्यालय-गोरक्षनाथ मन्दिर, गोरखपुर
फोन : 0551-2255453, 2255454, 2255455

30. गोरखबाणी-रामलाल श्रीवास्तव , 50/-, 31. गोरख चरित्र-रामलाल श्रीवास्तव, 30/-, 32. गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी), अक्षय कुमार बेनर्जी, 90/-, 33. गोरख दर्शन-विजय पाल, 50/-, 34. श्री नाथ सिद्ध चरितामृत-रामलाल श्रीवास्तव, 30/-, 35. गोरक्षनाथ एवं उनकी परंपरा का साहित्य-डा. दिवाकर पाण्डेय, 40/-, 36. आदर्श योगी-अक्षय कुमार बेनर्जी, 25/-, 37. योगासन-रामलाल श्रीवास्तव, 30/-, 38. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत-रामलाल श्रीवास्तव, 35/-, 39. गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह-रामलाल श्रीवास्तव, 40/-, 40. हटयोग प्रदीपिका, रामलाल श्रीवास्तव, 35/-, 41. योग बीज-रामलाल श्रीवास्तव, 15/-, 42. नाथ योग-अक्षय कुमार बेनर्जी, 15/-, 43. अमनस्क योग-अक्षय कुमार बेनर्जी, 20/-, 44. गोरक्ष पद्धति-रामलाल श्रीवास्तव, 20/-, 45. गोरक्ष शतक-रामलाल श्रीवास्तव, 20/-, 46. वैराग्य शतक-रामलाल श्रीवास्तव, 20/-, 47. गौरक्ष वैदिक पूजा पद्धत-वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी, 20/-, 48. विचार दर्शन (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ...ने कहा)-योगी आदित्यनाथ, 20/-, 49. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह)-मनोहर द्विवेदी, 15/-, 50. योगवाणी अंक (गोरखबाणी)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 51. योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन)-गोरखनाथ मन्दिर, 15/-, 52. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक)-गोरखनाथ मन्दिर, 40/-, 53. योगवाणी (शिव संहिता)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 54. योगवाणी (सिद्ध दर्शन)-गोरखनाथ मन्दिर, 15/-, 55. योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 56. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 57. योगवाणी (गोरक्ष सिद्धान्त)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 58. योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 59. योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 60. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 61. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 62. योगवाणी (विशेषांक 1994)-गोरखनाथ मन्दिर-, 15/-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र
(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3× 3 इंच	50/-	60/-
5×5 इंच	70/-	80/-
7×7 इंच	90/-	110/-
9×9 इंच	300/-	325/-
12×12 इंच	425/-	450/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ, भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रनुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P / C = 5 " X 3.5"	5/-	-
बड़े फोटो B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB / C = 10 " X 5"	25/-	
बड़ा फोटो B.B.B / C = 10" X 8"	35/-	-

MP3-DVD-VCD (सी.डी.)

		MP3	DVD VCD
अमृतांजलि (भाग-1+2) (गोरक्ष चालीसा, चौरासी सिद्ध, चालीसा, ज्ञान गुदडी, भजन इत्यादि)	गायक-सोमनाथ शर्मा भजन रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	40/-	50/-

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5" X 3.5"	3/-	-

यन्त्र- (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	10/-	70/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	10/-	70/-
उपरोक्त चारों यन्त्रों का सैट	40/-	300/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन(1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

विवरण	मूल्य
लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	5/-, 10/., 20/-, 25/-, 30/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉकेट	10/-, 15/-, 20/-, 30/-
(नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	10/-, 20/-, 25/-, 40/-, 60/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के	1500/-, 1800/-
आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-

मूर्तियाँ (धातु में)

	नाम	साईज	वजन	मूल्य पीतल	मूल्य ब्रास (पीतल की पालिश)
1.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	9 "	2 Kg	1100/-	800/-
2.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6 "	1 Kg.	800/-	700/-
3	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10 "	1.300gm.	1100/-	800/-
4.	आगे आगे गोरख जांगे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6 "	600gm.	800/-	
5.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9 "	2 Kg.	1100/-	800/-
6.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6 "	1 Kg.	800/-	700/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

विवरण	मूल्य
गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3×2 इंच, 5×3.5 इंच, 7×5 इंच)	25/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 250/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट - मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम D. D.भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा V.P. L., V.P.P. से भेजा जायेगा।

अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

सम्पर्क - महन्त डॉ. योगी विलासनाथ-मो.: 09412072703

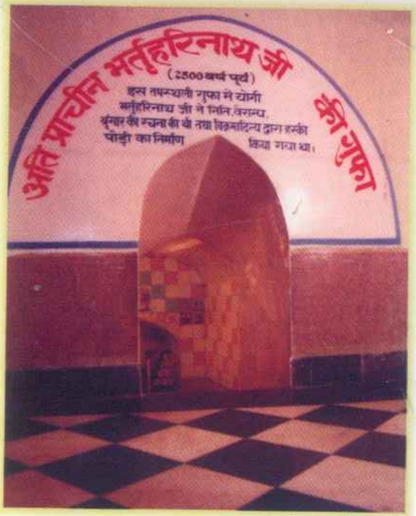

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर तथा श्री भर्तृहरि जी की प्राचीन गुफा

राजा भर्तृहरि नीति, वैराग्य, श्रृंगार तीनों के रचियता थे। श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। उज्जैन-मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण करके यहां तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहां विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हरकी पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट : हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

पुस्तक प्राप्ति स्थान-अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा, गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा) अपर रोड, हरिद्वार

श्री बाबा मस्तनाथ मठ, मठ अस्थल बोहर, जिला रोहतक, हरियाणा

शिव शक्ति प्रिन्टर्स, अपर रोड, हरिद्वार मो. 9690087879